मरूधर साहित्य मन्दिर, बीकानेर

परख-सिरजण

डा. पुरुषोत्तम आसोपा

--मरुधर-साहित्य मन्दिर, बीकानेर--

राजस्थानी भाषा, साहित्य, संस्कृति अकादमी रे आर्थिक सहयोग सूं–प्रकाशित

प्रकाशक :
मरुधर-साहित्य मन्दिर
124, बिन्नाणी बिल्डिंग,
असखसागर, बीकानेर
संस्करण : पैलड़ो, 1987
मूल्य : पैंतीस रुपिया
आवरण : शिवजी
कलापक्ष : काइदमली
मुद्रक :
साखला प्रिंटर्स, बीकानेर

Parakh-Sirjana By Dr. Purushottam Asopa Rs. 35.00

आमुख

- राजस्थानी भाषा मे आलोचना री अखरण आळी कमी है। साहित्य रे विकास सारू इण कनी कोशिश करण री मोकळी जरूरत है।
- आ पोथी इण लिहाज सूं राजस्थानी साहित्य री पैली व्यवस्थित, शास्त्रीय आलोचना री पोथी कैही जाय सकें।
- इण रा सगळा निबन्ध पत्रिकावां मे प्रकाशित है या जुदी-जुदी संगोष्ठियां सारू शोध परचा रे रूप मे प्रस्तुत कियोड़ा हैं। गोष्ठियां मांय इणा माथे मोकळी चर्चावां हूय चुकी है। अर लोगां ने ऐ खासा आकर्षित कर चूका है।

—डॉ. पुरुषोत्तम आसोपा

क्रम

राजस्थानी भाषा, समस्यावां अर उणां रो निराकरण

राजस्थानी भाषा री समस्यावां री चर्चा करणं सूं पहली सामान्य रूप सूं किणी भी भाषा रैं माय समस्यावा क्यूं उपज्या करैं, इण बात री जाणकारी जरूरी है। भाषा रो सिरजण समाज करया करैं, पण उण रो प्रयोक्ता व्यक्ति हुवैं है। अेक अकेलो आदमी भाषा रो ना तो सिरजण कर सकैं अर ना उणनैं आपरी सगळी ताकत लगायर भी नूंवो रूप देय सकैं। जिण समाज में वो जनम लेवैं, सिर्फ उणी समाज सूं दियोडी भाषा नैं उणनैं अनुकरण सूं सीखणी पडैं। इण रैं बावजूद हर आदमी आपरी निजू पिछाण कायम करण खातर भाषा रैं सागैं प्रयोग करण सूं पाछो कोनी रैंवैं। आदमी री आपरी बुद्धि रो स्तर भी भाषा रैं सामान्य प्रचलित रूप नैं नूंवां-नूंवां अंदाज देवतो रैंवै। यूं भाषा रैं सागैं जाण बूझ'र कियोड़ा प्रयास अर अणजाण तरीका सूं हुयोडी भाषा री भूलां रैं मांय सूं हीज भाषा री समस्यावां पैदा हुया करैं।

समाज जिण भाषा नैं शताब्दियां मांय जाय'र निर्मित करैं उण नैं मिनख नैं आपरे टावर पणैं माय न केवळ सीखणो पडै बल्कि जीवण रैं थोडा-सा बरसा माय हीज आपरी सगळी परिस्थितियां मांय उणरो हीज असरदार इस्तेमाल करण री कोशिश करणी पड़ैं। इण कोशिश मांय उण रा आपरैं विचारा री अभिव्यक्ति, निजी अनुभूतियां रो अंकण अर सम्प्रेषण भाषा सूं मोकळी अपेक्षावां करैं। विचारा नैं मुहावणैं अदाज मांय सम्प्रेषित करण री बात हीज भाषा रैं कोण सूं व्यक्ति अर समाज रैं अनोखैं सम्बन्ध री व्याख्या किया करैं। समाज री सत्ता जिण आचार-विचार-शीलता, मूल्य-मर्यादा या रीति-नीति माथैं निर्भर करैं, उणा सूंहीज उण समाज री भाषा निर्मित हुया करैं। जद कैं आपरी रुचि, सस्कार, शिक्षा, मानसिक बणगट अर कार्य क्षेत्र री आवश्यकतावा रैं मूजब मिनख उणरो इस्तेमाल किया करैं है। अै सगळी बाता 'मुडे मुंडे मतिभिन्ना' रैं सिद्धांत रैं कारण अेक ही भाषा रैं खातर सैकड़ूं रूपां में दबाव नाखती रैंवैं। भाषा भला ही अेक हुवो पण उण रा प्रयोक्ता अनेक हुया करैं। भाषा रा प्रयोक्ता व्याकरण रा पडित भी हुवैं जिका कैं उण रैं व्याकरण-सम्मत स्वरूप सूं अेक इंच भी आगैं को सरकणो चावैं नी, तो उणरा प्रयोक्ता मोकळी तादाद वाळा अनपढ लोग भी हुवैं जिका नैं व्याकरण सूं कोई

प्रयोजन कोनी हुवै। कबीर जेहड़ा लट्ठमार आदमी भी भाषा रो प्रयोग करै अर उण सूं तानाशाह जेहड़ा व्यवहार करै, भाषा री गुलामी करण री जागां उण सूं हर भांत री स्वतन्त्रता लेवणी चावै। तो कल्पना री सूक्ष्मतर कोरां नै अर भावां री बारीक-सी अणदीसती रेख नै पकड़ण री कोशिश करणिया कवि-साहित्यकार भी भाषा रा प्रयोक्ता हुया करै। अै लोग अनुभूति रा फूठरा चितराम खैंचण खातर उण सूं मोकळे लचीलेपण री आशा राख्या करै।

इणी तरयां सूं दार्शनिक री भाषा-अपेक्षावां वैज्ञानिक री भाषा-अपेक्षावा सूं जुदी हुवै तो व्यापारियां री अपेक्षावां शिक्षकां री अपेक्षावा सूं मोकळो आंतरोपण रावै।

किणी भी जीवत भाषा री सैंगाऊ वडी चुनौती समाज रै लोगां री अै सगळी भिन्न-भिन्न अपेक्षावां नै पूरी करण रै रूप में रैया करै। हर क्षण बदळती सामाजिकता रै सागै-सागै आगै बैवती रैवण रै वास्ते भाषा नै रोजीनै भांत-भांत री कठिनाइयां सूं सामनो करणो पड़ै। अगर किणी भाषा री जड़ा गहरी हुवै अर वा आपरै पगा चालण रो माजनो राखती हुवै तो समस्यावा भलां ही जनमती रैवो, बा उणा सूं पार पावण रो रस्तो हमेसा सोधती रैवै। पण अगर भाषा रै मांय हीज कमजोरयां हुवै, जीवण रै सगळा क्षेत्रां री ताकीद नै पूरण रो जुगाड़ नी कर सकै तो बा मोकळो विस्तार को कर सकै नी।

इण सगळी बातां नै ध्यान मे राख'र जद आपा राजस्थानी भाषा मायै निजर दौड़ावां तो अेकै कानी इण री जूनी साहित्य-परम्परांवा, ऊजळी काव्य-रूढ़िया, वीरतां अर तेज रो उजास, गद्य और पद्य री मोकळी रचनावां, जुदा-जुदा बोल्या री निजू खासियतां चित्त नै आनन्द सू भर देवै। पण दूजै कानी राजस्थानी रै वास्तै सगळी आत्मीयता अर अपणापै, प्रेम व श्रद्धा रै बावजूद इण री मोकळी कमजोरयां भी ध्यान मे आया बिना कोनी रैवै। राजस्थानी री अै न्यूनतावा हीज उण री घणकरी समस्यावां नै निपजावती रैवै। अठै उणा री विगतवार चरचा की जा रैयी है।

भाषा रै केन्द्रीय रूप रो अभाव—आपरी सगळी खूबियां रै बावजूद राजस्थानी भाषा ओजूं ताईं आपरै केन्द्रीय रूप रो निर्धारण कोनी कर सकी है। भाषा री अेकरूपता रै बिना उणरो ना तो निर्दोष व्याकरण हीज बणायो जा सकै अर ना प्रादेशिक संकीर्णता री समस्यां सूं ही पार पायो जा सकै। ऊपर सूं हालांकै राजस्थानी री इण बोल्या माय को खास आंतरोपण कोनी है पण उच्चरित शब्दा रै उच्चारण रो भेद अर सहायक क्रियावां री प्रयोगशीलता इणां नै अेक-दूजै सू जुदा कर रैयी है। हाड़ोती रै मांय शब्दा रो उच्चारण मेवाड़ी सूं अलग अन्दाज में करीज्या करै तो शेखावाटी रो ढूंढाडी सूं। अेक ही शब्द इण वास्ते जुदी-जुदी

बोल्यां रै मांय आपरै निराळै ढंग सूं उच्चरित हुय रैयो है। इण खातर भाषा री अेकरूपता अ-निर्धारित ही है। इणी तरयां सूं मारवाड़ी मे सहायक क्रिया 'है' रो प्रयोग हुवै तो दूजी जागां 'छै' रो। जूनै साहित्य में भी ओ भेद मौजूद हो। इण कारण राजस्थानी रो आपरो केन्द्रीय रूप ऊभर कोनी पाय रैयो है। मतभेद मोकळी समस्यावां निपजाय रैया है। इणा रै मौजूद रैवतां राजस्थानी रो तेजी सूं विकास सम्भव कोनी दीखै।

व्याकरण री समस्यावां— राजस्थानी व्याकरण री पहलड़ी समस्या भाषा री आधारभूत ध्वनियां सूं ही निपज रैयी है। भाषा विचारां री अभिव्यक्ति रो माध्यम है, ओ अेक सर्वमान्य सिद्धांत है पण विचार दरअसल वाक्यां रै रूप में प्रकट हुया करै। इण वास्तै भाषा रो आधार ध्वनियां हुया करै। भाषा रो सर्वमान्य स्वीकृत स्वरूप इण भांत ध्वनि रै सूक्ष्म रूप मांय हर ठौड़ विदयमान रैया करै। सामर्थ्यवान् भाषा व्यापक परिवेश अर भांत-भात रै लोगां री आवश्यकतावां नैं पूरी करण री, ध्वनि-समूह नैं समेटण री ताकत स्वयं मे राख्या करै। राजस्थानी रो परंपरागत ध्वनि समूह आपरी निजी पिछाण राखै। पण आज हर भाषा रा रूप दूजी भाषा सूं तेजी सूं प्रवेश करतां शब्दां री आमद रै सागै तेजी सूं बदळ रैया है। उणां री ध्वनियां री खूबियां आज हर भाषा नै स्वयं में जगावण री पुरजोर कोशिश करणी पड़ रैयी है, राजस्थान मे भी आज शब्दां रो मोकळो आयात हुय रैयो है। पण इण रो पौरुष पूर्णता कानी झुकियोड़ो ध्वनि आधार मोकळी ध्वनियां संजोय कोनी पाय रैयो है। डिंगळ रै बगत सूं हीज आ समस्या राजस्थानी में मौजूद ही। शायद ओहीज कारण रैयो हुवै कै कवियां राजस्थानी री इण कमजोरी सूं मजबूर हुय नै व्रजभाषा कानी झुकगा, जिण सूं पिंगळ भाषा रो विकास हुयो।

आज भी राजस्थानी मे संस्कृत रो 'ऋ' स्वर अर उण सूं बण्योड़ा शब्दां रो उच्चारण कोनी हुय सकै। कृष्ण, कृपा, गृहस्थ जेहड़ा शब्दां नैं इणी मजबूरी रै कारण क्रिसन, क्रिपा, गिरस्थ रै रूप में इस्तेमाल करणो पड़ै। अंग्रेजी री मोकळी ध्वनियां जिकी कै 'आ' अर 'ऑ' रे विचाळै री है, उणां नै ओकार रूप देवणो पड़ै। कोलेज होस्टल, जेहड़ा दोयां माळा उच्चारण सामै आवै। जूनी राजस्थानी में 'ओ' अर 'अउ' रै रूप मांय बदळण री जिकी प्रवृति ही, जिण सूं 'रासो' रो उच्चारण 'रासउ' ज्यूं हुवतो। आ प्रवृत्ति हिन्दी-अंग्रेजी सूं आवणिया ओकरांत शब्दां रै उच्चारण मांय मोकळी बाधा घालै है। इणी भात 'न' वर्ण नै 'ण' रे रूप में उच्चारण री प्रवृत्ति 'पाणी' 'धणिक', जिसा रूप दे देवै, जिण सूं हिंदी रो 'बहानो' जिसै सरळतम शब्द रां उच्चारण करण मांय राजस्थानी आळा नै खासी कसरत करणी पड़ै। राजस्थानी रो मूर्धन्य 'ल' अर्थात् 'ळ' वर्ण इण भाषा री आपरी न्यारी ध्वनि है

पण आ आज हिंदी, संस्कृत रा लकार युक्त शब्दां रै मार्ग मोकळी भ्रांति पैदा कर रैयी है।

संयुक्त अक्षरा रै वास्तै राजस्थानी में अणूतै सरळीकरण री प्रवृत्ति निजर आवै है। इण सूं भी परस्पर विरोधी वातां दीसै है। अेक उदाहरण देवणो हीज मोकळो हुसी। राजस्थानी मांय 'र' वर्ण री संयुक्तना हमेशा सरळीकृत हीज हुवै। कदै भी उणनै रेफ रै रूप रै माय प्रयोग कोनी कियो जा सकै। 'आर्डर' नै 'ओरडर' 'सिर्फ' नै 'सिरफ' 'कार्यालय' नै 'कारियालय' रूपातरण इण प्रवृत्ति री हीज सूचना देवै पण आ प्रवृत्ति हमेशा रै वास्तै अेक अनिवार्यता हुवगी है, जिकी भाषा नै घणी हानि पहुंचा रैयी है। इण तरयां री मोकळी कमजोरघा राजस्थानी रै शब्द-भण्डार नै सीमित कर रैयी है।

ध्वनि रै पीछै शब्दां री स्थिति हुया करै है। राजस्थानी में शब्दा नै लेयर भी मोकळी दिक्कतां पेश आवै। नूंवा शब्दां रै आमद री कोशिश माय राजस्थानी भाषा ओजूं ताई मध्य-युगीन सस्कारां री वेड़चा सूं जकड़ीज्योड़ी है। मुसळमानी शासनकाळ मे शब्दां रै आमद री दिशा संस्कृत सूं नी हुयर अरबी-फारसी सूं ज्यादा हुवण लागगी ही। इण रो ओ दोष राजस्थानी माय पनपगो कै इण रो रुझाण आज भी अरबी-फारसी रै शब्दां नै संजोय राखण कानी है। संवाददाता री जागां अखबार नवीस, निवेदन रै स्थान पर अरज, प्रार्थना री जागां अरदास जेहड़ा शब्दां मे किणी भी तरै री आपत्ति कोनी। पण आज उत्तरी भारत री सगळी भाषावां (राजस्थानी री सहोदरा गुजराती समेत) अेक वार फेरूं संस्कृत सूं तत्सम रूपां री आमद कर रैयी है। खास तौर मू न्यायालय, विज्ञान, तकनीकी क्षेत्रां मांय पारिभाषिक शब्दा री सरचना संस्कृत रै तत्सम रूपा सूं हुय रैयी है। पण राजस्थानी ओजूं ताईं खबर नवीस जिसा शब्दां सूं चिपक्योडी है। इण मूं इण री खासी हानि हुय रैयी है।

दूजी भाषावां रा तत्सम रूपा नै स्वीकार करणो सोरो काम कोनी। हरेक भाषा इणां नै लेयर आछी-खासी दिक्कत मे पड आवै। राजस्थानी रै वास्ते तो ओ काम और भी समस्यावां फैला रैयो है। इण री ध्वनियां री मोकळी कमजोरघां अर इणां रै खातर व्याकरण री व्यवस्थावां रो घणकरो अभाव इण कठिनाइयां नै वधावण रो कारण हुय रैयो है। राजस्थानी भाषा री प्रवृत्ति संस्कृत री अपेक्षा अपभ्रंश रा अग्रसरी-भूत रूप सू ज्यादा हेत राखै। इण कारण संस्कृत रै तत्सम रूपां नै इण मे सीधा ही स्वीकार करणो परम्परा रा प्रेमी लोगा नै पसंद कोनी आवै। संस्कृत रै तद्भव रूपां नै अंगीकार करणं मे इण री जित्ती भी चेष्टावा है, बे सगळी-री-सगळी अपभ्रंश री प्रवृत्तियां सूं परिचालित है। शब्दां रै द्वित्व री प्रवृत्ति (जिया सत्त,

कम्म) अर विपर्यय री प्रवृत्ति जिया धर्म री जागां ध्रम, कर्म री जागां क्रम, गर्व री जागा ग्रब जिसा अर इणी भांत रा सैकड़ूं तद्भव शब्दां रा उदाहरण, जिका कै राजस्थानी भाषा री खासियतां नैं पेश करै, संस्कृत रै तत्सम रूपां नैं वणती कोशिश अस्वीकरण री हीज सूचना देवै।

आज जद कै भारत री सगळी भाषावां वैज्ञानिक युग री नित नूवी सामै आवणवाळी आवश्यकतावां रै वास्ते या तो दूसरी भाषावां सू (खासकर अंग्रेजी सू) तत्सम शब्द लेय रैयी है, या पछै संस्कृत रै तत्सम समानार्थी शब्दां सू पारिभाषिक शब्दा रो निर्माण कर रैयी है। राजस्थानी रै वास्तै आ्हीज बात मोकळी दिक्कत पेश कर रैवी है। ओ ही कारण है कै आपा री भाषा रो घरेलू व्यवहार खातर करणै में कोई सकोच कोनी करण वाळो अेक शिक्षित राजस्थानी मिनख इणनैं प्रदेश री राजस्थानी भाषा रै रूप में समर्थन देवण में सकोच कर रैयो है। अठै हिंदी भाषा री मिसाल सामै राख'र भाषा राजस्थानी री इण कमजोरी नैं अर उण सू निपज वाळी समस्यावा नैं समझ सकसां। हिंदी रो हेताळू व्योहार अपभ्रंश सू तद्भव शब्दा री अपेक्षा संस्कृत रै तत्सम रूपा सूं तुलनात्मक दृष्टि सू ज्यादा है। इण कारण इण नैं नूंवा पारिभाषिक शब्दा नैं घड़ण माय संस्कृत सू सहायता लेवण खातर किणी भी भात री दिक्कत को हुवै नी। आज सू बीस-पच्चीस बरसां पहली हिंदी माथै ओ वडो भारी आरोप हो कै आ भाषा तकनीकी, विज्ञान आदि रा नूंवां क्षेत्रां री पारिभाषिक शब्दावळी को राखै नी। पण आज घणी दूर ताईं इण कमी नैं हिंदी भाषा-भाषी दूर कर दी है। इण प्रक्रिया में उणां घणी दूर ताईं संस्कृत रो उपयोग करयो है। इण मे कोई संदेह कोनी राजस्थानी नैं अगर लारलै समय ज्यूं हीज आपरै सामर्थ्य नैं वडावणो है तो उण नै परम्परागत सांच रो मोह छोडणो पड़सी। उण नैं नूवै जगत री भाषा वणन खातर क्रांतिकारी परिवर्तन करण वास्तै तैयार हुवणो पड़सी अर दूजी भाषावां रै तत्सम रूपां नैं है ज्यू हीज अंगीकार करणो पड़सी। पण अपभ्रंश रै ढंग रै रूप मे आ आज भी शब्दां रा अपभ्रष्ट स्वरूप नैं स्वीकार करणै री हीज आदत नीं छोडसी तो इण री निजू पिछाण तो भलै ही बरकरार रैय जासी पण आ विकासमान भाषा को बण सकै नी। अगर ओ कोनी हुय सकै तो पछै तद्भवीकरण री इण प्रवृत्ति नैं सब ठौड़ इस्तेमाल करणै री जबर्दस्त मुहिम छेडणी पड़सी जिण सू जियां लोक जीवण में जनता टेम (टाइम), कारट (पोस्टकार्ड), लिछमी (लक्ष्मी), मेठाई (मिठाई), सनेस (संदेश), जोगी (योगी), मसाण (श्मशान) रै रूपा में लोकाचार या रोजीनैं काम आवण आळो शब्दावळी रो देसी रूप निर्मित करयो है, उणी तरह सू इण प्रवृत्ति मे व्यापक रूप में विस्तार देयर हर क्षेत्र री पारिभाषिक शब्दावळी नैं आत्मसात् करणो पड़सी। ओ काम अेक तो सोरो

कोनी, दूजो इण मांय अेक खासं लम्बं समय री भी जरूरत पड़सी। दुनिया आज जिसी तेजी सूं आगं बढ रंयी है उणनं देखता अगर राजस्थानी भाषा तद्‌भवीकरण री कछुवा चाल सूं होज आगं वढती रंयी तो न केवल आ भाषा बल्कं इण रा प्रयोक्ता भी रात-दिन पिछड़ता जासी, इण में की संदेह कोनी।

ऊपर राजस्थानी रं अपभ्रंश सूं मेळ री प्रवृत्ति री जिकी बात बताई गई है, उण नं राजस्थानी री भाषा-समस्यावां रं संदर्भ में थोड़ं विस्तार सूं समझण री जरूरत है, क्योंकं इण प्रवृत्ति मांय सूं ही इण भाषा री दूजी और समस्यावां भी सामं आई है। राजस्थानी भाषा रं विकास नं मोटे तौर सूं इण भांत तीन चरणां में देख्यो जा सकं है :—

(१) जूनी राजस्थानी— 11 वी शताब्दि सूं 16 वीं शताब्दि ताईं
(२) मध्यकालीन राजस्थानी— 17 वीं शताब्दि सूं 19 वी शताब्दि ताईं
(३) आधुनिक राजस्थानी— 20 वी शताब्दि सूं अबार ताईं

आधुनिक राजस्थानी रं वास्ते उण रा जूना अर मध्यकालीन अं दोनूं रूप जुदी-जुदी समस्यावां उत्पन्न कर रंया है। इण खातर इणां रो अठं अलग-अलग विवेचन करणो समीचीन रहसी।

जूनी राजस्थानी सूं निपज्योड़ी समस्यावां—उत्तरी भारत री दूजी भाषावां ज्यू ही राजस्थानी रो विकास इग्यारहवी–बारहवी शताब्दि ताईं अपभ्रंश सूं हुयो। विद्वानां में अपभ्रंश रा प्रादेशिक भेद लेय नं भलं ही मोकळा मतभेद हुवो पण इण बात में सगळा जणा अेकमत है कं स्वय अपभ्रंश भाषा रं विकास क्रम रं मांय उण रं पहलड़ी अपभ्रंश अर पाछली अपभ्रंश रं रूप में दो चरण सामं आया। ज्यादातर भाषावां (जिण में हिन्दी खास तौर सूं सामळ है) अपभ्रंश रं पाछलं रूप नं आपरो आधार बणायो। अपभ्रंश रं इण रूप नं समुन्नत (अेडवांस्ड) या अग्रगामी अपभ्रंश रो नांव दिरीज्यो हो जद कं उण रं पहलड़ं रूप नं परिनिष्ठित अपभ्रंश रं रूप में पिछाण्यो गयो। हालाकं इण दोनां नं अपभ्रंश ही कैवता पण दोनूं रूपां में मोकळो अन्तर हो, इण में की सदेह कोनी। अठं इण भेदां री विगत में जावण री जागां इण पक्तिया रो लेखक इण बात कानी सुधी पाठका रो ध्यान आकर्षित करणो चावं है कं राजस्थानी भाषा रा प्रारम्भिक प्रयोक्ता इण परिनिष्ठित अपभ्रंश सू जुड़ियोड़ा हा। यू तो हर भाषा रा दो रूप हमेशा मौजूद रंवं है। इणां नं परिष्कृत भाषा व देसी भाषा इण दो रूपा सूं पिछाण्या जावं है। भाषा रो परिष्कृत रूप व्याकरण-सम्मत हुवं जद कं देसी रूप उण रं विकसित रूप री बानगी दिया करं है। अपभ्रंश रो परिनिष्ठित रूप भी इण सिद्धांत रं मुजब उण रं देसी रूप सू दूर अपेक्षाकृत व्याकरण री बंदिशा सूं ज्यादा बंधियोड़ो हो।

राजस्थानी रो प्रारंभिक विकास इणी परिनिष्ठित अपभ्रंश सूं हुयो। इण खातर इण मांय सुरू सू हीज साहित्यिक सभावनावां तो मोकळी पनपगी पण उण रो देसी आधार चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दि ताईं गायब-सो रैयो। इण रो परिणाम ओ निकळचो कै राजस्थानी रो प्रारंभिक रूप प्रयोगा रै मोह रै कारण अर भाषा रै परिनिष्ठित स्वरूप री बहुतायत सूं धीरै-धीरै संकुचित हुवण लागगो। सोळहवीं शताब्दि ताईं इण नै डिंगळ नांव सूं पुकारचो जावतो। साहित्यिकता री बहुतायत अर देसी आधार री समाप्ति रै कारण आ भाषा कृत्रिम वणगी। इण कारण जूनी राजस्थानी रै साहित्य में प्रयोगां रो लूंठोपण तो निजर आवै पण जीवण री ताजगी सफा गायब दीखै है।

डिंगळ भाषा री आ कृत्रिमता आपरी निजू असरदार विशेपतावां राखता थका भी भाषा नै जड़ करदी, इण मे की संदेह कोनी। आज री राजस्थानी रै वास्तै अेक मोटी समस्या आ है कै डिंगळ रै संस्कारां नै निभावणो आज मुश्किल अर अनावश्यक हुवता थका भी उणा सूं वा (राजस्थानी भाषा) मुक्त कोनी हुय पा रैयी है। इण रो अेक कारण ओ है कै राजस्थानी रो ओ रूप भलै ही कृत्रिम हो, ओ हीज इण भाषा रै व्याकरण रो आधार है। राजस्थानी रो सगळो व्याकरण इण भाषा रूप नै मानक मान'र ही निर्मित हुयो है। भलां ही टैसिटोरी हुवो कै भलां ही रामकरण आसोपा। अै लोगा राजस्थानी रै व्याकरण रै नांव माथै प्राप्त (साहित्य री सीमावां रै कारण) दर असल सिर्फ डिंगळ भाषा रो हीज व्याकरण लिख्यो है। अबै जद कै भाषा रो रूप नित नूंवो हुय रैयो है, जूना शब्दां रा रूप घिस रैया है, वाक्यां री वणगट नूंवो अंदाज धारण कर रैयी है अर तेजी सू भाषा माय नूंवी प्रवृत्तिया पनप रैयी है, उण वगत ओ व्याकरण इण रै विकास मे मोकळी अड़चण पैदा कर रैयो है। इण वास्तै आज री राजस्थानी भाषा री इण समस्या सूं छुटकारो पावण सारू डिंगळ रै मोह नै अर उण रै व्याकरण री बंदिशा सै छोडणो ही पड़सी। इण रै विना इण भाषा रो तेज गति सूं विकास सभव कोनी।

मध्यकालीन राजस्थानी सू उपजयोड़ी समस्यावां—डिंगल जद सकुचित अर कृत्रिम भाषा रो रूप धारण करण लागगी तो आम जनता में तेजी सूं उण सू अलग राजस्थानी री देसी रूप विकसित हुयो। भाषा रै इण रूप रो विकास लोक चेतना सूं सांतरै भाव सूं जुड़ियोड़ो हो। ओहीज कारण है कै इण मे लोक-साहित्य रो मोकळो सर्जण हुयो। मीरां अर राजस्थानी जन-भावना नै ऊंडी गहराई ताईं जुड़योड़ां राजस्थान रै संत लोगां रो साहित्य मध्यकाल री भाषा रै लोक आधार रो प्रमाण प्रस्तुत करै है। इण भाषा मांय सरळीकरण री प्रवृत्ति खास ध्यान खीचण आळी विशेपता है। इण भाषा में ही संस्कृत रै शब्दां रा तद्भव रूप विकसित हुया

हा। इण प्रवृत्ति सूं हालांकै मोकळो लाभ हुयो पण अेक मोटो नुकसाण ओ हुयो कै इण भाषा री दिशा ग्रामीण भाषा रो रूप धारण करणै री ओर प्रवृत्त हुयगी। ठेठ ग्रामीण भाषा रै रूप में आ फैलती रैयी। इण सूं आ जाणै भाषा रै क्षेत्र नै छोड'र बोली रै क्षेत्र में प्रविष्ट हुयगी। भाषा रो ओ रूप आपरै निजू मुहावरां रै कारण, *सरळता अर मिठास रै कारण राजस्थानी भाषा रो अेक प्रभावशाली आकार* निर्मित कियो। पण इण री दिशा बोली रै कायनी हुवण सूं भाषा रो रूप धीरै-धीरै खतम-सो हुयगो। चारण कवियां ज्यूं डिंगळ नै अेक बणावटी अर मुशकिल भाषा बणायदी उणी भांत लोक चेतना राजस्थानी रै देसी रूप नै ग्रामीण बोली रो रूप दिराय दियो। भाषा विज्ञान रो ओ सिद्धांत है कै विकासशील भाषा री दिशा बोली सूं भाषा कानी प्रवृत्त हुवै पण मध्ययुगीन राजस्थानी रै लोक साहित्य री प्रधानता अर उण रो ग्रामीण आधार आ गवाही देवै कै आ भाषा दर असल बोली *कानी ज्यादा विकसित हुयी। सामान्य हिंदीजन या दूसरा भाषा-भाषी राजस्थानी नै* भाषा नी मान'र बोली मानै उणां री चितना रो ओहीज आधार है। इण वास्तै आपां जद राजस्थानी नै भाषा रै रूप मे संविधान में मान्यता प्राप्त भाषावां री सूची मे सामल करावणी चावां उण वगत दूजा लोग इण रो समर्थन इणवास्तै कोनी करै कै उणां रै मन मे आ वात घर करगी है कै राजस्थानी दर असल बोली ही है भाषा कोनी। इण भांत मध्ययुगीन राजस्थानी रो भाषा रूप इण रै खातर आपरै ढंग सूं समस्यावां पैदा कर रैयो है। लोगां रै इण भ्रम नै तोड़ण सारू अर राजस्थानी नै भाषा रो संमानप्रद रूप दिरावण वास्तै ओ जरूरी है कै आपां इण री गति री दिशा नै अबै बदळ देवां। शहरीकरण री प्रवृत्ति जद आज समग्र देश रै समाजशास्त्र रो आधार बण रैयी है उण वेळा राजस्थानी भाषा री ग्रामीण दिशा नै तोड्यां बिना उण रो विकास असंभव-सो है। आ बात सुधी पाठकां ज्यूंही इण पंक्तियां रै लेखक नै भी चोखी कोनी लाग रैयी है। पण ज्यूं आज सगळी राजनीति, विज्ञान, उद्योग ही नीं देस री सगळी समाजिक, आर्थिक अठै ताणी कै सांस्कृतिक दशावां रो नियमन, उणां रो नेतृत्व अर उणां री सगळी चिंताधारावां तक जद कै शहरी मानसिकता सूं नियंत्रित हुय रैयी है उण वखत राजस्थानी री ग्रामीणोन्मुखता नै संजोय राख'र आपां विकास कोनी कर सकसां इण वात मे रंचमात्र भी संदेह कोनी।

आधुनिक राजस्थानी री समस्यावां—राजस्थानी रो आधुनिक रूप सगळी कठिनाइयां समस्यावां रै बावजूद तेजी सूं उभर रैयो है। आ वात आपां नै आश्वस्त कर'र हौसलो-अफजाई भी करै। पण आज री राजस्थानी भाषा री भी अेक जबर्दस्त चुनौती रै रूप मे सामैं खड़ी समस्या है। राजस्थानी नै आज स्वयं री पिछाण कायम करणै री चुनौती सूं जूझणो है। आ समस्या हिंदी सूं अलग आपरी निजू पिछाण

कायम करणं री है। गुजराती अर राजस्थानी दोनूं भाषावां सोळहवीं शती ताईं अेक-ही ही। पण उणरै पछै गुजराती तो आपरो स्वतंत्र भाषा-रूप विकसित कर लियो पण राजस्थानी (जियां पहली स्पष्ट कियो गयो है) या तो डिंगळ रै बनावटी रूप नै आगै वढायो या देसी रूप नै, जिको धीरै-धीरै बोली रो रूप धारण कर लियो। आज गुजराती नै हिन्दी री बोली मात्र कैवण री हिम्मत कोई कोनी कर सकै पण राजस्थानी न केवल भाषा ही को मानीजै नी बल्कै इण नै घ्यारू फेर हिंदी री *अेक बोली रै रूप मे ही समझी जावै है।* *राजस्थानी री आ समस्या सैंगाऊ टेढी* सब सूं भीषण अर उण रै अस्तित्व माथै हीज सवाळ खड़ो करण आळी घोरतर समस्या है।

समस्यावां रो निराकरण—अै सगळी समस्या सूं पार पावण सारू राजस्थानी री दिशा तो वदळणी पड़सी ही (जिण सूं कै आ आज री सामाजिकता अर युगधारा सूं जुड़ सकसी), इण रै विस्तार रा घणा-सारा उपाय भी करणा पड़सी। भाषा रो विकास अेक-दो वर्षां में कोनी हुया करै, ना अेक दो विद्वाना-पंडिता री चेष्टावा सूं ही उण मे गति उत्पन्न हुवै। अै बातां जिती साची है उती ही आ बात भी साची है कै किणी भी भाषा री समस्यावां अेहड़ी कोनी हुवै कै अणसुळझायोड़ी ही रैय जावै या समस्यावां रै कारण भाषा रो विकास हीज रुक जावै।

भाषा तो वैवते पाणी री धारा है। अगर उण में गति है तो किती बाधावां सामनै क्यूं नहीं आजावै बा तो आपरो रास्तो पाय ही रैवेली। समस्यावा उण रै मार्ग में रोड़ा भलै ही नाख दै, उणनै रोकण मे जड़ वण'र पूरी तरधा-सूं समर्थ कोनी हुय सकै।

राजस्थानी भाषा री गति पूरै अेक हजार वरसा सूं कायम है। इणरी यात्रा में दूजी भाषावा रै ज्यूं हीज मोकळा उतार-चढाव आया है। आज उण री गति नै तेजी देवण री जरूरत है। चेष्टा करयां सूं राजस्थानी रो वांछित विकास भी संभव है, आ अेक निर्द्वन्द्व बात है। राजस्थानी री इण दशा सारू अपेक्षित चेष्टावां मे सैंगाऊ जरूरी इण रै शब्द भंडार रो विस्तार है। हर भाषा री ताकत अर गतिशीलता रो आधार उण रो शब्द भंडार हुया करै। भाषा री समृद्धि री पिछाण शब्दा रै तादाद सूं हीज तय हुवै है। राजस्थानी रै शब्द भंडार वीरता, तेज, रति, भक्ति जेहड़ा भावां री अभिव्यक्ति सारू जिया सामर्थ्य अर्जित करी ही आज बौद्धिक-वैचारिक क्षेत्र री सर्वांगीण अभिव्यक्ति सारू भी उणी भांत इण नै आत्मसात् कर'र आपरो सामर्थ्य वढावणो पड़सी। जीवण रै हर क्षेत्र री, भाव रै हर तरह री कोर री, सौदर्य री हर तरह री दिशा री, बुद्धि री हर तरह री रंगत री अभिव्यक्ति करणं आळी शब्दावळी नै राजस्थानी में पनपावण री जरूरत है।

शब्द मंडार री दूसरी दिशा पारिभाषिक शब्दां रै विकास री भी है। आज जिती तेजी सूं समाज गतिशील है उतै ही वेग सूं हर भाषा सूं पारिभाषिक शब्दां रै निर्माण री अपेक्षावां भी वढ रैयी है। राजस्थानी इण रूप मे मोकळी पिछड़ती जा रैयी है। इण कमी नै दूर करण सारू व्यापक अर गंभीरतम प्रयासां री जरूरत है। लेखक री समझ में अकादमी नै अेक वृहत् प्रायोजना (प्रोजेक्ट) वणाय'र विज्ञान, दर्शन, साहित्य, तकनीकी आदि जिसै हरक्षेत्र री परिभाषिक शब्दावलियां रो निर्माण करणो चाहिजे। इणरै बिना राजस्थानी रो विकास संभव कोनी लागै।

शब्दकोश रो निर्माण—आ भी भाषा री एक जबरदस्त चुणौती है। राजस्थानी में ओजू ताईं वण्योड़ा शब्दकोश अधूरा, अेकागी अर अपर्याप्त है। इणां री अेक बडी कमजोरी आ है कै उणा मांय कोरी साहित्यिक सदर्भता मौजूद है। जीवण संदर्भ रा सगळा आयामां सूं जुड़ियोड़ी शब्दावळी अर उणारी अर्थ-निष्पत्तियां रो निर्धारण कियां वगैर भाषा रो विकास असंभव है। इण वास्तै अठीनै भी ध्यान दियो जावणो बहुत जरूरी है।

राजस्थानी अेक व्यापक क्षेत्र री भाषा है। आज राजस्थान माय ही नही उण क्षेत्रां माय भी इण रो व्यापक प्रसार है जठै प्रवासी राजस्थानी लोग व्योपार कर रैया है। अै प्रवासी लोग इण भाषा नै बंगाल, असम, महाराष्ट्र, तमिलनाडु रै अतिरिक्त विदेशां माय ताणी फैलाय दी है। पण इण रो व्यवहार घरेलू भाषा रै रूप मे हीज हुय रैयो है। मध्ययुग मे राजस्थान रा व्यौपारी लोग इण रो व्यावसायिक इस्तेमाल कियो हो अर महाजनी रै रूप में इण नै अेक व्यापक क्षेत्र रै व्यवहार री भाषा वणाय दी ही। कोई भाषा जद ताईं घरेलू भाषा रैवै उण रो विकास को हुय सकै नी। इण वास्तै राजस्थानी री महत्ता नै अेक वार ओरू स्थापित करण सारू इण नै व्यावसायिक-औद्योगिक क्षेत्र री भाषा रै रूप मे विस्तार देवणो जरूरी है। इण खातर राजस्थानी मे पारिभाषिक शब्दावळी रो विकास भी करणो पड़सी। इण शब्दावळी रै सिरजण रै विना राजस्थानी री उन्नति या प्रगति री बात मात्र भावुकता सूं करयोड़ी कल्पना अर हुयर रैय जासी।

भाषा रै तेजी सू विकास खातर अखबारां-पत्रिकावां री मोकळी आवश्यकता है। इण क्षेत्र में राजस्थानी में इण कमी नै दूर किया बिना उणरी समस्यावा नै पार कोनी पायो जा सकै पण दुख री वात आ है कै आपा राजस्थानी मे अेक भी दैनिक अखवार तो निकाळ सका कोनी अर सरकार सू आ अपेक्षा करा कै वा राजस्थानी नै सरकारी कामकाज री भाषा वणाय देवै। (कोई संतीस वरस पहली श्री रगाभाई जयपुर सू जागतो जोत नाव रो राजस्थानी मे अेक दैनिक पत्र निकाळयो हो। वो अनियमित हो अर थोड़े अर्से पछै वद हुयगो) इणी भात आपाणी राजस्थानी

भाषा जठै ताई सगळै ज्ञान-विज्ञान रै विषयां री भाषा रै रूप में इस्तेमाल नी हुवै, उणरी समस्यावां को मिट सकसी नी। ओजूं ताईं आ सिर्फ साहित्य री भाषा है। सौ-पचास साहित्यकार इण रो प्रयोग पुस्तक लेखन में कर रैया है, पण जद ताईं इण नै सगळै वाङ्मय री भाषा रै रूप में इस्तेमाल नहीं कियो जासी आ पिछड़योड़ी भाषा हीज बणी रहसी।

इण भात ससार री दूजी भाषावां ज्यूं हीज राजस्थानी री भी आपरी मोकळी समस्यावां है। समस्यावां हुवणी भूंडी बात कोनी, आ तो सुखो री बात हुवणी चाहीजै। इण खातर निराश हुवण रो कोई कारण कोनी। जठै ताईं भाषा रै सामनै समस्यावां खड़ी रैसी, बा जीवत अर चुनौतियां सूं जूझण आळी भाषा बणी रहसी। बिना समस्यावां रै भाषा मृत भाषा बण जावै। राजस्थानी री मोकळी समस्यावां इण रै जीवण रै धड़कण री सूचना देय रैयी है। इण वास्तै इणा सूं भय खावण रो या निराश हुय जावण री किंचित् भी जरूरत कोनी है। आज री प्रत्यक्ष जरूरत आ है कै आपां राजस्थानी रै तेजी सूं विकास सारू सचेष्ट हुवां क्यूं कै ओ कोरी भावुकता रो प्रश्न नी है। ओ भाषा री सगळी आस्थावां रो, विश्वासा रो अर भाषा री सगळी वैचारिक सामर्थ्य अर बौद्धिक जागरूकता रो प्रश्न है। इण ओळघां रै लेखक रै आशा ही नी, अटूट विश्वास है कै आपां इण परीक्षा में खरा उतरालां।

□

(राजस्थानी गंगा मे प्रकाशित)

राजस्थानी साहित्य री नूंवी कविता

साहित्य हरमेस परम्परा ने जीया करे पण आपरे निराले अन्दाज मे। एक परम्परा सूं द्रोह दूजी परम्परा सू सूत्रपात रो कारण हुया करे। जूनी परम्परा रो विरोध नूंवी काव्य प्रेरणा रो हेतु बण ने उण रो प्रवर्तन करिया करे। हर टेम री नूवी काव्य चेतना बदळियोड़ी जीवण दसावां माय जूनोड़ी भींत री निजरां रे टूटता खण्डहरां माथै माथो ऊचो कर ने गरब सू ऊभो होवण री चेष्टा किया करे। बदलाव री ऐड़ी बातां हर युग में सामी आवती रैवे अर नूई नूई अनुभूतियां ने नूअे नूअे ढंग सू परकट करण री आपरी निजू शैलियां रो सिरजण करती रेहा करे। आगे जायने ऐ परम्परावा भी प्रयोग री मोकळी पुनरावृतियां रे कारण फीकी पड़ती जावै। जिण सूं द्रोह रो भाव आपो आप नूंवा चितेरा में दीसण लाग जावै। परम्परा रो ओ अनूठो ढंग साहित्य री नित नूवी सिरजण चेष्टावा आगीने धकेलती रैवे।

नूवी कविता री सज्ञा सूं हिन्दी मे जिकी चेतना उभरी ही उण रो आधार कोरो मोरो परम्परा सूं विद्रोह रो भाव हीज कोनी हो। उण रो आधार बदलियोड़ा युग री एक अणददीसती माग ही। दूजोड़ा महायुद्ध रे पाछे दुनियां भर मे जिको विचार मंथन हुयो वो जूना मूल्या अर आदर्शां नें अचाणचक में हीज भूठा अर निकम्मा बणाय'र परे नाख दिया। इण भावना ने देस री आजादी अर उण रे पाछे री सगळी जीवन दसावा घणखरी पुष्टता दिरायी। ऐड़ी टेम रचनाकार रो हिवड़ो मोहभग रा अनुभावा सू भरीज ने नूंवे युग री माग ने रचना रो विषय बणावण खातर आगीने आयो। आ लोगा री चेष्टावां प्रयोग ने हीज आपरो इष्ट मानियो अर नूंवी पगडडियां माथै आपरा पगलिया धरता थका साहित्य सिरजण कियो। इण काव्य आन्दोलण ने 'नयी कविता' रो नांव दियो गयो। छठो दशक हिन्दी में तो नई कविता रो दशक बण'र सामी आयो जदे के उणी युग में उणी जीवण दसावा मे जीवण आळा राजस्थानी रा रचनाकार उण बोध ने कोनी पकड सक्या। पण परम्परावा सूं द्रोह रो भाव इणां माय भी बूरियोड़ा छाणा जिया माय ही माय सुलगतो हो इण में भी किणी भात रो सन्देह कोनी है।

नूंवी काव्य चेतना : एक आवश्यकता— राजस्थानी रचनाकार रे वास्ते नूवी चेतना ने सामी लावण री चेष्टा आज रा बोध ने धारण करण री कोरी एक चुनौती हीज कोनी ही एक तरासूं उणा री मजबूरी भी है। डिंगल री बेळा सू ही

राजस्थानी साहित्य री चेतना माथे आंचलिकता अर लोक संस्कृति री छाप मोकळी गहराई सूं छापीजियोड़ी ही। अठे री ऊजळी अर ओपती लोक संस्कृति अठे रे लोगां रे सोच ने सागीड़े भाव मूं जकड़ियोडी ही। इण अचल री आपरी निजू पिछाण जिण रूप में कायम हुयगी ही उण सूं नीसरणो सोरो काम कोनी हो। सिरजण री वेळा उण री चेतना माथे संस्कृति रा सगळा फैलाव हावी रैंवता। उण सूं बातरे जांवती वेळा उण ने ओ खतरो हरमेस रैंवतो के आंचलिकता रो पल्लो छोडती वेळा कठै ही उणा री खुद री निजू पिछाण ही खतरा में नी पड जावे। आजादी रे पूठे इणी कारण अठे रो रचनाकार और गहराई सू जूनी परम्परावा सूं जुडग्यो। गोरडी रा गीतां रा के धोरां री महिमा रो सगीत हीज गुणगुणावण लागग्यो। उण री आंख्यां रे सामी वेंवती समान्तर जिनगाणी जाणे उण रे वास्ते की भी महत्व कोनी राखती। अर बा आंख्या मीच'र जूनी वाता मे हीज आपरी शक्ति खरच करतो रेह्यो। आ बात नूआ सिरजण रे वास्ते मोकळी चुनौती ही जिण सूं जूझण मे वे की भी भात रो सकोच कोनी कियो।

नूवा हस्ताक्षर—राजस्थानी साहित्य में नूंवी कविता री चेतना रो विकास दोवडी अपेक्षावां ने पूरणे री कोसिस ही। एके कानी तो युग री मांग ही जिण ने हिन्दी आळा कवि पूर रह्‌या हा अर जिणां रो सीधो असर आं कवियां माथै पड़णो जरूरी हो। दूजी कानी अठे रा कवि री खुद री माय री मांय कसमसीजती चेतना ही जिकी के परम्परा सूं मुक्त हुवण खातर आपरी पूरी ताकत सू कोसिस कर रैया हा। फेर भी राजस्थानी मे नूवी कविता री सरुवात सातवां दसक ताईं कोनी हुई सकी। हालाकै उण कानी कदम बढावण रा सागीडा सकेत मिलण लागग्या हा। इण अणन्यूतोडी दौडती आवती काव्य चेतना सू परहेज करणो अब सोरो काम कोनी हो। नानूराम सस्कर्ता, नारायणसिंघ भाटी, रैंवतदान चारण, गजानन वर्मा, सत्यप्रकास जोशी सारीखा कवि नूवी जमी री पिछाण रा आसार खडा करण लागग्या। इणा मे नूंवं जमाने री जीवती सम्वेदनावा ने माडाणी नकारण री प्रवृति फीकी पडगी। नूआ भाव बोध रे वास्ते ऐ लोगां राजस्थानी साहित्य रा दरवाजा खोल दीया। डा. मनोहर शर्मा रा अे बोल करवटीजती परिपाट्यां रो प्रमाण है— 'कवि कल्पना रो हंस/मन भावतो है तो यथार्थ री कोचरी भी कम रूपाली कोनी/ हस रे गीता रे साथे/अबै कोचरी रा भी गीत गावो।'

नूवी कविता री ओळखाण—इण नूंवी कविता री साची ओळखाण सन इकोत्तर मे प्रकासित काव्य सकलण 'राजस्थानी-एक' सू हुय सकी। जूनी चाल आळी कविता ने इण संकलण री मोटी रूपरेखा हिन्दी में अज्ञेय सूं सम्पादित 'तार-सप्तक' मूं प्रेरणा लेय ने सिरजित हुई। नूंवी चेतना रा पांच कवियां ने सामी लावण

वाळो ओ संकलन पण तार सप्तक री कोरी मोरी भद्दी नकल हीज कोनी है। फैसण री चाल ने अपणावता थकां भी इण संकलण री कवितावां रे मांय राजस्थानी री आपरी मिठास, रचनावा रो निरालो अन्दाज अर कथ्य री आपरी ओळखाण मोजूद है। सकलण रा पांचऊ कवि गोरधन सिंह सेखावत, पारस अरोड़ा, ओंकार पारीक, मणि मधुकर अर तेजसिंघ जोधा एकण कानी नूंवी चाल ने लीक देवण री सचेत विचारधारा राखे है तो दूजी कनी आपरा निजूपणां ने भी दरसावण में पाछै कोनी रैवे है। इण संकलण सूं राजस्थानी री नूवी कविता री पिछाण कायम हुई। जिण मायं आजरा मोकळा कवि आपरा कदम बढाय रह्या है। इण मांय चन्द्रप्रकास देवल, सावर दइया, नन्द भारद्वाज, विश्वनाथ शर्मा विमलेस, रामेश्वर दयाल श्रीमाली, लक्ष्मीशंकर दाधीच, हरमन चौहान, पुरुषोत्तम छंगाणी, सत्येन जोशी, प्रेम जी प्रेम, राजेन्द्र बोहरा जेड़ा एकदम नूंवा कवियां रे सागे सागे मोहम्मद सदीक, मोहन अलोक, शिवराज छगाणी, अन्नाराम सुदामा, रघुराजसिंह हाड़ा जिसा कवि सामळ है।

माटी री अणभावतो कोड—राजस्थानी री नूंवी कविता हिन्दी री ऐडी कविता सूं घणखरी दिसा लेवतां थकां भी उण री पिछलगू कोनी है। भूएपणां रा संस्कारां ने ऐ लोग हिन्दी रे सागे सागे सीधा विदेसी साहित्य सूं भी अपणावंण री कोसिस की है। इणा रे मांय माटी रो कोड सांतरे भाव सू सम्वेदनावां सूं गूंथी-जियोड़ो दीसे। ऐ कवि नूवे भाव बोध रे मिनख रे रूप मे निजूपणां ने खोजता थकां भी आपरे ओळू दोळू री हवा री ताजी महक ने छोडणो कोनी चावे। भीडतन्त्र रो एक अग होवण रो अहसास इणां मांय अनुभवां सूं पागीजियोड़ो निराश भाव भरे है। पण इण रे मागे गाँव री आपरी पिछाण राखण री दर्दीली अनुभूतिया भी इणां री चेतना मे जमियोड़ी है—'ओ गांव म्हारो है/राजनीति सूं सूत्योड़ो।' इणी तरा सूं जूनी परम्परावा री निरर्थकता रो अहसास भी जीवंते रूप मे उभर्यो है—'आ मायला/हेलो पाड़ा चूच भिडावा/तमासो करां/आ मितर/धतूरो घोटां/मसाण जगावां/साथै मरा।' (मणि मधुकर)

परम्परा सूं द्रोह अर पीढ्यां रो आंतरोपण—आजादी री अणओपती बाता इण कविया ने विद्रोही बणावे। सामाजिक जीवण दसावां मांय वर्ग भावनावा, मिनख विरोधी आचरण रो विरोध इणा री कवितावां मांय उग्र भाव सूं सामी आई है। ऐ कवियां रो सगळो विरोध, कविता रो जुझारूपण अर भासा री गुस्सेल तबियत, आर्थिक असमानतावा ने खासतौर सूं चवड़े लावण रो एक मोटो उपक्रम है। मोहभंग री आ पीड़ा दर्द रा दस्तावेज वण'र इणां री कविता ने झिझोडती निजर आवे है—

लोग केवं सूरज ऊगो, पण कठै गयो परकास...
हाथ हाथ नै खावण दौड़े किण री राखां आस...
मुलक री आ कैंडी आजादी
पूत-पितर मे मच्ची छिनाली
चारू दिस बरबादी । — (गणेसीलाल लाल व्यास 'उस्ताद')

आज री अराजक जीवण दसावां जिण अमूजे रो सिरजण करे उणा में जिनगी री आस्या पूरी तरै सूं भम्फोजगी है। ऊगते सूरज रो उजास अंधारा रो जिको फैलाव लीयोड़ा है उण मे लोग धोखे में पड़ियोड़ा भरमीज रैया है। जिनगाणी आजीवण कारावास री यातना भोगती, कैद हुयोड़ी साफ साफ निजर आवे है— 'काच रै पेपरवेट में बन्दी किणी रग पुसप री भांत/अेक पार दरसी कैद मे/बाट उडीकती जिदगाणी।' (पारस अरोड़ा)। मोहमंग अर व्यवस्था री अराजकता अणदबियोड़ा भाव सूं इण कवि री चेतना रो अग बणियोडो है जिण री हिलोरां ऐणी कविता री ओळी ओळी माय निसरती रैवे है।

अमूजे रो उकळतो लावो—दिखावा रा सगळा सिरकारी मूंडा समारोहां रे लारे मैह सूं पेला री काळी पीळी आंधी तेजी सूं बेवती आय रह्यी है। ऐ कवि लोगां ज्यूं आंख्या मींच'र माडाणी नकारण री भूल कोनी करे। अराजक जीवण दसावां रा हेतु रूप राजनीति अर उण री सगळी सुगली-भूण्डी बातां ने मेंहदी रा मांडिया ज्यूं बारीकी सूं कविता में उतारया है—

'प्यारे भैणो और भाइयो/आज आपनै मैं बताण ने आयो हूं के/मै चुनाव मे खड़यो हुयो हूं/'''जीयां पैल्यां बीरबली श्री हनुमानजी/लका मे जाकै असोक वाटिका उजाड़ी बैया ही मैं टेबल कुरसी उठा उठा के पटक पटक मारूगा विरोधिया रे सिर मे/आछ्या तीस मारखा भी बारे भागता फिरेगा' (विश्वनाथ शर्मा विमलेश)। अमूझती मिनख चेतना री उकेर इण कवितावां मांय ऊडी घणी है। सत्ता रो आतंक उण ने घणी देर तई अबै दबाय को राख सकै नी इण में इणा री पूरी आस्था है— 'आंगणे रो अमूजो/धरती पर/भम्पाड़ बण'र फूटसी बार लो मौसम/मायलै अमूजै री/रोकथाम/करण कद आडो आयो/कद आडो आसी।' (मोहम्मद सदीक)

नूवी जमीं रा ओळखीजता आखर—राजस्थानी री नुवी कविता री पिछाण करावण आळा ओळखीजता आखरा री भाषा अबे भणियोड़ा रो सन्तोप कोनी रैयो है। इण कविता री यात्रा गिरती पड़ती उणी दिसा माय आगीने जाय रैह्यी है। जिण दिसा मे आज री हिन्दी कविता ही कई सगळी भासांवा री कविता री यात्रा घणखरी बढती दीसे है। बोध रो ओ स्वरूप ऐणी रचना-प्रयासां रा ऊजलेपख री साख भरे है। इणां री कवितावा में जिनगाणी री ऊब घुटन अर वेफालतूपण—

जियां घर सूं दफ्तर/दफ्तर सूं घर/जिया म्हे जिया/तो फकत ओ सफर/जिया' (मोहन आलोक)। मूल्यहंता आचरणां ने चवड़ै लावण सातर मूल्यहीणता अर जड़ता आदि रो चितरण जियां–'क्यूं एक रघुकुली ऊभो है मुक्योडो/जगै जगै सूं टूट्योड़ो तिडक्योड़ो/जमानो/नी जाणै किण री स्वतन्त्रता सारू निरन्तर कर रैयो है संग्राम (रघुराजसिंह हाडा)। सैंगासूं ज्यादा विडम्बनावां ने सामी लाअणवाळो व्यंग्य रो हथियार भी इणां री कवितावां माय आपरी जुदी पिछाण करावे जिणनै बांचणों दोरो कोनी है–'थारै मे कांई गुण है/कै तनै नमा, गैला मास्टर' (रामेश्वरदयाल श्रीमाली)।

ऐ प्रवृत्तियां राजस्थानी री आज री कविता री दिसावां ने साफीड़े भाव सू प्रकट करती दीसे। इणां सूं अब ओ भरोसो लियो जाय सके के राजस्थानी में अब कोरी मोरी कल्पनावां आळा 'गोरडी रा गीत' के 'धोरां री धरती रो संगीत' के 'मारू री प्रेमकथावां' रा दिन लदग्या। इण धरती में वीरां रा रगत री छापां ने सोधणो कीकर सम्भव है क्यूंके जमी रो एक-एक कण अवसरवादियां-भ्रष्टाचारियां री लीखा सूं रळीजियोडो गिंधाय रैयो है। अबे तो आज रा उबळता सवालां नै बाचणो जरूरी है। जिण सूं सायत जिनगाणी रे साथे, आज रा मिनख रे साथे, मिनखां री टूट्योडी आसावां रे साथे, अर पाठकां री अपेक्षावां साथे किणी भी भांत रो न्याय कियो जाय सके। नूवी कविता रो प्रयोग करण आळो राजस्थानी रो आज रो कवि इण मुजब री जागरूकता री मोकळी ओळखाण करावे इण में किणी भांत रो भी सन्देह कोनी है। ऐ सगळी बातां राजस्थानी री नूंवी कविता री चोखी सम्भावनां रो भी भरोसो दिरावै है।

□

(जागती जोत मे प्रकाशित)

धरती री आस्था रो रचनाकार : कथाकार अन्नाराम सुदामा

धरती री आस्था रो सांच—अन्नाराम सुदामा धरती री आस्था रो रचनाकार है। धरती ही इण रो विश्वास, इण री रचना-प्रेरणा अर इण रो प्रतिपाद्य है। धरती सूं छेड़ै इण वास्तै न तो किणी भात रो कथा क्षेत्र है, न किणी भात रा जीवन री आचार सहिता। इण री रचनावां में न तो धोरां रो रजत सिणगार है, न गोरडी री बाकी छिवयां, न प्रेमकथा रा सबडका है, न मोद्धावां रा पौरुषेय करतब। इण री रचनावां मांय राजस्थानी रा लेखकां री ऐडी बेडियां सूं दूर आज रे गांव रो यथार्थ सांचै रूप में उपस्थित है। वे गांव जिणा में गरीबी है, पिछड़ोपण है, दोवडा आदर्श है, फालतू री रूढियां है, संस्कारहीण आचरण है, अशिक्षा रे सागै उण रा मिनखां री मजबूरियां है। इण बातां नै चित्त सूं सामी लाय नै ओ लेखक आपणां ओळखियोड़ा गांवां ने नूवी ओळखाण दिरायी है। ऐ बातां इण लेखक री अनूठी पिछाण हीज कोनी करावै बल्कि मानवीय आस्था रो ओ रूप सगळे राजस्थानी साहित्य रे नूवे अनुभव रो दरसाव भी करावे है। आम आदमी रे दर्द री आ ओळखाण राजस्थानी गद्य री आगामी सम्भावनांवा नै उजगार करण रा ठोस काम भी करै है।

गांव रा यथार्थ रा वरणन करण वाळा सगज रचनाकारां मांय एक मुजब री उपकार चेतना दीसिया करै। गांव रो बखाण करता थका ऐडा लेखक आपरी निजता ने कोय बिरमाय सके। बारेसूं आयोड़ा सैलानियां ज्यूं गांव री घणकरी बातां ने ऐ जाणे मूवी कैमेरा री सहायता सूं पकड ने पाछो वरणित कर देवण में हीज वे आपरे लेखक कर्म री इतिश्री कर देवे। गांव री बातां ने समाज अर देस री मोटी मोटी समस्यावां सूं जोडनवाळा ओ रचनाकार माटी रा जुडाव री साची पिछांण कोनी कराय सकै। वैणै वास्ते गांव साची कोनी हुवे आपरी खुद री विचारधारा साची हुया करै। जमी रो कोड वैणै रचनाकर्म रो आधार कोनी हुवे। यश रा कोड उणां ने जमी सूं जोड़िया करै। इणी वास्ते उणांरी लेखनी जमी रा साच सूं सागीड़े भाव सूं एकमेक को हूय सकेनी। एकण कानी उणा री खुद री जुदी आस्थावां रैवे तो दूजी कानी धरती री सोचियोड़ी बातां काल्पनिक घटनावां माये टिकियोड़ी रैय ने

जुदो–जुदो असर निपजाया करै। धरती रो साच उणा री कलम सूं सामी तो आवे पण उणां रो आप री सोच उणां माथै मोकळी तरा सूं छायोड़ो रेह्या करै।

पण अन्नाराम सुदामा रे वास्ते आपरे सोच सूं भी बेसी आपरी जमी रो महत्व है। वो साधक रे भाव सूं रचनाकर्म कीनो है। पाठकां तई उणांरा विचार सम्प्रेषित हू जावे तो मेहनत सकारथ नही तो कोई बात कोनी। सोचरा स्थूल वैचारिक आधारां ने रचना सूं अलगावण री ऐ भागीरथ कोशिशां इणां री सगळी रचनावां मायने दीसे है। इण कारण इणां री कथा सृष्टियां माटी री ताजी महक सू रळियोडी है। ऐ इण महक रो इस्तेमाल निजर ने ऊपर सू गांव सू जोडण री जागां गांव री इच-इंच जमी में जायोड़ा सांच ने सामी लावण खातर कियो है।

ग्रामीण यथार्थ—अन्नाराम री रचनावां रो गाव घटनावां री चमकती मोत्या री लडी कोनी है। न 'भारतमाता ग्रामवासिनी' वाळो पूज्य भावां रो थोथो प्रदर्शण ही है। इण रो गांव आप री सम्पूर्णता में गुंथियोड़ो एक इकाई वाळो गाव है। कथा रो रचाव इण री रचनावां मांय आपरी निजता में सम्पूर्णता खोजण रो बन्धण तो स्वीकारे पण पोथ्या सूं निपजियोडा ज्ञान रो नकळी आडम्बर री किणी भांत री पिछाण कोनी राखै। उपन्यासा री एक एक ओळी आपरी सगळी ताकत सू गाव री जीवणधारा मे प्राण फूकण री चेष्टा करती निजर आवे है। जिण माटी में मीगणी भी है, जमी सू रळियोड़ा कांटा भी, है धोरा रो सपाट फैलाव भी है पण इण रे सागे सागे उणां में बीजां ने फळावण रो उपजाऊपणो भी है। इणां रे कथावा रो जीवण मिनख रे व्यक्तिपणां री पिछाणा रो प्रयास है, जिणने आपरी चेतना री सगळी आस्थावां सू ओ रचनाकार सामी लायो है। जाणे धरती एक चोखी तरऊं फैलियोड़ी एक रचनापट है जिण माथै अन्नाराम आपरी कलम री कोरणी सूं चोखा-मूडा, ओपता-अणओपता, पूठरा-तोटा सगळो तरे रा मिनखा ने जुदे जुदे रंग रूप सूं उकेरिया है। इण कारण इणां री रचनावा ने पढती वेळा पाठक जाणे गांव री जमी मे सांस लेवतो सो अनुभव करै। इणां री धरती चोखी तरै सू ओळखियोड़ी हूंवता हुंवा भी नूवी नूवी है। इणा रा चरित्र सामान्य मिनखा मायला होवतां थका भी आपरी पिछांण राखे है अर कथा सृष्टियां आपरी कमजोरियां रे बावजूद आपरो प्रभाव पैदा करण री ताकत राखे है।

अन्नाराम री रचनावां माय धरती रो साच आपरी सगळी असंगतिया रे सागे मौजूद है। लेखक में एक ऊंडी छटपटाहट है के धरती रो सोवणो रंग आज रा हालात में बदरंग क्यूं हूयग्यो है। इण री सगळी सोभा मिट'र क्यूं फीकी पड़ती जाय रैयी है। लेखक री इण अकुलाहट मे किणी भात रो छद्म या दिखावो कोनी है। न इणां रे मन्तव्यां मांय किणी भी भांत रो नकलीपण है। माटी री पीड़ा

इण री पीड़ा है और रचनावां जाणे लेखक री हीज व्यथा कथा रो फैलाव है। धरती री महकती काया में जहर फैलावणिया धतूरे रा बीज जीसा सांच इणने दीसता रैवे। कलम री रांपी सूं ऐ जहरीला बीजां ने उपाडण में हीज ओ आपरी मेहनत री सार्थकता समझे। तस्वीर रे रंगा ने बदरंग करणवाळी सगळी ताकतां ने चेतना री छटपटांवती ऊर्जा सूं ओ लेखक पूरी तरं सूं नष्ट कर देवणी चावे है। इण अनुभव में पाठकां री सहभागिता ने जगावण खातर, जाणे उणां री आंख्यां में ऊभी आंगळी घाल'र उणां ने समाज री सगळी विसंगतियां रे रूबरू खडो कर देवणी चावे। इण चेष्टावां सूं अन्नाराम सुदामा जाणे सिरजण री नूवी चाल रो सूत्रपात करतो निजर आवे है।

देशप्रेम री भावना—धरती री आस्था रो भाव निराधार कोनी है। उण रा दोवड़ा-तेवड़ा आयाम इणा री रचनावां मे फैलियोड़ा है। मानवीयता अर देशप्रेम री भावना भी कथावां रो अंग हूयने बद आंख्यां खोलती नजर आवे है। अन्नाराम रो मानव विश्वास भावनात्मक आवेश री प्रतीति करवावण सूं ज्यादा उणरा वैचारिक आधारां री पुष्टि किया करे। शोषण, उत्पीडन रो घणखरो सुभावणों रूप सूं अर शास्त्रीय रूप रे मोहजाल सूं ऊपर ऊठ ने ऐ आपरा उपन्यासां मांय उणरे घटित रूप रो अंकन कियो है। पूंजी रे आधार माथे सामाजिक वर्गां री अन्दरूणी असमानता ने चित्रण करण खातर उणां रा सामाजिक पहलुआं ने मोकळो सम्मान दियो है। आर्थिक असमानता ने मिनखां रे आचरण सूं जुदा कर देवण री बनिस्पत आचरण रा सत्यां सूं शोषण रे रूप ने सामी लावण री भरसक कोशिशां इणा री रचनावां में निजर आवे। वर्ग रे पिछड़ेपणा रा हेतुआं ने सामी लाईजियो है। अकर्मण्यता, अशिक्षा, मूर्खता ने पिछड़ा वर्गा रे मिनखां में देख'र सुधारवाद रो नूंवो रूप कर्म माथे टेक'र परगट कियो गयो है। उणां में शराब आदि री लतां घणखरी बुराईयां ने निपजावे अर उणा सूं उणां री सामाजिक दशा आपोआप बिगडती जावे। शोषण रे हेतुआं री आ खोज शोषितां री खुद री कमजोरियां रे साथे साथे शोषकां रा ओछापणा ने सामी लावण में निसरती दीसे। गांव रा आज रा शोषक बदळियोड़ी सामाजिक दशा मे नूंवे रूप मे सामी आया है। प्रजातन्त्र में महाजन लोगां रे हाथां मे गांव री सगळी सत्ता भेळी हुगी है। जिणने गांव रा सरकारी अमला आपरे व्यवहार सूं असानवोध जाभो पहरावण रो काम किया करे। शोषकां मे पूंजी माथे सगळे भाव सूं कब्जो कर लेवण वाळा धन्नासेठां रो दोवड़ोपण, उणा री मीठी कथनी अर खोटी करणी आपरी सगळी सूगली चतुराई रे साथे वरणित कर ने लेखक उणा रे प्रति शोषितां रे उमडते विद्रोह ने परकट कियो है। सेठां रो धार्मिक ढोंग, सेवा रो नाटक अर हर दशा में लाभकारी बातां री सिरजण री चेष्टावां पूरे जोश सूं कथानकां मे वर्णित हुई है। अन्नाराम री धरती री आस्था रो मारग दिशा उत्पीड़ण रा ऐ दोनऊ पखां ने

करण में मोकळी संलग्नता लियोड़ी है। ओ इण दोषां रे परिष्कार रे वास्ते व्याकुल होय रह्यो है। अर आपरी समूची चेतना मे इणने मांडण में एकण ठोड भेळी कर राखी है। धरती री वास्तविक महक री आ खोज इण लेखक रा मानव विश्वासां ने साकार करण में सफल रैयी है।

देश प्रेम री भावना भी अेणां कथानकां रो एक और बोलतो स्वर है। गांव ने नरक बणावण मे जिका तत्व सक्रिय भूमिका निभाय रैया है वैंणी लम्बी चवडी रूपरेखा इणां रा उपन्यासां में सामी आई है। सत्ता री राजनीति एकण कानी प्रशासनिक गतिविधियां ने नियन्त्रित करती निजर आवे तो दूजी कानी शोषकां री अणभणियोड़ी अशोध चेष्टावां उणा रे खुद रे पगां में ही बेड़ियां ने और काठी करती जावै। अन्नाराम मिनख अर सत्ता रे बिचाळे पड़ण वाळी सगळी ऋणात्मक ताकतां सूं टकरावण रो उछाह पाठका में भरणी चावे है। इण अन्तराल ने इणां रा उपन्यासा रा कथानक पूरी ईमानदारी सूं सामी लावण में सफल रेह्या है। जातिवाद, बढती जनसख्या, नारियां री जड़ भावनावां, निठरलोपण, सैंगां ने ऐ चवड़े लावण री कोशिश की है। समाज सापेक्ष राजनीति रो महाजनां रे हाथां मे खेलण रे रूप मे बिरम्ह खाड मे पतन, राजनीति रो सुधारवाद रो ढोग, धर्म रा आधारा री बुराईयां, प्रशासन रा वाहक सरपच, पटवारी, ग्रामसेवक, पुलिस रो आतंकवादी रूप अर विकास योजनावां ने स्वार्थ सिद्धी रे रूप मे इस्तेमाल करण री सुगली चेष्टावां रचनाकार रे माचे देश प्रेम री भावना ने परकट करे है। लेखक रे वास्ते आपरी इण भावनावां नें दरसावणो सोरो कोनी है जिके सू ऐ उपन्यासा रे कथानकां री कीमत मापे भी आपरी राष्ट्रीय चेतना ने अलग सूं भी जागा-जागा परकट कर दीनी है। कथा ने छेड़े मेल'र उपदेशक रे रूप में लेखक रो ओ औतार पाठका नें भलां ही जागां-जागा खटकतो व्हैला पर अन्नाराम रे वास्ते आपरा ई माथ नें अर आपरी अणमाप राष्ट्रीय भावना ने दबावणो सोरो कोनी है।

लोक चेतना— *राष्ट्रीयता री आ भावना आपरे व्यापक रूप मे सगळे देश सू* जुड़ियोड़ी है तो सूक्ष्म रूप मे लोक चेतना नें कथा रो विषय बणावण में जुड़ियोड़ी निजर आवे। पण अन्नाराम री लोकचेतना कोरा कोरा लोकतत्वां ने परिभाषित करण री तलद्दट सी योजना भर कोनी है। लोकतत्वा ने पूज्य भाव सूं सामी लावने लोकां भलां ही ऊभो जस लूट लियो हुवै पण इण सू लोक जीवण रा भोगणियां रो की लाभ को हुय सकियो है। गीरां सू, लोकगीतां सू, अठेरा परब त्यौहारां सूं ओ रचनाकार प्रेरणा लेवतो रैयो है। उणां ने मैंहदी रा मांडणा ज्यू मांडतो रैयो है। पण ऐड़ा जादातर रचनाकारां में लोक सूं जुडावां रा आन्तरिक सूत्रा रो अभाव ही दीसिया करे। 'अहोरूपं' वाळा अंदाज मे राजस्थान री लोक संस्कृति री अनूठी महिमा ने या

वीर सपूता नै निपजावणवाळी जलमभोम रै रूप में आदर्शवादी निजरां सूं माड नै सामी लावण री भावुकतापूर्ण मूर्खता अठै रा रचनाकार हमेसा सूं करता रैया है। पण अन्नाराम रे वास्ते लोक संस्कृति रो सांच आज रा उलझियोड़ा जीवण री साची बानगी देवण रो ठोस आधार कोनी बण सके। लोकजीवण कोई शाश्वत अवधारणा कोनी है। युग रे बदलाव रे सागे-सागे वा भी आपरा रूप बदलती रैवे। आज रे गांव रो पीड़ित समाज मांडणां रो सौंदर्य कोनी व्है सके इण खातर भुलायो कोनी जाय सके। ओ रचनाकार न तो लोकजीवण रा गौरव नै ही अन्तिम मानै न परम्परा नै बखावण री भाटवृत्ति ही राखै। सुदामाजी तो आज रा जुगसत्यां नै सीधी-सादी शैली में वरणित करण री कोसिस की है। धोरां री धरती रो अेड़ो अकन राजस्थानी गद्य री नूवी परम्परावां री सूचना देवे। जुगसत्य नै गांव री जमीं सूं हीज पकड़'र खींच ले आवण में इण लेखक री भूमिका सोरैसाज कोनी भूली जावे।

अन्नाराम रा उपन्यास आज रे गांव रा दरपण है। दरपण ज्यूं हीज इण लेखक रो ग्रामीण बिम्ब सूं रागात्मक जुड़ाव उजागर हुयो है। उणां नै हीज निर्विकार भाव सूं प्रतिबिम्बित करण में ओ आपरी सफलता समझै। अधिकारी भाव सूं गांव रा दोष, लोगां री कमजोरयां, धरम रा पाखण्ड, महाजनां री कमजोरयां, जातीय भावना, सस्कारहीणता सब री सब इण रचनावां में उतरती आवगी है।

गांधी युग री आदर्श भावना—अन्नाराम कोरो क्रूर यथार्थ रो चितेरो भर लेखक हीज कोनी है। इण मे आदर्शगत भावना भी कूट कूट नै भरियोड़ी है। उण दृष्टि सूं इण री चेतना जूनी पीढी रा मूल्यां नै अन्तिम साच मानती निजर आवे है। समस्यावां री विनाशकारी विकरालतावां सूं भी जादा ओ लेखक आदर्शां सारू मोकळो झुकाव राखै। नैतिक मूल्य इण रे विचारां री खाद है तो पुराणां आदर्श वो थाळो है जिण में ओ आपरी कथा नै बीजतो दीसे है। समस्यावां सूं लेखक रो ओ ट्रीटमेंट कथा री दिसावां नै जबर्दस्ती आदर्श कानी घड़ी घड़ी मोड़तो रैवे। इण सूं कथानकां री विश्वसनीयता की कम हुय जावे। पाठकां माथे सुधारवाद रो ओ मोटो प्रयास घणखरो उलटो असर ही डाले। जिण जटिल सामाजिकता नै पकड़ण री लेखक कोशिश की है उण नवज में जूना मूल्य बेमेळ है। पण लेखक रो आदर्श-वादी मन इण रे उपरान्त भी बासी मूल्यां नै थोपण में कमी कोनी राखी है। कठै, कठै ही तो आपरा ऐडा उच्छाह री झौंक में लेखक उपदेश देवण लाग जावे। गांधी वादी युग रा आदर्श नै आज रे जुगसत्य माथे यूं थोपण रो भाव नूवी चादर माथे जूना पैबन्द ज्यूं अणओपता दीसे है।

नूंवी लड़ाई री खातर जूना हथियार—राजस्थानी गद्य नै नूवा अनुभवां सूं सस्कारित करण वाळो ओ रचनाकार कथ्य रे धरातल माथै जित्तो खरो है शिल्प रे

धरातल माथे बुरी तरऊ पिछड़ियोड़ो है। बात री महिमा उण रा सोच रा स्तर माथे जित्ती निर्भर किया करे उणरे *प्रस्तुतीकरण माथे उण सूं भी जादा निर्भर* करे है। नूवी लड़ाई रे वास्ते पुराणा हथियार काम कोनी देवे उण वास्ते तो नया हथियार ही घड़णा पड़े। आ बात अन्नाराम रे लेखन री दुर्बलता री सूचना देवे क्यूं के इण रा ओजार एकदम भोतरा हुयोड़ा है। जीवन्त अनुभवां नै पुराणी शैली में ठूसण री मजबूरी रचना रा प्रभाव ने कमजोर कर देवे। उपन्यासां रो रचाव मोकळी कमजोरियां लियोड़ो है। कथा रो उठाव साधारण है। गति पांगळी अर अन्त आदर्शां सूं रूंधियोड़ो है। अति नाटकीयता कथा री निरन्तरता तोड़े तो रचनाबन्ध बिलकुल लुलमुल है। कथा माथे लेखक री पकड़ पूरी रचना में कठै ही कोनी दीसे। वो तो जाणे घटित सत्य रो पिछलग्गू बणियोड़ो लिखतो जावे। कथानक ने समाज रो दर्पण बणाय ने कथां में स्थूलता सूं खड़ो कर दियो गयो है। इण दर्पण में वे वातां भी पाठकां ने साफ साफ दीसे है जिण सूं कहाणी माथे ऋणात्मक असर पड़े। दर्पण रे धोप सूं बिम्ब कित्तो ही साफ क्यूं कोनी हुवो प्रतिबिम्ब साफ कोनी भलकिया करै। अन्नाराम री रचनावां रा कथानक कलई उतरयोड़ा काच ज्यूं कथ्य ने साफ दीसण जोगा कोनी बणाय सकिया है। कथा में वे बातां भी है जिणरी कोई जरूरत कोनी है। कथा रो डोरो भी इत्तो पतळो है कि ठोड़ ठोड़ टूट जावे। *कथा ने आपरे आदर्शां रे धक्का सूं लेखक आगे धकियावतो जावे। बात ने है ज्यूं रे ज्यूं कह देवण सूं पाठकां* ने ऐड़ो लागे जाणे वे कथा रो पारायण कोनी करै बल्कि लेखक रा घटित सत्यां रा संस्मरणां ने पढ रैया है। राजस्थानी वातां री परम्परित शैली री छाया में कथा ने आगे बढ़ावतां जावण सूं लेखक रा पाका अनुभव भी काचा पड़ग्या है। अर आ लागे जाणे लेखक रो रचना में खुद रो कोई सरोकार कोनी है। वो तो बस जिको कीं भी आपरै गांव में देख्यो है अणपचियोड़ा अन्न ज्यूं उणनेपाछो उगळ दियो है। कथा में . ऐड़ी वातां भी है जिकी लेखक रे अविवेक ने परकट करै। जुग रो सत्य भासमान रैवे तो रचना में आपरो प्रभाव राखे पण वो ही जद पारदर्शी ज्यूं ज्यों रो त्यों सामी आ जावै तद उणसूं पाठक ऊब जावे। अन्नाराम सुदामा रे उपन्यासां रा पाठक इण ऊब सूं उबर कोनी सके। उणा ने या तो अर्द्ध आधुनिक चेतना रा पाठक बणणो पड़े (*जिण रे वास्ते ऐड़ा प्रसंग रावडिये रा सब्का ज्यूं स्वादिष्ट हुय सके*)। या पछै ऊब ने ठेठ तईं ढोवण री मजबूरी स्वीकारणी पड़े। वरना अबार तईं तो अे रचनावां कस्बाई मानसिकता वाळा पाठकां ने तो भले ही प्रभावित कर ले प्रबुद्ध पाठकां ने घणीसीक सुभा कोनी सके।

रचना संसार— *अन्नाराम री रचनावां एक ही सोच रो क्रमशः विकास* कोनी है। इणां रो कथा *साहित्य विचारां री प्रौढ़ता सागे सागे मोकळा जिम्मेदार* हूंवतो गयो है। कलम री धार ज्यूं ज्यूं संवरती गई है इणां री रचनावां उत्ती हीज

गम्भीर समस्यावां सूं जूझती गई है। कथा री सूदमता ने पकड़ण में सचेष्ट हूयती रैह्यी है आ कथा रो वैचारिक आधार और भी गहरो हूवतो गयो है। 'मंकती धरती मुळकती काया' सूं लेयर 'मंवे रा रूंख' तई फैलियोड़ी अणी कथायात्रा एक व्यक्ति री अनुभव यात्रा रो दस्तावेज है। इण में ऊजळी धरती रा सत्य पिरोजता दीसे है, जीवण अधिकाधिक विविधतावाळी ने विचार अधिकाधिक प्रौढ़ हूयता निजर आवे। जाणे उणां री रचनायात्रा जमी सू आपरै जुड़ाव रा पख करण री खातिर उण में और ऊंडी ही ऊंडी धंसती गई है। लेखक री भाषा री पकड़ अर मुहावरा आदि रो ओपतो उपयोग इणां री बात ने पाठकां रे हिवड़े मांय थिरपण री क्षमता राखै है। जमी री ऐड़ो विद्धांण अर गांव रे जीवण रा ऐड़ा चितराम दूजी ठोड़ मिलणा दुरलभ है।

अन्नाराम री उपन्यास यात्रा रो पैलड़ो पड़ाव 'मंकती धरती : मुळकती काया' रे रूप में सामी आयो है। इण सूं हीज लेखक आपरा मन्तव्यां ने साफ करण में सफल रह्यो है। साहित्यिक निजरां सूं की पोची हुयता थकां भी रचना कथ्य ने उजागर करण री दृष्टि सू चोखी तरऊं सुफल दीसे है। इण में धोरां रो विस्तार आपरी सगळी सुन्दरता रे साथे ऊभो है। रेतीला टीबां मांय जीवण री ओपती छवियां आजादी रे पेलड़ा जुगसत्य सूं सरू हुयने ठेठ चीन रा आक्रमण तई री घटनावां ने समेटियोड़ी दीसे है। 'कियां काई म्हारो सिर, आपां ने न डर चीण रो अर न बापड़े पाकिस्तान रो ही - अर भळे ज्यूं जिसो ही नहीं। आपां नै तो जद कद सगळा सू मोटो डर है एक आपां सूं ही' इण मान्यता ने पोसण सारू रचना री कथा गूंथीजियोड़ी है। नानी री विथावां री आ कथा एक लुगाई री जीवण भर री नी होय'र सगळे युग रो दरसण भी है। सामती छाया मे पळणआळा गांवां में सामाजिकता नै तोड़ण आळा जिका तत्व निपजिया उणां मांय व्यक्ति रे आचरण ने झूठा मूल्यां रा दिखावा अर घरेलू षड़यन्त्रां सूं तोलणो सैंगाऊ बड़ो काम है। नणद रा षड़यन्त्रां री शिकार सुगनी (नानी) आपरा बींद अर टाबरां सूं बिछुड़ नै धोरां रा समुन्दर में जाणे उछाल दी गई है। अर बा इण समन्दर सूं अनुभवां रा जिका काचा पाका मोती बटोर्‌या है उणां री हीज तरतीबवार कहाणी इण उपन्यास में है। समाज रा साचा सेवक तो घर छोडण ने बाध्य व्हेवता रैया है तो डाका डाळणियो, औरतां री इज्जत सूं खेलणियां लोग उण टेम सूं हीज पनपता रैया है। धरती री ओपती मैंक नैं सागीड़े भाव सूं थिरपण री लेखक री कोशिशां मिनख रे आचरण रा बेमिनखपणां रे मांय सूं चवड़े आई है। सुधारवादी-दृष्टिकोण रे कारण उपन्यास रो अन्त नानी री कथा ने समेटतो समेटतो उपदेशक री आदर्श भावना धारण कर लेवे।

'मैवे रा रूख' में लेखक री मुद्रा थोड़ी आक्रामक है। गाव ने सुरग बणावणरो लेखक जिका सुपना लेवतो उणां नैं सेठ-साहूकार भूखा गीध ज्यूं जीम रैह्या है। अर फँफीजियोड़ा गाव री हालत विखरियोड़ी आतडिया अर हाडकां री ठठरी भर हुय'र रैयग्यी है। गरीब तबको धूर्त वाणिये रे फौलादी शिकंजा मे फंसियोड़ो परायी सांस लेय रैह्यो है। गरीबां रो जीवण जाणे उणां रो खुद रो जीवण कोनी रैह्या ने परायो धन हुवतो जाय रैह्यो। फेर भी ऐ लोग बळियोड़ी जेवड़ी ज्यूं परम्परावां रा बट कोनी छोड़ रैह्या है। वे तो जाति या वर्ण रो दम्भ पाळ रैह्या है अर यूं आपरो खुदरो आपो बिसराय ने सगळा आर्थिक, राजनीतिक दबावां सूं बेखबर हुय रैह्या है। 'मैवे रा रूंख' रो लेखक इण दसा ने देख'र जाणे आपरो धीरज खोय रैह्यो है। आपरी छटपटाहट ने किणी भी भांत सू दबाय कोनी सकियो है। उण री अडीक जाणे खूटीगी है अर लेखक रो अधीर मन आपरे मांयली पीडा ने साकार करण खातर पोथी रे रूप में आपरी उण अकुलाहट ने लिखण लागग्यो है। इण पोथी मांय अन्नाराम सुदामा री अभिलापावां अर उणां री दिसावां साकार हुई है। एकण कानी वो गांव री विगलित दसा रो विवरण देखण री खातिर एक एक नजारा रो, छोटी सूं छोटी घटना रो स्थिर थामीजियोड़ो रूप बडे धीरज मूं उकेरे है तो दूजी कानी पाठकां री चेतना मे समाज रा बैरी मैवे रा रूंखा ने काठा झाल' र फंफेडण री प्रेरणा भरतो जावे।

सिनाथ रे रूप में जाणे गांव रो एक सचेतन पीरेदार सगळी कमजोरां रे माय ऊंडो झाकतो जावे। अर उणा री जड़रूप गांव री खुशहाळी माथे कुण्डली मारियोड़े नागां ज्यू बैठा सेठ धनजी अर हरजीराम जिसा लोकां री घिनौनी करतूतां ने उघाड़तो जावे। शोषण रा नूंवा नूंवा रूप, बेगार, मिठबोलोपण, एहसानां ने पराया माथे थोपण री कला, स्वास्थ्य साधण री सगळी पैंतरेबाजिया, धरम रो आडम्बर, भलमनसाहत री ओछी बातां अर मीठी छुरी जिसा अमानवीय क्रिया-व्यौपार एक रे पछे एक पाठकां रे सामी आवती जावे। आंख्यां मंदियोड़ा मूरख लोग इण चतुराई रा शिकार हुय'र रोजीना लटीजता जावे। शिकारी अमलो, पुलिस, ग्राम सेवक, सरपंच भी इणी सेठां रे नाख्योडा हाडका ने चूंसता कुत्तां ज्यू ऐणे सामी पूंछ हिलावता रैवे अर सीधा सादा गाव आळा ने मूसता रैवे। गांव रो ओ सजीव चितराम आपरी सांची पिछाण सूं पाठकां ने आवेशां सूं भरतो रैवे। अन्नाराम री उपन्यास कला रो सुधारवादी रूप भी 'मैवे रा रूंख' में दीसे है। सगळा रे हित रो आदर्शवादी समाधान उपन्यास ने जूनी जेवड़ी सूं कथा ने बांधियोड़ो दीसे है।

अन्नाराम सुदामा री ताजी रचना 'केसर' एक बार फेरूं गांव री ही कथा है। धरती री आस्था रो रूप इण मे भी उणी तरा सूं निजर आवे है। 'केसर' उपन्यास मे पैलड़ीबार एक केन्द्रीय चरित्र माथे कथा री रचना हुई है। ऐणा पैलड़ा

उपन्यास व्यक्ति रे ब्याज सू समष्टि री छवि साकार करता दीसे। पण इण में व्यक्ति ने केन्द्र में राख'र उण रे सांच ने जियावण री कोसिस दीसे है। बिना बाप री केसर काके रे घर रो सगळो कारज सारूयां पछै भी उणां री पिछाण नीं कराय सकी है। मां री मौत सूं जूझण सारू'र वा भूत प्रेतां री भी परवा कोनी करै। पण आपरी कोसिसां में सुफल कोनी हुय पावे। 'केसर' भी इणां री पैंलड़ी रचनावां ज्यूं हीज अन्धविश्वासां नें चुनोती देवे है। इण रूप में आ रचना भी लेखक री उपन्यास शिल्प परम्परा रो हीज आगळो रूप कैयी जाय सके है।

अन्नाराम रो कहानीकार रूप एणां उपन्यासकार रूप रो पूरक है। कहाण्यां री विषय भी गाव ही है। उणा रो ट्रीटमेंट भी सुधारवाद सूं रळियोडो पगियोड़ो है। अर यथार्थ रे मांय सूं हीज आदर्श ने ढूंढण मे लागियोड़ो है। इणा मे उपन्यास आळा हीज विषय उठाइजिया गया है। चरित्र अर निजर रो विस्तार भी बेड़ो हीज है। 'इंकीजता मानवी' भी पैंलडी रचना 'मेंवे रा रूंख' ज्यूं हीज गांव रे सामाजिक जीवण रा अंग रूप मे अंधविश्वासा अर आडम्बरा माथे आक्रमण कर ने सचेत करण री चेष्टा करतो दीसे है। ब्याज रो धन्धो करण आळां रा सिकारा री कथावा इण रे मांय भी चवड़े आवती दीसे है।

इण रूप में अन्नाराम सुदामा रो रचनाकार दरअसल धरती री आस्था ने सामी लावण में पूरी ताकत सूं जुटियोड़ो है। गांव रो चितराम खेंचता थकां भी धोरां री धरती रो यथार्थ इण री रचनावां में साकार हुवतो रैवे। इण लेखक री गाव री आस्था, शोषण रे सामी ऊभण री पुरजोर चेष्टावां, मिनखपणे रो विश्वास अर जमी रा यथार्थ रा बोलता चितराम राजस्थानी गद्य री सामी आवती सम्भावनावां ने उजागर करै है। राजस्थानी उपन्यास ने खडो करण मे इण लेखक रो योगदान हरमेस याद कियो जांवतो रैवेला।



(जागतीजोत मे प्रकाशित)

मीरां रे साहित्य सूं जुड़ियोड़ा कीं अणसुलझियोड़ा सवाल

मीरां रे साहित्य सूं जुड़ियोड़ा अणसुलझियोड़ा सवाला रे खोज री कोसिश आपोआप मोकळो महत्व राखे है। क्यूं के मीरा रा साहित्य माथे मोकळो काम हूयां पाछै भी उणरो जीवण अर साहित्य पूरी तरासूं निर्विवाद कोनी हुय सकियो है। मीरा रे साहित्य रा अध्येता कठे-कठे तो फालतू बातां मांय आप रो श्रम जाया कियो है (जियां के उणरे साहित्य री परख करण री जागां उण रे नाम रे उद्‌गम री खोज रे कोशिशां मांय हीज सगळी ताकत खरच कर दीनी है)। इण वास्ते मीरां रे साहित्य रा समीक्षक उण रे साहित्य रा सौंदर्य रा हेतुवां ने पूरी आस्था अर भरोसे सूं उजागर कोनी कर पाया है। जद के दूजे कानी आम जनता उण रा पदां ने पूरी आस्था सूं मान'र उण मांय रुचि लेवती रंयी है। मीरां रा साहित्यिक महत्व अर जन भावना री स्वाभाविक रुचि रे बिचाळे रो ओ आंतरोपण इण विचार ने सामी ने आवे के आखिरकार विद्वानां अर सहज विश्वासां आळी जनता रे सोच रे आंतरेपण रो कारण कई है? इण सवाल रा जवाब सारू मीरां रे साहित्य रा अणसुळझियोड़ा सवाला माथे विचार करणों जरूरी है।

मीरां रे पदां री क्रम व्यवस्था रो सवाल—मीरा रा पदां ने दीयोड़ी आज री क्रम व्यवस्था ठीक कोनी कंयी जाय सके। उणां सूं भी मोकळा मतभेद पैदा हुया है। मीरा रा पदां माय उणरो खुद रो जीवन अनेक रूपां मे संदर्भित हूयो है। इण सूं इण बात ने मोकळो बळ मिळे है के मीरा आपरो साहित्य सर्जन करती व्हेळा खुद रे जीवन प्रसगा सूं सीधी प्रेरणा लीवी ही। बीद रे गुजर्‌यां पाछे राणा सूं ताणातणी, जहर पीवण री घटना, बिन्द्राबन जात्रा प्रसंग या द्वारिकाजी सूं जुड़ियोड़ा पद तो साफ-साफ निजर आवे है। पण सयोग दशावां रा या उण रे जीवण री दूजी बातां सूं जुड़ियोड़ा पद उण रे पदां ने दीयोड़ी आज री क्रम-व्यवस्था माय साफ साफ निजर कोनी आवे। जिया के योगी ने सम्बोधन देवण आळा पदा ने जुदी-जुदी ठोड भेळा करीजियो गयो है। इण सूं आ बात ओरूं उलझगी है।

भगती रा संस्कार तो मीरां मे उण रे बचपन माय हीज पड़ चूका हा पण उण रा साहित्य सिरजण रा सस्कार कदे पड़्या हा आ बात अजे तई साफ कोनी हूय

सकी है। जिया महाप्रभुवल्लभाचार्य सूं दीक्षा लियां पछे सूरदास में अचानक भावां रो बदलाव निजर आवे है उणी तरासूं कईं मीरां मांय भी विधवापण री मार सूं अचानक काव्यत्व फूटियो हो के कबीर रे जीया जुदा-जुदा संतां रे सम्पर्क सूं अचाणचक ही उभरीजियोड़ा भाव बिम्बां ने उभारण री चेष्टा दीसे है। क्यूंके इणां माय सूं अगर लारली बात साची है तो इण ने लेय'र मीरां री जिनगाणी सूं जुडियोड़ी मोकळी वातां सू नूंवा नूंवा साचां ने ढूढिया जाय सके है। इणी भात उण रे काव्य सूं उण री जिनगाणी रा मोकळा अणदीठता प्रसगां ने भी सामी लायो जा सके है। इण वास्ते मीरा रा पदां ने उण जीवन प्रसगा सू प्रत्यक्ष जोड़'र उणा री पुनर्व्यवस्था करणो जरूरी है।

मीरां री ईश्वर परिकल्पना : मूल उत्सां री खोज—मीरां रा आराध्य कृण हा इण बात में सन्देह करणो एक तरासूं पूनम री रात मांय चांद ने ढूंढण जीसो मूरखता रो काम है। 'मेरे तो गिरधर गोपाल' रे घोषणा-पत्र रे साथे उण री रचनावां जिण रूप मांय सामी आई है उण माथे सन्देह करण री कोई गुंजाइस कोनी है। क्यूं के कृष्ण रे वास्ते मीरा रे मन में अनुराग रो भाव इत्तो गहरो हो के उण कारण दोनां मांय अन्तर करणो दोरो व्है जावे। मीरां जाणे कृष्ण-कृष्ण रटता कृष्ण रूप हीज व्हैगी। मीरा री ऐड़ी भगति भावनां पाठकां ने भी उणी तरा सूं सस्कारित करती रेंवे है। इण वास्ते मीरां री ईश्वर विषयक भावना माथे किणी भी भांत रे सन्देह री गुंजाइस कोनी है।

फेर भी म्हारें मुजब मीरा रे आराध्य रो सवाल अजे सईं अणसुलझियोड़ो है। सवाल उण री दिशा ने लेयने कोनी है। न सवाल उण रे लक्ष्य ने लेयने है। सवाल तो उण रे साधन ने लेय'र है। भक्ति सू सम्बन्धित मीरा रा जुदी जुदी भावना रा पद इण विवाद ने सामी लावे है के मीरां रा भक्ति सम्बन्धि पदा ने उण टेम रा प्रचलित कृष्ण भक्ति रा जुदा-जुदा सम्प्रदायां मांय सूं आखिर किण सम्प्रदाय सूं जोड़'र देखणो चाइजे।

मीरां रे काल मे कृष्ण भक्ति रा जित्ता भी सम्प्रदाय फैलियोड़ा हा उणां री दार्शनिक मान्यतावा इतरी न्यारी न्यारी ही के लक्ष्य एक होवतां थका भी उणा मांय मोकळो वैभिन्य हो। मीरां रे जीवन ने उजागर करण आळी सामग्री सूं इण बात रो इशारो मिळे है के उण ने कृष्ण भक्ति रा एकाधिक सम्प्रदायां रे जुदा-जुदा व्यक्तित्वा सूं मिलण रो मोको मिलियो हो। आ वात भी आसानी सूं थिरपोज सके है के मीरां रे आपरे टेम हीज उण रो नांव चारऊफेर फैल चूको हो। इण वास्ते कृष्ण भक्ति रा न्यारा न्यारा सम्प्रदायां मांय इण वात री होड़ जरूर मची व्हैला के वे किणी तरासूं

मीरां ने निज रै सम्प्रदाय मांयने खींच लावै। इतिहास सूं भी इण बात री गवाही मिळै है के मीरा रो वल्लभ सम्प्रदाय रा पुष्टिसम्प्रदाय, चैतन्य रा गौड़ीय सम्प्रदाय अर हितहरिवंश रा राधावल्लभ-सम्प्रदाय रा अनुयायियां सूं सम्पर्क हो।

वल्लभ सम्प्रदाय अर मीरां—वल्लभ सम्प्रदाय रा व्यवस्थापक महाप्रभु रा पुत्र विट्ठलाचार्य री छै-छै द्वारका यात्रावा सायत उणा रै सम्प्रदाय नै बढ़ावण री कोशिशां रै वास्तै हीज करीजी ही। आपरी इण यात्रावां रै मांय वे खुद कदे ही मीरा सूं भेंट कीनी ही के कोनी कीनी इण री जाणकारी कोनी है। पण आ बात बिलकुल पक्की है के मीरां नै लेयनै विट्ठल अर उणां रा सम्प्रदाय रा दूजा लोगां मे एक तरै री फास जरूर ही। इण बात री पुष्टि 'दो सौ बावन वैष्णवां की वार्ता' रा मोकळा प्रसगां सूं अर दूजा प्रमाणां सूं हुवै है।

केह्यो जावै है के कृष्णदास (जिका के पुष्टिमार्ग रा खास आठ कवियां री टोळी अष्टछाप माय सूं एक हा) मेड़ता मांयनै मीरां सूं सप्रयोजन भेंट कीनी ही अर एक तरा सूं उणां मीरां ने अपमानित कर ने पाछा वृन्दावन फिरग्या हा। द्वारिका सूं पाछा फिरती व्हैळा ए मीरां रै गांव गया हा अर उण री भेंट करण री प्रार्थना नै ठुकराय नै ब्रज पधारग्या हा। आ घटना मीरां रै वास्तै वल्लभ सम्प्रदाय री नाराजगी नै प्रकट करै। आ नाराजगी इण वास्तै उपजी ही के उण टेम मीरा आपरी ख्याति रै चरम माथै ही अर वा कृष्ण भक्त होवतां थकां भी वल्लभ सम्प्रदाय रै वास्तै उपेक्षा वरत रेह्यी ही। मीरा रे जीवण री ऐडी हीज दूजी घटनावां भी इण हीज विचार नै थिरपीजै है।

मीरा री एक सखि (जिण नै कोई कोई उण री रिश्तेदार भी बताया करै है) अजबकुंवरी बाई री हार्दिक इच्छा पुष्टिमार्ग में दीक्षा ग्रहण करण री ही। पण इण मुजब मीरा सूं बात करण सूं उण नै प्रोत्साहन कोनी मिळियो। केह्यो जावै है के मीरा रे मना करण रे बावजूद वा आखिरकार पुष्टिमार्ग माय दीक्षा ले लीनी। 'दो सौ बावन वैष्णवो की वार्ता' रै माय आ बात इण भांत मांडियोडी है के मीरां जद विट्ठलाचार्य जी नै आपरी सौगात देय'र पाछी फिरण लागी तो उणां इण री सौगात लेवण सूं इनकार कर दीनो। उणा रो एक चेलो मीरा नै समझायो के गुसाईंजी तो आपरे चेला सूं हीज सौगात लिया करै दूजा सूं कोनी लिया करै। उण टेम अजबकुंवरी बाई मीरा सूं केह्यो के थें केवो तो म्हे इणां री चेली बण जाऊं पण मीरा इण री हामी कोनी भरी। फेर भी इण घटना पछै अजबकुंवरी बाई मीरां री राय नी मान'र विट्ठलजी री चेली बणगी।

आ घटना दीसण में भलाही साधारण सी लागै है पण आ मीरा री मनो-भावनावा नै जरूर दरसावै है। एक तो आ घटना विट्ठल अर मीरा री भेंट री

पुष्टि करै है। दूयजी वल्लभ सम्प्रदाय रे वास्ते मीरां री अरूचि अर सम्प्रदाय रा अधिष्ठाता री मीरा रे वास्ते री ईसका भरी भावना ने भी सूचित करै है। इण रे बावजूद इण सांच सू भी इनकार कोनी कियो जाय सकै है के वल्लभ सम्प्रदाय रे वास्ते मीरां रे मन मांय एक तरे रो आकर्षण थो। दूयजी कनी इण सम्प्रदाय आळा भी उण ने आपरे कनी लुभावण रे वास्ते मोकळा प्रयास कर रेह्या हा। इण कारण इण सम्प्रदाय रो मीरां माथे सीधो के गुपत-प्रभाव सू इन्कार कोनी कियो जाय सकै है।

वल्लभ री पुष्टि मार्ग ईश्वर रे अनुग्रह रो आधार लेय ने जिण विशिष्टाद्वैतिक दार्शनिक सिद्धान्त रो निरूपण करै है उण ने व्यावहारिकता देअणआळा अष्टछाप रा कवि आपरा साहित्य मायने दाम्पत्य संबंध री भक्ति माथे हीज मोकळो ध्यान दिरायो है। उणां श्रीमद्भागवत री कृष्ण कथा सूं एक खास मौलिक उद्‌भावना करी है। कृष्ण री परम्परित कथा रे मायने भ्रमरगीत रा प्रसग ने इणां व्यवस्थित कथारूप वणाय दीनो। सूरदास जिकी नूवी परम्परा ने भ्रमरगीत रे रूप में सरू कीनी उण माथे अष्टछाप रा सेंगा सूं छोटोड़ा कवि नंददास तक आपरे ढग सू कलम चलाई। इणां कवियां रा भ्रमरगीत साहित्यिक दृष्टि सूं तो मोकळी महिमा राखै ही है इण रे सागे सागे उणा री आध्यात्मिक महिमा भी कम कोनी है। इण सू दो मुतलबां री सिद्धि हुवै है। पैलो मुतलब भक्ति रा अधिकारी ने नियत करण माय दीसे है। गोप्या ने प्रेम भावना री परम अधिष्ठात्री रे रूप मांय थापित कर नें ओ प्रसग ईश्वर विषयक रति री पराकाष्ठा ने दरसाया करै। समाज री सगली वर्जनावां – निषेधा - अवरोधां ने छेडे मेल'र गोप्या कृष्ण रे सागे जिका प्रेम रो निभाव करै वो भक्ति रो आदर्श वण जावे अर दूयजा भगता रे वास्तै अनुकरणीय मारग प्रशस्त करतो दीसे है।

भ्रमरगीत सू सकारथ हुवण आळी दूजी प्रयोजण सिद्धियां भी कम महिमा कोनी राखै है। इण वहाना सूं सूर आदि भगत ग्रान माथे भगती री, योग माथे भोग री अर निर्गुण माथे सगुण री जीत थापित करण मांय समरथ रैया है। भ्रमरगीत रो कथारूप यू कोरी मोरी साहित्यिक सुन्दरता ही कोनी राखै है मोकळी आध्यात्मिक अर दार्शनिक सिद्धियां भी अंगीकार करण मे समरथ दीसे है।

मीरां रे आराध्य रो निर्धारण करण रे वास्ते मैं इण वातां कनी आपरी ध्यान खींचणी चाहूं जिण रे वास्ते ऊपरला सगला विषयान्तरां ने इण परचा मांय समेटियो गयो है।

इतिहास भला ही इण वात ने पूरी तरा सूं प्रमाणित कोनी करतो व्हैला पण मीरां रा विचारां मांय कठे ही इण सम्प्रदाय रो असर जरूर हो इण वात ने नकारणो

आसान कोनी है। अर एक वारू आपां जद इण तथ्य ने मान लेवां तो मीरां रा पदां री दिशा पछे वेडी कोनी रंय पावे जेड़ी की आज सई स्वीकारती रंयी है। अठे इण वात माथे ध्यान देवणो जरूरी है कि मीरां रे पदां मायने भ्रमरगीत री साफ साफ चर्चा तो कोनी है पण उणां में भ्रमरगीत री मोटी रूपरेखा अवसकर वणती दीसे है। 'हो जी हरि कित गये नेह लगाय' सूं सरुहोय'र भ्रमरगीत रा प्रसंग स्पष्ट रूप में इणां रा पदां मांयने निजर आवता जावे।

(1) कृष्ण रो मथुरा जावणो दुःख रो कारण वणे—

हो गए स्याम दुइज के चंदा।
मधुवन जाय भये मधुबनिया हम पर डारे प्रेम को फंदा।

(2) कुब्जा सूं परपूठ ईर्ष्या—

'स्याम म्हामूं ऐंडो डोले हो, औरन सूं खेले धमाल'

(3) अक्रूर रे वास्ते विरोध रो भाव—

'कठिन क्रूर अक्रूर आयो साजि रथ रथ कह नई'

(4) ऊधो सूं वतलावण—

'अपणे करम को वो छे दोस काइं दीजे रे ऊधो'

(5) राधा रे वास्ते ऊधो द्वारा सनेस लावणो—

'कुण बांचे पाती विणा प्रभु कुण वांचे पाती
कागद ले उधोजी आयो कहां रह्या साथी।'

(6) ऊधो रे ब्याज सू आत्म निवेदन—

'ऊधो मैं वैरागण हरि की'

भ्रमरगीत सूं वल्लभ सम्प्रदाय रा भक्त पेला परकट कीनोडी जिकी सिद्धियां हासल कीनी है उणां माय सू पैयली सिद्धि गोपियां रे प्रेम रे आदर्श री बात है जिकी मीरां रे संदर्भ में फालतू व्है जावे। क्यूं के प्रेम री मतवाली मीरां में जेड़ो भाव गांभीर्य अर राग संलग्नता है उण रे सामी गोपीयां तो कईं कोई भी भक्त कोनी टिक सके। गोपियां तो सायत आपरा जीवण मे कुटुम्ब कबीले री मरजादावां ने नारी रे शील ने चुनौतियां दीनी ही के कोनी दीनी इण री ठा कोनी पण मीरां इण भावां ने आपरो जिनगाणी मांय परतछ कीनो हो इण मे किण भी बात रो सन्देह कोनी व्है सके। इण खातर मीरां रे प्रेम भावना रो ऊंडोपण गोपियां री प्रेम भावना सूं मोकळो ऊडो, मोकळो भरोसेमंद अर मोकळो प्रामाणिक है इण में सन्देह कोनी है।

भ्रमरगीत री दूयजी सिद्धी ने भी मीरां रे पदां सूं जोड़'र देखणो जरूरी है। मीरां रे पदां सूं भ्रमरगीत री जिकी रूपरेखा वणे है वा अधूरी होय'र भी उण कनी उणां रे रुझान ने अवसकर परकट करै। मीरां रा पद इण हिसाब सूं मोकळा सवाल खडा करै। ज्ञान माथे भगति री जीत ने दरसावण री मीरां ने किणी तरै री जरूरत कोनी ही। क्यूं के सरूपोत सूं हीज वा भगति भाव माथे इणी दृढता सूं टिकियोड़ी ही के ज्ञान रे कनी झांकण तक री उण ने कोई जरूरत कोनी ही। पण योग माथे भोग री अर निर्गुण माथे सगुण री जीत दरसावण में मीरां रे सामी मोकळी चुनौतियां या रुकावटां ही।

मीरां अर योगमत—मीरां रा पद कृष्ण भक्ति सूं हीज सांगोपांग जुड़ियोड़ा कोनी है उणा मे योगमत रो भी मोकळो उल्लेख है। जे एकर उण ने योगमत रो प्रभाव न भी माना तो भी जोगी रे वास्ते मीरां रा रुझान ने नकार्‌यो कोनी जाय सके। उण री पदावली रे मांय जोगिया सूं प्रेम ने बताअण आळा जिका पद मिले है उणां ने लेय'र विद्वानां में मोकळो मतभेद है। कोई कोई विद्वानां इण बाबत ओ मतो राखे है के ऐडा पद या तो बाद मे जोड़ीजिया है या फेर इणां रो कोई खास महत्व कोनी है। म्हने इण थिरपणा माथे भरोसो कोनी है। क्यूंके जोगी सूं जुडियोडा पद मीरां पदावली मांयने इत्ता घणा है के उणां ने आसानी सू नकारणो सोरो कोनी है। इण वास्ते जोगी सूं जुडियोड़ा मीरां रा पदा री व्याख्या किण तरा सूं की जावे ई सवाल माथे विचार करनो जरूरी है।

इण पदां ने देख'र एक बात तो आहीज केही जाय सके के मीरां ने सांची में किणी जोगी सूं प्रेम हो। जेडो के इण पदां सूं जाहिर हुवे है—

(1) 'जोगी मत जा मत जा मत जा' वाळा पद रे आखिर मांयने 'जोत में जोत मिला जा' केवणो।

(2) 'जोगिया के प्रीत किया दुःख होई' वाळा पद मे ओ केवणो 'ऐसी सूरत या जग मांही फेरि न देखी सोई'।

(3) 'जोगिया री प्रीतडी है दुखड़ा रो मूल' वाळा पद रे मांय उण रो निरमोही भाव सूं जावण री बात परकट करणो।

(4) कोई कोई पद तो ऐड़ा भी है जिणां में जोगी सूं साफ साफ प्रीति री बात परकट हुई है अर पद रे अन्त में उण ने प्रभु रा दरसण सूं जोडण री बात भी परकट कोनी हुई है—

जोगिया निसदिन जोऊं बाट
पांव न चालै पंथ दुहेलो आड़ा औघट घाट

नगर आई जोगी रम गया रे मो मन प्रीति न पाई
मैं भोली भोलापण कीन्हों राख्यो नहि बिलमाई
जोगियां कूं जोवत वोही दिन बीता अजहूँ आयो नहि
विरह बुझावण अन्तरि आवो तपन लगी तन मांहि
कैं तो जोगी जग में नाहीं, कैर विसारी मोई
कांई करूं कित जाऊं री सजनी नैण गुमायो रोई
आरति तेरी अंतरि मेरे, आवो अपणि जाणि
मीरां व्याकुल विरहिणी रे, तुम बिन तलफत प्राणि ।

कोई कोई विद्वानां जोगी री प्रिय या प्रियतम के रूप में अरथ कीनो है अर पू ऐड़ा पदां में योगी रो अभिप्राय हटाय ने उण ने प्रियतम रो पर्याय मानण रे वास्ते लक्ष्यार्थ प्रदान कीयो है ।

तीजी तरां रा व्याख्याकार जोगी शब्द ने भगवान श्रीकृष्ण रा विशेषण योगीराज सूं जोड़ ने उणां री व्याख्या कीनी है ।

ऐ सगळी दृष्टियां किसी भ्रामक है या इणां मांय सूं किसी दृष्टि सांच है इणा री परख करणी जरूरी है । पण दुर्भाग्य सूं इण सवाला ने मोकळी तवज्जो कोनी दिरीजी है ।

मीरां रा पद अर नाथपन्थ—मीरां रा जोगी विषयक पदां माय कोई कोई ऐडा भी है जिण माय योगियां रे साधना पदां रो प्रभाव भी निजर आवै है । सेली, सिंगी, सथडा आदि शब्दावली रे सागे सागे मोकळा पदा मांयने उणा री साधना पद्धति रो उल्लेख इण बात ने पुष्ट करे है । जियां—

माळा मुदरा मेखळा रे बाला खप्पर लूंगी
जोगिन होई जुग ढूंढसूं रे म्हारा सांवळिया रो साथ

योग साधना रो प्रभाव मीरां माथे औरू कारणा सूं भी प्रमाणित कियो जाय सके है । हजारीप्रसाद द्विवेदी बखयानी सिद्धा ने देश रे बीचरो हिस्से हूँ हट ने गाडहवाल राजावां री टेम सीमावर्ती प्रदेशा मायने फैलण री चरचा कीनी है । नाथपन्थ भी इणीज कारणा सूं देश रा आथूणें सीमाड़े माथे फैल गयो । इण पन्थ री एक पीठ अजे तई जोधपुर में महामन्दिर में स्थित है । म्हूँ कोनी जाणूं के ओ पीठ कितरो जूनो है । पण मारवाड़ मांय नाथां री चेष्टावां मीरा रे पेली सूं देखणों किणी तरं री आपत्ति खड़ी कोनी करे । मीरा रा पदा माथे योग रा प्रभाव ने इण कानी कीयोड़ा शोध रे आधार माथे आसानी सूं खोजियो जाय सके है । इण सूं मोकळा अणसुळझियोडा सवालां रो जवाब मिल सकेला इण में की भी सन्देह कोनी है ।

मीरां अर रैदास—मीरां रा पदां मे निरगुण साथे सगुण रे जीत री बात साफ साफ कोनी मिळे है। उण री जागां इणां रा पदां मांय निरगुण रे वास्ते भी आस्था उणी भाव मूं दीसे है जिण भाव मूं सगुण रे वास्ते सामी आई है। इण री कारण मायत औ होज व्है सके के मीरां माथे पड़ियोड़ो सन्तां-योगियां रो प्रभाव उण ने भ्रमरगीत रे कथारूप में पाणित निर्गुण साथे सगुण री जीत रा वरणन करण मूं परे धकेलतो रैयो है।

मीरां री रैदास मूं जुड़ाव री बात भी इण मूं जुड़ियोड़ी है। मीरां रा पदां रे मांयने सन्त रैदास रा मिलण आळा नाम ने लेय'र भी विद्वानां मोकळा ऐतराज किया है। साफ है के कृष्ण भक्त मीरां रो सन्त मत आळा रैदास मूं समीकरण लोगां ने पसन्द कोनी आयो है। फेर भी ऐड़ा पदां रे कारण इण बात नैं नकारणो भी आसान कोनी है। कृष्ण-भक्ति री बात करता थकां भी मीरां 'सहजसुन्न' अर 'पंचरंग चोला' री बात भी उत्ती ही आसानी मूं कर जावे है—

(अ) 'चाला वा अगम देस, काळ देख्यां डरा
भरा प्रेम रा होज, हंस केल्यां करा।'

(ब) 'बरन करूयां अविनासी म्हारो, काळ ब्याल न खासी'

ऐड़ी ओळियां मीरां माथे सन्तां रा साफ साफ असर ने प्रमाणित किया करे। कृष्ण भक्ति ने चोखी तरह धारण करण वाळी मीरां रो औ केवणो भी विचार करण जोग है 'दरद की मारी बन-बन डोलूं बैद मिल्या नहिं कोई' कृष्ण रो प्रेम कई इत्तो अपर्याप्त हो के उण ने सन्तां रे जियां ही आपरी मनोव्यथा ने इण तरह मूं प्रकट करणो पड्यो। अस्तु, सन्तमत रो औ प्रभाव मीरां मूं जुड़ियोड़ो निरगुण-सगुण समीकरण रो सफल हेतु बण्यो है के उण रे उल्टे भाव ने प्रस्तावित करे है इण कानी भी ध्यान देवणो जरूरी है।

मीरां अर आल्वार सन्त—संतां रे संदर्भ मे मीरां रे साथे उण रे जुड़ाव ने सन्तां रे विकास रे सागे भी जोड़'र देखणो जरूरी है। व्यावहारिक भक्ति रा मूळ आख्याता दक्षिण रा आल्वारां मांयने भी भक्ति री बेड़ी ही उत्कृष्ट भावना दीसे है जेड़ी मीरां रे मांयने है। आल्वार 'शरणागति' या 'प्रपत्ति' री जिण परम रूप री थिरपणां की ही उण ने पाछे रा कवियां रे सामने आदर्श रे रूप मे देख्यो जाय सके है। मीरां रा साहित्य मांयने शरणागति रा सगळा तत्त्व उपस्थित देख्या जाय सके

(1) अनुकूलता रो संकल्प—म्हें तो लियो है गोविन्दो मोल
(2) प्रतिकूलता रो वर्जन—मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोय
(3) गोप्तृत्ववरण—थें तो पलक उघाड़ो दीनानाथ म्हें हाजर ...
की सदी

मीरां रे साहित्य मूं जुड़ियोड़ा कीं ...

(4) इतर बातां रो निषेध—पग घूंघरू बांध मीरां नाची रे
(5) कार्पण्य भावना—मै तो सरण पडी रे रामा, ज्यूं जाणे त्यूं तार

मीरां री आ प्रपन्न भावना उण ने सीधो आल्वारां री परम्परा मूं जोड़े है। उण रो प्रेम भाव, मिलण री आतुरता, वेदना भाव, अकुलाहट तकरीबन वेड़ी ही दीसे है जेडी आल्वारा मांय दीसिया करै। मीरां आल्वारां री उण परम्परा ने कियां सुरक्षित राख सकी ही इण रो पतो लगावणो भी जरूरी है।

मीरां अर गौड़ीय सम्प्रदाय—वल्लभ सम्प्रदाय रे अलावा कृष्णभक्ति रा दूजा सम्प्रदायां रो भी मीरां माथे थोड़ो बहुत असर निजर आवे है। चैतन्य महाप्रभु रा गौड़ीय सम्प्रदाय रा शास्त्रीय आख्याता रूप गोस्वामी अर सनातन गोस्वामी बन्धुवां सूं भी शायद मीरां री भेंट हुई व्है सके। इणां रो भतीजो जीव गोस्वामी रो पुरुषपणे रो घमण्ड तो मीरां हीज तोडियो हो। इण रो 'प्रियामुख न देखण रो प्रण' मीरां हीज छुडायो हो। इण घटना सूं गौड़ीय सम्प्रदाय रे वास्ते मीरां रा भुकाव ने देखियो जाय सके। जद इण भुकाव ने स्वीकारलां तद उणरा प्रभावा ने भी देखणो जरूरी व्है जावे। रूप गोस्वामी री पोथी 'भक्ति रसामृत सिन्धु' ने भक्ति रो आधार ग्रन्थ केयो जाय सके। उण मांय भक्ति री शास्त्रीय व्याख्या जित्ता विस्तार अर प्रामाणिकता सूं हुई है उत्ती नारद या शाण्डिल्य रा भक्तिसूत्रां मांयने भी कोनी हुई है। पण 'भक्तिरसामृत सिन्धु' रो स्वर वैष्णव भक्ति परम्परा सूं थोड़ो भिन्न है। भक्ति ने ओ सुलभ-सरल कोनी मान'र दुरलभ माने है। उणरी दुरलभता हीज भक्ति री कठिनाईयां रो हेतु है। मीरां रा पदा ने गौडीय मत रे सिद्धान्ता मांय ढाळ'र उण री ईश्वर री परिकल्पना ने निर्धारित करणो अजे तईं बाकी है। गौडीय सम्प्रदाय रे मांयने मधुरा भक्ति रो जिको स्वरूप है उण रो मीरां माथे मोकळो असर पड़ियो हो। चैतन्य महाप्रभु मे जिकी तन्मयता, प्रेमानुभूति री जेडी उद्वेलित दसावां दीसे है अर 'नवधाभक्ति' मांय सू सिरफ कीर्तन ने स्वीकारण री जिकी भावना है उण ने मीरां रा पदा मांयने भी उत्ते हीज ऊंडेपण सूं उपस्थित देखियो जाय सके। इणी भात मीरां अर चैतन्य दोनऊं माय एक अद्भुत समानता भी देखी जाय सके है। चैतन्य री नृत्य अर कीर्तन री प्रवृत्ति सू जुडाव मीरा मे मोकळी आस्था सूं उपस्थित देखियो जाय सके है। 'पग घुघरू बांध मीरा नाची रे' रूप में मीरां रो नृत्य रे वास्ते खास भुकाव उण ने चैतन्य री भक्ति शैली सूं जोड़ देवे। चैतन्य महाप्रभु री भक्ति भावना सू मीरा री भक्ति भावना री आ जुड़ाव री बात महाप्रभु वल्लभाचार्य री 'पुष्टि तदनुग्रह' री शैली सू खासी आंतरे है। इण वास्ते चैतन्य अर वल्लभ दोनो री विचारधारा री मीरां रा पदा मांय हाजिरी एक अणमुलभियोडो सवाल है जिको केकी जबाब री उडीक करे है।

मीरां अर हितहरिवंश—इण भांत हीज राधावल्लभ सम्प्रदाय रा प्रवर्तक हितहरिवश सूं भी मीरां री भेंट रा प्रमाण मिले है। केह्यो जावे है के वे खुद मेडते आय ने मीरां रा मेहमान वण्या हा। हितहरिवंश रो राधा-भाव उण टेम रा दूयजा कृष्ण भक्त सम्प्रदायां सू अलग-थलग ही हो। मीरां तो खुद औरत ही, राधा जीसी ही पीडित अर कृष्ण माथे रीझियोड़ी। इण कारण मीरां रे वास्ते हितहरिवंश रे राधा-भाव ने स्वीकारणो मुश्किल कोनी हो। मीरां तो एक ठोड़ खुद ने लारला जनम री राधा तक वतलायो है–'रास पूणो जणमिया री राधा का अवतार।' मीरां पदावली रे मांय राधा रो घणो उल्लेख तो कोनी है फेर भी वो आयो तो है हीज। जियां—

(1) आवत देखी किसन मुरारी छिप गई राधा प्यारी

(2) ऊभी राधा प्यारी अरज करत है, सुणजे किसन मुरारी

(3) राधा प्यारी दे डारो जु वंशी मोरी

(4) झूलत राधा सग गिरधर झूलत राधा सग।

पण मीरां पदावली री राधा वल्लभ सम्प्रदाय री राधा ज्यूं 'प्रोषितपतिका' कोनी है। मीरां री राधा दरअसल कृष्ण रे सागे झूलो झूलण वाळी या कृष्ण री मुरली ने हथियाय ने उणां ने खिजावण आळी राधा है। वा कृष्ण रा विरह मे झूरती रैवण वाळी राधा कोनी है। वा उपेक्षिता नायिका नी व्हैयर प्रेमतृप्ता प्रगल्भा नायिका री वाणगी देवती दीसे है। इण वास्ते मीरां री राधा परिकल्पना हित-हरिवंश री राधा भावना सूं कितरी समता या विषमता राखे है इण ने देखणो भी जरूरी है। क्यूं के इण सू उण री भक्ति री खास दिसा तय की जाय सकेला।

मीरां अर गीतगोविन्द री परम्परा—कृष्ण भक्ति री एक गैर शास्त्रीय परम्परा भी चालू रैयी ही। जयदेव रा 'गीत गोविन्द' सूं चालती आवती आ परम्परा माधुर्य भाव री भक्ति रो चरम निदर्शन है। इण मे राधा अर कृष्ण रे रति रा परम सौंदर्य सू भर्‌योड़ा भात भात रा चित्र आंकियोड़ा है। यूं तो 'गीत गोविन्द' कृष्ण भक्ति रा सगळा सम्प्रदाया ने थोड़ो घणो प्रभावित कियो है। पण उण री मुतल्लर परम्परा भी आगे तईं चालती रैयी है। जयदेव रे पछे चण्डीदास अर हिन्दी मे विद्यापति उणने आगे बढायो। कृष्ण रो ओ लोकरंजन पक्ष अर उण रो सौंदर्य शास्त्रीय रूप मीरा माथे भी असर डाळ सक्यो के कोनी डाळ सक्यो ओ भी विचार-णीय है। केह्यो जावे है के मीरा खुद भी गीत गोविन्द रच्यो हो पन विद्वान उण ने नकली रचना माने है। पण मीरा रा पदां मांय कृष्ण रो रूप माधुर्य रो सौंदर्य, कृष्ण री बंकट छवि मांयने अटकियोड़ी मीरां री आस्था, कृष्ण रा सौंदर्य ने 'निरख म्हारो मनडो फंस्या,' कृष्ण री रूपमाधुरी रे 'अंग अंग मीरा बलि जाई' वाळा नारा

प्रसंग संयोग शृंगार री सगळी सोभा अर विप्रलंभ री सगळी आतुरता ने मीरां जिण रूप में वर्णित कियो है वो ओ प्रमाणित करे है के मीरां कृष्णभक्ति री गैर शास्त्रीय परम्परा ने भी निभायो हो। इण री जांच भी अजे तई बाकी है।

अस्तु, मीरां री ईश्वर परिकल्पना रा सांचे रूप री खोज बहुत जरूरी है। ऊपरला विवेचन सूं आ बात आसानी सूं समझी जाय सके है के स्थूल आधारां सूं निसरण वाळी बातां रे आधार माथे उण रा आराध्य रो निरधारण कर ने उण ने हीज सांच मानतो जावणों कितरो भ्रामक व्है सके। इण वास्ते मीरां रे साहित्य सूं जुड़ियोड़ा ऐ सगळा अणसुळझियोड़ा सवालां रे रूप में मैं इतरा बिन्दुओं ने आप विद्वानां रे सामी पेश करणों चाहूं हूं—

(1) मीरां रा पदां रे क्रम रो चोखी तरह निर्धारण कियां बिना उण माथे जुदा-जुदा स्रोतां सूं पड़ियोड़ा प्रभावां री जांच करतो जावणो कित्तो उचित है? उण रे जीवण में काव्य चेतना री सरूआत हुयण सूं लेयने जीवण री खास खास घटनावां रे आधार माथे उण रा पदां री व्यवस्था करणो जरूरी है।

(2) एक औरत रे रूप मे मीरां रा विद्रोह ने इतिहास री घटनावां रे परिप्रेक्ष्य में देखण री जागां उण रे युग रा सामाजिक सास्त्र, समाजसास्त्रीय मान्यतावां रे आधारां माथे देखण परखण री भी अपेक्षा है।

(3) मीरां री ईश्वर परिकल्पना री खोज रे वास्ते उण रे साहित्य में मिलण वाळा इता समीकरणां रे खास उत्तरां ने ढूंढणो जरूरी है।

(क) महाप्रभु वल्लभाचार्य रे पुष्टिमार्ग रा सिद्धान्तां सूं, चैतन्य मत री भक्ति सम्बन्धी मान्यतावां सूं अर हितहरिवंश रे साम्प्रदायिक विचारां सूं मीरां रे पदां सूं तालमेल बैठावणो अर उण री भक्ति री मूळ चेतना ने खोज निकाळणो।

(ख) कृष्ण भक्ति से आगे नाथपन्थ री योग भावना अर ज्ञानमार्गी सन्तां री भक्ति अर साधना पद्धति सूं मीरां रे पदां रो तालमेल बैठावणो।

(ग) कृष्ण भक्ति रा शास्त्रीय स्वरूप वाळा सम्प्रदायां री मान्यतावां रे साथे मीरां री पदावली रो गीत गोविन्द री शुद्ध शृंगार वाळी परम्परा रो तालमेल बैठावणो।

(4) भारत री सामाजिक दसावां रे मांयने नारी री दसा अर मीरां रे व्यक्तित्व रो तालमेल बतलावणो। सांस्कृति री रूढ़ जिजरां अर मीरां री भक्ति चेतना रे बिचाळे तालमेल बिठावण री कोशिश करणो।



(राजस्थानी अकादमी सारू पढ़ियोड़ो परचो)

गांव रे जीवन रा चितेरा : रवीन्द्र नाथ ठाकुर

रवीन्द्र नाथ ठाकुर भारत री आत्मा रा पूठरा चितेरा रचनाकार हा। उणा री कलम सू उकरियोड़ो देश री माटी रो कण कण मन भावते उजास सूं वेणी रचनावां में जगमगाय रैयो है। धरती री मोकळी आस्थावां अर गांव री माटी री महक सू उणां रो साहित्य सांगोपांग भीजियोड़ो है। कवि, लेखक, संगीतकार, चित्रकार रे रूप में जठीने भी इणा री प्रतिभा आगे पावंडा भरिया है उण मे कल्पना माथे टिकियोड़ी सपनीसी रहस्यात्मकता रे सागे सागे जमी रो कोड अर उण रो यथार्थ साकार हूवतो दीसे है। आदर्शां रो धणी ओ रचनाकार भारत रे गांवां मे रेवणवाळी आत्मा ने खुद पिछांण ने लोगां सू उण री सौदर्य सू रळियोड़ी पिछांण करावण सारू कोशिश करतो रैयो।

जमीदार रे परिवार मे जलम लेवण रे कारण इणां ने जादातर नगरा रे जीवण रो हीज अनुभव मिळियो। पण इण कारण टेगौर रो सौदर्यचेता मन बंधियोड़ो कोनी रैयो। गांव में हीज भारत री सांची जिनगाणी है अर गांव ने छोड ने दूजी ठौड़ भारत रा साचा दरसन को हूय सके इण बात ने सागी तरा सू पिछाण ने वे हरमेस गाव रा दरसण सारू छटपटावता रेवता। गांवा रै वास्ते आपरे रूझाण ने टेगौर खुद यूं वरणित कियो है— "मै गांव री जिनगाणी ने मोकळी बारीकी सूं देखण री इच्छा राखतो हो। म्हारी आ कर्त्तव्य भावना म्हने नदियों, नहरां अर दूजा जल मारगां सू म्हने दूर दूर रा हिस्सावां कनी लेयगी। इण सूं म्हने जिनगाणी ने एक बदलियोड़ा दृष्टिकोण सू देखण रो मौको मिळियो। गाव रा भाया री दिनचरया अर उणां रा कामकाजा री बदळियोड़ी दिसावा ने देख'र म्हारो हिवड़ो ताज्जुब सू भरग्यो। नगर रे माय पालीजियोड़ो होवता थकां भी मै गावां रे सौदर्य रे बिचाळे खुद ने लेयग्यो अर उणा रा आकर्षणा सूं खुद ने सांगोपांग भर लियो।"

गाव री जिनगाणी सू टेगौर री आ पिछाण उणा री रचनावा री नूवी दिसा बणगी। हालांकि टेगौर रहस्यवाद अर प्रकृति रे पूठरे सिणगार रो चितेरो कवि हो पण गावां रा लोगा री अभावा अर कष्टा रे माय भी मस्ती अर विश्वास सू रिळिजियोड़ी निराळी जिनगाणी ने देख ने उणा रो हिवड़ो पछतावे सूं भरग्यो। उणा ने लागियो के जाणे वे मिनख-मिनख रे बिचाळे रा इण आंतरापण ने देख'र

भी अणदेखणों करतो रेह्या है। उणां ने लागियो के वे जंमीदारी री सगळी सुविधावा ने भोग ने जाणे आपरी हीज माटीवाळा गांवांवाळा माथे अत्याचार कर रेह्या है। टेगोर री आ पछतावे री भावना उणां रे साहित्य री नूवी प्रेरणा बणगी। इण बात ने वे खुद इण मुजब स्वीकारियो है—"होळे होळे गांव रा लोगां री गरीबी अर वेचारगी म्हारे सामी सजीव हुयगी। मैं विचार करण लागग्यो के उणा रे वास्ते म्हने की न की कोशिशां करणी चाईजे। जदे म्हने आ बात मोकळी सरमावण लागगी के म्हें एक जमीदार हूं जिको के कोरा-मोरा आर्थिक उद्देश्यां सूं प्रेरणा लेवतो हो अर टेक्स उगावण माय लाग्योड़ो हो। जदे आ बात मैं अनुभव कर लीवी उण रे पछे मैं गाव वाळा लोगां रे भी मनां में आ चेतना भरणी सुरू कर दी के उणां ने आपरी जिम्मेदारियां खुद रे कांधां माथे लेवण लाग जावणों चाइजे।"

इण अनुभव रे पाछे उणां रे मन में आ बात थिर हुयगी के नगर री सुविधावा भोगण आळा लोगा ने गाव रा भोळा-भाळा मिनखां रो शोषण करण रो कोई हक कोनी है। उणा रा साहित्य में भी इण चेतना रा जीवता दरसण हुवे है। जाणें टेगोर गांव री आतमा सू रूबरू सामेळो करण री कोशिशां सुरू कर दीवी।

उणा री मोकळी कवितावां भारत रे गावां रा दुख दरद ने सामी लावे। इण कवितावा मे उणां री लेखनी आपरा रहस्यवादी तिलिस्म ने चोखी तरा सूं तोड़ ने सामी आई है। धरम सूं पीड़ित हुवण आळा बूढा भारत री रीस्या री सांकळा माथे अर परम्परावा री जड़ता माथे चोट करता वे 'प्रेतात्मा' कवितां मांय केह्यो है—'देश रे चारउंफेर जेळ री भीता तणगी। कोई को जाणतो के इण अणदीठती भीतां सू पार किया पायो जाय सके। उणा रा भगवान मन्दिरा में निवास कोनी करे। गावां में जठे लकड़हारो लकड़ी चीरे है किसान जठे हळ वावे है उठे म्हारा भगवान वसे है।' इणी भात 'ए वार फिराओ मोरे' कविता में किसाना री जुझारू भावना ने बतलावता वे केह्यो है—'इण कुम्हलायोड़ा मुखां ने भाषा देवणी पड़ेला, अे थाक्योड़ा, सूखा, टूट्योड़ा हिवड़ावा माय आशा गुंजावणी पड़ेली। इणा ने तेवड़ो देय ने केवणो पड़ेला के अरे थां लोगां एक वार तो माथो उचो कर ने खड़ा हुय जावो तो थे देख सकोला के जिण लोगा सूं थे डर रेह्या हो वे तो खुद थांसू भी मोकळा डरपोक है। थारे खड़ा व्हैवतई वे भाग जावेला। रस्ता रा कूकरा ज्यूं डर ने गायब हुय जावेला। क्यू के वे तो बस मूडा सू हीज उची ऊंची बाता छांटे है खुद रे हिवड़ा में वे आपरी कमजोरी पिछाणें है'।

टेगोर रो कथा साहित्य भी गांव री जीवण दसावा ने समेट ने सामी आयो है। मोटा तौर सूं उणां री कहाणियां ने चार भागा मांय बांट'र देखियो जाया करे है। इणां में सेंगा सूं ज्यादा कहाणिया उण वरग री है जिण माय गांव रे जीवण ने कथा रो विषय बणायो गयो है। इण कहाणिया री रचती वेळा टेगोर जमीदारी रे

रख रखवाळ रे खातिर गांवा में घणी दिनां तई रैह्या हा। इण कारण उणां ने गवां रा जीवण ने नेडे सूं देखण रो मौको मिळियो हो। 'पोस्ट मास्टर', 'मेघ ओ रौद्र', 'नष्टनीड़', 'प्राणरक्षा', 'कर्मफल', 'ककाल', 'क्षुधित पाषाण', 'निशीथे' आदि कथावां गावी री जिनगाणी रे यथार्थ माथे हीज निरमित हुयोड़ी है। इणी भांत रा चितराम अर चरित्र रवीन्द्रनाथ रा नाटका मे भी मोकळा निजर आवे है।

इणां रा साहित्य मे गावां रा चितराम कोरी मोरी साहित्य री रचना प्रेरणावां हीज बण'र कोनी रैयगी है। गांवा री दसावा रे सुधार रो रचनात्मक नजारो भी इणा रे साहित्य में निजर आवे है। गांवा री इकसार जिनगाणी री एकरसता ने तोड ने उण ने गति दिरावण सारू टैगोर आपरी रचनावां में जिण आदर्श ने थिरपियो है उणां मे महात्मा गाधी रे प्रयासां जेड़ी गरिमा निजर आवे है। गांव रा सामाजिक जीवण रा उत्थान सारू टेगोर रो दृष्टिकोण स्वस्थ समाज रे थापना री कोशिश करतो दीसे है। वे आपरी रचनावां में गांवां रे पुर्ननिर्माण री बात ने मोकळी बुलदगी सूं उठाई है। "समाज अर छूआछूत" जेड़ा निबन्ध इण भांत री सामाजिक बुराईयां माथे सीधो सीधो आक्रमण करें है।

गांवा री आर्थिक उन्नति रे वास्ते टेगौर शिक्षा रा साचा आदर्शां ने प्रोत्साहन दियो है। इणां री रचनावा मे मशीन रो स्वागत तो करीजियो है पण अे मिनख माथे मशीन रा अधिकारा ने पसन्द कोनी करता। गावा रे सामुदायिक उन्नती री जिण बातां री आजकल मोकळी चरचा की जावे है उण ने टेगौर आपरी रचनावां में पूरे ताकद सूं परकट करता रैह्या है। सहकारी आन्दोलन रे विकास रे खातिर वे मोकळा तर्क दिया है। उणा री आ मानता ही कै सहकारी आन्दोलन सू हीज भारत रा सुरूपोत रा सामाजिक जीवण में ग्रामीण समाज रा समाजिक उत्तरदायित्व री थिरपणा हुय सकी ही। इण वास्ते टैगोर री आ मानता ही के देश रा सगळा विकास रे वास्ते गांव माथे टिकियोड़ी अर्थ व्यवस्था हीज उपयोगी हुय सके है। सामाजिक न्याव खातिर उणां आपरी आवाज पूरी बुलदंगी सू उठाई। आ आर्थिक भेदभावां ने हटाय ने साचा सामाजिक हित रो विधाण करण आळी ग्रामीण चेतना इणां री रचनावा में पूठरी गरिमा सूं सामी आई।

टेगौर रो साहित्य साचे अरथां में भारत री आतमा रो साहित्य हो। वे उणरी धडकन ने गांव री जमी रा कण कण सूं सुणन री चेष्टा की ही। इण कारण हीज उण रो साहित्य अमर है अर उणरा भारतीयता री सांची आस्था रा आदर्श भी गावां सू जुड़ाव रे कारण जुगा जुगां तई अमर रैवेला।

□

[(आकाशवाणी सू प्रसारित)

'वेलि' रो वस्तु सौंदर्य : एक पुनर्मूल्यांकन

'वेलि' रे कथानक रे सौंदर्य सूं सम्बन्धित म्हारी बात शुरू करण सूं पेली मैं आप रो ध्यान इण बात कनी खींचणो चाहूं हूं के साहित्य रे मायने जदे भी एक रचना रो सांगोपांग मूल्यांकन होय ने उणरी सगळी विशेषतावां सामी आ जावे पछे उणरो पुनर्मूल्यांकन करण री क्यूं जरूरत पड़े ? पेलड़ा मूल्यांकन री सारी स्थापनावां ने छोड़ ने जदे उण रा पुनर्मूल्यांकन री बात उठाई जावे तो वेड़ा प्रयासां री सार्थकता कई है ? ज्यादा समझावण ने वास्ते ओ कह्यो जाय सके के पुनर्मल्यांकन रो प्रयोजन कई है ? कई नई दृष्टि रो नाम पुनर्मूल्यांकन है ? के स्थापित विचारां रो विरोध करण रो नाम पुनर्मूल्यांकन है ? के वे प्रतिमान जिका के युग रे बदळण रे सागे सामी आवे वैणे आधारां सूं कियोड़ी समीक्षा रो नाम पुनर्मूल्यांकन है ? अे कुछ मुद्दा है जिका के सैंगाऊ पेली सामी आवे ।

अे सारा सवालां ने ध्यान में राख ने जद आपां विचार करां तो शुरू में हीज आ बात चोखी तराऊं साफ हुय जावे के सांचे अरथां मे पुनर्मूल्यांकन पेली कियोड़ी चेष्टावां रो विरोधी कोनी हुया करें बल्कि उण री जगां ऐड़ा प्रयासां ने पूरक री संज्ञा दी जा सके है । क्यूंके जद आपां कोई रचना रो मूल्यांकन किया करां तो उण टेम आपां रे साम्हे कोरी पोथी हीज रैहा करे । उणरी अच्छाइयां ने ढूंढ निकाळण रे वास्ते आपां ने खुद ने कोशिश करणी पड़े । इण वास्ते ई बात री घणी सम्भावना है के बो टेम आपाणी पूर्वधारणावां आडी आय जावे । आपांणी परंपरानुगतता या विचारां री प्रतिबद्धतावां आपाणी दृष्टि रे माथे इत्ती हावी हुय सके के उणरे रंग रे कारण आपां कृति सूं न्याय करण री जागां आपांणी खुद री स्थापनावां रे प्रति घणां सचेत हुय जावां । अगर आ बात साच हू जावे तो पछे इण दोष रे कारण पेलड़ा मूल्यांकन में सांगोपांग दृष्टि रो फैलाव कोनी होय सके । इणी तरकं आ वात भी ध्यान में राखणी जरूरी है के समय रे बदळ जावण सूं लोगां रे सोचण विचारण मे भी अन्तर आ जाया करें । इण कारण नूवे युग रा लोगां ने कोई बात सिरफ इण वास्ते हीज चोखी कोनी लागे के वा पेलड़ा लोगां ने घणी पसन्द ही । मूल्यांकन रा जिका आयाम एक खास टेम में घणा पसन्द किया जावे वे हीज युग बदळण रे सागे सागे पुराणा पड़ ने वासी, बोदा व्हेय जावे । पैमाना रे दोष सूं पण कृति ने दोषी कोनी कह्यो जाय सके । इण वास्ते पुनर्मूल्यांकन कर ने आपां पेलड़ा प्रयासां री पूर्ति कर देवां

अर कृति रो साहित्यिक महत्व एक बार पाछो सवांरे सामी खेंच लावां । इणही तरऊं नूंवोड़ी दिशावां ने चानणां में लावण रे खातिर ओ जरूरी है के आपा समीक्षा रा जिका नूंवोड़ा प्रतिमान निर्धारित हुया है उणां ने ध्यान में राख ने जूनोड़ी पोथियां री विशेषतावां बतावा । इण वास्ते मूल्याकन कियोड़ो होवता थकां भी पुनर्मूल्याकन री जरूरत पड़े । ऐ बातां ने ध्यान मे राख ने म्हैं आज आप लोगां रे सामने 'बेलि' रे वस्तु तत्व रो पुनर्मूल्यांकन करण री चेष्टा कर रह्यो हूँ ।

'बेलो' री वस्तु रो तात्पर्य निर्णय—आपरी रचना लिखण सूं पेला हर कवि उण री कथा रो एक न एक तात्पर्य अवसकर तै कर लेवे । पण काव्य री दात्तं रे कारण वो वेनें स्थूल रूप में प्रकट कोनी कर सके । कविता री सुन्दरता यी रे चमत्कार अर रसवादिता मूं तय हुवे । पण वेणां कोरा कोरा नाम गिणा देवण सू उण री सारी महिमा खतम हुय जावे अर कवि री सारी मेहनत बेकार व्हेय जावे । सजग कवि इण वस्ते रचना रो तात्पर्यार्थ ने अप्रत्यक्ष ढंग सू कथा रे मांयने मिला दिया करे। ऊपरली निजर सूं देखण मूं पाठक वां ने कोनी पकड़ पावे पण आलोचक सूं वस्तु री तात्पर्य छानो कोनी रैय सके ।

'बेलि' रे कथानक री विशेषतावा रे पुनर्मूल्याकन रे वास्ते आ जरूरी है के सेंगाऊं पेली ई बात रो निर्णय हो जावणो चाहीजे के रचना निर्माण रे लारे कवि रो मूल तात्पर्य कई हो ? 'बेलि' ने भक्ति या शृंगार प्रधान रचना कही जावे है पण म्हारी समझ में ऐ बाता तो कथा रा मोटा मोटा आधार है न के रचना रो तात्पर्य । इण भेद ने पिछांणिया बिना आपां पृथ्वीराज री वस्तु विन्यास कला ने पिछांण कोनी सकां । इण वास्ते आपां ने थोड़ी देर तई कृति माथे सू ध्यान हटाय ने खुद कवि कनी ध्यान देवणो पड़ेला ।

पृथ्वीराज अगर शुद्ध शृंगारिक रचना लिखणी चावतो तो इणरो संबंध उणरे खुद रे जीवन सूं जरूर होवतो । पण आ बात उण रे खुदरे व्यक्तित्व अर उणरी राजनैतिक स्थिति सूं मेल कोनी खावे । आ बात तो सब जणां जाणे है के कवि एक बहुत बड़ो योद्धा हो । खुद अकबर ई री वीरता सूं प्रभावित हो । नरोत्तमदासजी तो ई कवि रे वास्ते इत्तो तब क बतायो है के पृथ्वीराज अकबर रे दरबार रा नवरत्ना में सूं एक हो । वेणां हीज शब्दां मे—'पृथ्वीराज री प्रतिभा सूं सम्राट अकबर उणां कनी आकर्षित हुया अर वो उणां रे सागे रैवण लागग्यो । सम्राट रा दरबारियां मांय पृथ्वीराज रो बड़ो आदर हो । अकबरी दरबार रा नौ रत्नां मे एक पृथ्वीराज भी हो । सम्राट उण ने बहुत चावतो हो । उण रो कह्योड़ो निम्नलिखित दोहो प्रसिद्ध है :

पीथल सों मजलिस गयी, तानसेन सों राग।
रीझ बोल हंस खेलबो गयो बीरबळ साथ।।

आ बात अगर साची है तो इण सूं ओ प्रश्न खड़ो कियो जाय सके के पृथ्वीराज ने अकबर आखिर इत्तो सम्मान क्यूं दियो। अकबर रे नौ रत्ना मे जिका जिका लोगां री चर्चा आवे वैणे आधार सू अगर पृथ्वीराज ने देखां तो उण ने ऐड़ी गरिमा सू मडित करण आळो एक ही आधार निजर आवें अर वो है पृथ्वीराज रो स्वाभिमान। इण सबंध मे टेसीटरी साफ साफ केह्यो है के—'पृथ्वीराज पराक्रम अर अदम्य स्वाभिमान रा घणा प्रशंसक हा ने दैन्य गुलामी अर नैतिक पतन रा कट्टर दुश्मन हा। जिण आदतण उदारता सू वे दोस्त या दुश्मन री आपरे काव्य मे तारीफ कर सकता हा उणी सच्चाई सूं वे खुदरा भाई बीकानेर रा राजा री ही नही, खुद अकबर तक री भी, कोई ओछी हरकत ने देख ने, तीखी आलोचना कर सकता हा।"

इणी तरऊ पृथ्वीराज रे व्यक्तित्व में जातीय गौरव अर देशाभिमान रो भाव कित्तो गहरो हो जिण रो प्रमाण राणा प्रताप रो वो पत्र है जिको के अकबर बादशाह रा खुद पृथ्वीराज ने दिखळायो हो। बादशाह रो ओ व्यवहार ईं बात ने सिद्ध करण रे वास्ते घणो है कि वो पृथ्वीराज री वीरता, तेजस्विता, अर स्वाभिमान रो जाणकार हो। वो इण रूप मे हीज पृथ्वीराज रा व्यक्तित्व री पिछाण भी करतो हो। इण रो एक और प्रमाण कर्नलटाड रो ओ विवादास्पद कथन है के पृथ्वीराज दरअसल स्वाभिमानी राजपूत हो। वो अकबर री अधीनता कोनी मानी। इण वास्ते बादशाह उण ने बन्दी बणाय ने आपरे अठे राखतो। जद प्रताप रो पत्र बादशाह ने मिळियो तो वो पृथ्वीराज रो गर्व तोड़न री, खातिर हीज वा चिट्ठी उण ने दिखळावी ही। श्री भूपतिराम साकरिया टोड रा ईं कथन ने इण तरऊ बतलायो है के—'प्रताप रा उण पत्र ने बादशाह पृथ्वीराज नाम रो श्रेष्ट राजपूत सरदार ने दिखळायो। पृथ्वीराज बीकानेर रे राजा रो छोटो भाई थो अर वो इण दिनों में अकबर बादशाह रे अठे कैदी थो। उण रे कैदी हुवण रो कारण ओ थो के उण में मोकळो राजपूती स्वाभिमान थो। दूजा राजावा री तर्रं वो अकबर री अधीनता स्वीकार करण खातिर तैयार कोनी थो। इण वास्ते कैद कियो गयो थो अर बन्दी अवस्था में वो बादशाह रे अठे जीवन व्यतीत कर रह्यो थो।"

ऊपर रा विवेचन सूं ओ निष्कर्ष निकळे है के पृथ्वीराज न केवल एक बड़ो योद्धा हो बल्के घोर स्वाभिमानी अर जातीय गौरव ने राखण आळो आदमी हो। अर आ बात आपां सब अच्छी तर्रं सूं जाणां हां के जीवन मे हर आदमी रा खुद रा की न की जीवन मूल्यां हुया करें है। हर आदमी वे मूल्या रे वास्ते खुद ने समर्पित कर देवै पण किणी भी तरे रो समझौतो करणो पसन्द कोनी करें। पृथ्वीराज जेड़ा

आदमी सूं तो ई बात री हरगिज अपेक्षा कोनी की जाय सके के व जीवन रे किसा भी क्षेत्र में स्थितियां रे सामने या थोड़ा सा फायदा रे वास्ते या समाज में नाम मिलण री खातिर किणी भी तरे रो समझौतो कर लेवे। पृथ्वीराज ऐड़ा व्यक्तित्व रो धणी हो तो ऊरे ई व्यक्तित्व रे करड़े पणे रो असर उणां री रचना माथे भी पड्यां बिनां कीकर रैय सक्यो व्हैला।

ई बात ने 'बेलि' रै तात्पर्य निर्णय रे वास्ते अगर घटित कर ने देखां तो इण रा वस्तु में शृंगार भावना रो निरूपण कृति रो चरम उद्देश्य कोनी ठहरीजे। इण रा शृंगार वरणन ने तो प्रसंगानुरूप उदित होवण आळी दशा या स्थिति रै रूप मे हीज देखी जा सके। अर्थात् पेली महत्वपूर्ण बात तो आ है के पृथ्वीराज जेड़ा व्यक्ति सूं जिको के वीरता, तेजस्विता ने स्वाभिमान ने जीवन रा चरम मूल्यां रे रूप में धारण करतो हो, आ अपेक्षा कोनी की जाय सके है के वो रसिक जणां रे मनोविनोद रे वास्ते कोरी शृंगारिक रचना लिख सके। दूजी आ बात भी ध्यान में राखणी जरूरी है के आपरा जीवन काळ में कवि एक श्रेष्ठ शृंगार कवि रे रूप में थापित नहीं हो बल्कि आपरे व्यक्तित्व रे अनुरूप हीज वो ओजस्वी वाणी रो महत्वपूर्ण कवि रे रूप में गिणीजतो हो। ई बात रे वास्ते एक बार फेर कर्नल टाड रो कथन ध्यान में राखणो जरूरी है के 'पश्चिमी देशां रा राजावां री भांत पृथ्वीराज आपरे समे रा राजावां में श्रेष्ठतम वीर हो जिको के आपरी ओजस्वी काव्य शक्ति सूं लोगां में प्राण फूंक सकतो ने वकत माथे लड़ाई रा मैदान मे खुद रा शौर्य रो भी परिचय दे सकतो हो। उण टेम रा चारण कवियां रा समुदाय मे वो राठौड़ वीर सबसूं ज्यादा प्रशंसा रो भागीदार हो। (साकरिया—पृष्ठ 23) टोड तो पृथ्वीराज री कविता री शक्ति ने दस दस हजार घोड़ां री ताकत रे बरोबर बतळायो है।

ऐ सगळी बातां ई राठौड़ कवि री कविता ने तेजस्विता अर शौर्य भावां रा प्रदर्शन करण वाळी कविता रे रूप मे स्थापित करे ने कोरा मोरा शृंगार ने हीज पूरी तराऊं प्रकट करण आळा कवि रे रूप में नहीं। अठे आप लोगां रे मन में ओ प्रश्न खड़ो हुय सके के तो पाछे 'बेली' में शृंगार ने इत्तो विस्तार सूं वर्णित करण री काई आवश्यकता ही? इण प्रश्न री चर्चा आगे 'बेली' रे काव्यरूप रे अन्तर्गत कियोड़ी है। अठे तो ओ हीज कह देवणो पर्याप्त है के शृंगार भावना वस्तु रो तात्पर्य निर्धारण नहीं करै है बल्के आ तो 'बेली' रे रूपक रे कारण, चरित्र नायक कृष्ण रा स्थापित व्यक्तित्व रे व्याज सूं अर कृष्णकाव्यां री परम्परा रे व्याज सूं ग्रन्थ मे प्रस्थापित हुई है, परन्तु रे चरम लक्ष्य रे रूप मे वर्णित कोनी हुई है।

अगर 'बेली' शृंगार रे वास्ते हीज लिखियोड़ी रचना नहीं है तो ई रे शुरू में ही शृंगार रे प्रति समर्पण रो भाव क्यूं वर्णित कियो गयो है। आ आपत्ति भी की जाय सके। ग्रन्थ मे वो अंतर्साक्ष्य ओ है :

सुखदेव व्यास जैदेव सारिखा
सु-कवि अनेक, त अेक-संथ
स्री-वरणण पहिलऊं कीजइ तिणि
गूंथियइ जेणि सिंगार-ग्रंथ।

ईं छन्द रे मुजब शृंगार ग्रन्थ गूंथण वाळा हमेशा स्त्री री सुन्दरता रे वर्णन सूं कथा री शुरूआत करे आ कवि री विचारधारा तय हुवै। इण छन्द सूं शृंगार ने हीज कवि रो चरम प्रतिपाद्य मानणो चाहिजे लोगों री आ धारणा है। और ईं स्थापना रे कारण वो भी कवि परम्परा रो हीज पालण कियो है। जठै परम्परा निभावण री बात आ जावे उठे कवि मौलिक नही रेह्या करे आ बात चोखी तरां सूं जाणो हो। इण भांत कवि आपरे निश्चित जीवन मूल्यां रे बावजूद कथा री सुरूआत धोमें वृत्ति सूं करण री वनिस्पत बी वृत्ति री प्रेरणा स्रोत सूं की है। इण सूं अधिक ईं छन्द रो ने ग्रन्थ री शृंगार भावना रो महत्व नही है।

वस्तु सूं शृंगार भावना ने नकार ने उण रो तात्पर्य निर्णय करण में दूजोड़ो आधार भक्ति भावना रे रूप में सामने आवे है। कथा रे अन्त में जिका महात्म्य री चर्चा कवि की है उण रे आधार सूं रचना मे कथ्य री दिशा भक्ति रे कनी प्रवाहित होवती घणी दीखे है। पण कई सचमुच में भक्ति कवि रो इष्ट है इण बात ने भी देख लेवणो जरूरी है।

हिन्दी मे रीतिकाल रा कवियां री भक्ति भावना रे वास्ते एक बात इत्ती सटीक भाव सूं कंथोड़ी है के वा थोड़ा में ही वे कविया रा तात्पर्य रो निरूपण कर देवे है। कह्यो गयो है के—

आगे के सुकवि रीझि है तो कविताई है
न तु राधिका कन्हाई सुमिरन को बहानो है।

अर्थात् ऐड़ा कवि राधा और कृष्ण री भक्ति रे बहाना सूं रचना कोनी करता वे तो काव्य रे माध्यम सू लोगा ने रिझावण रो प्रयास करता हा। अगर ओ प्रयास सफल कोनी होवतो तो इणी बहाने भगवान रो नाम भी लिरीज जावतो। पृथ्वीराज कृष्ण ने चरित्र नायक बणायो इण रो ओ मतलब कीकर लियो जा सके के वो बेणी भक्ति रे आदर्श री स्थापना करणी चाहतो। आपरी लाचारी ने तो खुद यूं प्रकट कियो है के—

जिणि सेस सहस फण, फणि-फणि बि-बि जिह
जीह-जीह नव नवउ जस,
तिणि-ही पार न पाय स्रीकम।
वयण डेडरां किसउ वस ? ॥5॥

दर असल जयदेव कवि रे 'गीत गोविन्द' रचना सूं हीज कृष्ण री शृंगारिक वृत्ति आकर्षण रो विषय बणगी। पछै कवियां रे सामने वेणें चरित्र रो ओ ढांचो पूरी तरऊं स्थापित होयग्यो। हिन्दी में विद्यापति आपरी पदावली में ने सूरदास आपरा कूट पदां में जिण तरऊं कृष्ण रे व्यक्तित्व ने शृंगार रे नैसर्गिक स्वरूप में वर्णित कियो है वे प्रवृत्तियां 'गीत गोविन्द' री परम्परा ने निभावण रे कारण हीज पनप सकी है। वेड़ीज चेष्टा पृथ्वीराज भी की है। अर्थात् बी री रचना सिर्फ कृष्ण रो नाम चावती हो बीं री भक्ति नहीं। आ बात शायद आप लोगों रे गळे सूं दोरी उतरे पण सांच आ हीज है। क्यूं के मीरां री भक्ति भावना में जेड़ी वेदना, समर्पण ने प्रपत्ति या शरणागति री भावना है वेड़ी भक्ति भावना 'बेलि' में निजर कोनी आवे। इणी भक्ति रो जिको खुद रो स्वरूप है वो भी 'बेलि' में कोनी है। 'भक्ति' री व्याख्या भज सेवायाम धातु सूं करने शाण्डिल्य वणने 'सा परानुरक्तिरीश्वरे:' कह्यो है। वेड़ी परानुरक्ति री भाव भी रचना में दीखे कोनी है। और न नारद री वा भावना भी है जिण ने वो 'सा त्वस्मिन परम प्रेम रूपा' केय ने उण री ग्यारह आसक्तियां रो उल्लेख कियो है। भागवत में जिकी नवधा भक्ति गिणाई गई है वेणां दर्शन भी ईंणरा कथानक में कोनी हुवे।

कुल मिला ने आ बात निरूपित की जाय सके है के 'बेलि' मे न तो आलवार भक्तां री प्रपत्ति या शरणागति री भावना है, न मीरां री भक्ति री तरै रो वेदना भाव है, और न शाण्डिल्य या नारद भक्ति सूत्र मे वर्णित भक्ति रो शास्त्रीय भाव ही है। अर्थात् पृथ्वीराज रे वास्ते कृष्ण-रुक्मणी रो नाम भक्ति रे अभिप्रेरक रे रूप में लेवणो जरूरी कोनी हो। वो तो कृष्ण रो नाम आपरा ग्रन्थ रा चरित नायक रे रूप में लेवणो चावतो हो। रीतिकाल रा हिन्दी कवियां री भांत 'रीझि है तो कविताई है न तु राधिका कन्हाई सुमिरन को बहानो है' वाळी उक्ति भक्ति री दृष्टि सूं 'बेलि' माथे भी पूरी-पूरी साची बैठे है।

शृंगार या भक्ति ने छोड़ ने किसी खास बात है जिण ने 'बेलि' रे तात्पर्य निर्णय रे रूप में देखी जाय सके। म्हारी दृष्टि में वा बात है शौर्य वृत्ति। पृथ्वीराज जिण स्वाभिमान रो धणी हो ने अकबर रे दरबार मे रेवतां थकां भी वो जिण उत्साह सूं उण री प्रतिभा ने नकार सकतो उण रो आधार उण री आ शौर्य वृत्ति हीज है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल भक्तिकाल रे उदय रो एक कारण ओ बतळायो है के आपरे देश में हीज समर्थ होता थकां भी जद हिन्दू लोग पराजित होयग्या तो वेणे कने ईश्वर री भक्ति करण रे अलावा और कोई दूजो विकल्प कोनी रह्यो। आ बात अगर साची है तो ओ कह्यो जाय सके के सामान्य आदमी तो खुद ने आसानी सूं बदल लियो। क्यूं के उण री राजनैतिक दृष्टि सूं ऊंची आकांक्षावां भी कोनी हुया करे

पण पीथल जेड़ा घोर स्वाभिमानी राजपूत रे मन में गुलामी री आ भावना अवसकर कचोट पैदा करती हुवेला। आपरा मूल्यां रे रेवतां थकां वो खुद रे अहं ने कींकर बदळ सकियो व्हैला आ बात भी ध्यान में राखणी जरूरी है। वेलिकार आपरी इणी असमंजस री दशा में हीज कृष्ण ने, जीने वो आप रो आराध्य मानतो हो, आपरे काव्य रो नायक बणावण ने बाध्य हुयो व्हेला। पण कृष्ण रे स्थापित चरित्र में वीरता रे वास्ते घणी गुंजाईश कोनी है। वेंरें बचपन री वे बातां जिका में उणां री वीरता सामने आई ही जदपि शूरता रो चोखो नमूनो है पण उण अवस्था रा बाळक सूं स्थायी शौर्य वृत्ति री अपेक्षा कोनी की जाय सके। वेणे अलावा कृष्ण रो व्यक्तित्व गोपी-वल्लभ रे रूप में शृंगार भावना रो आधार तो बण सके पण कृष्ण रा उण रूप सूं परुषावृत्ति रो प्रदर्शन सम्भव कोनी हो सकतो। कृष्ण रे शृंगारिक भावना सूं भरयोड़ा जीवन रे मांयने कोरी रुक्मणी हरण हीज एकली ऐड़ी घटना है जिका में कवि ने कृष्ण री वीरता ने प्रकट करण री गुंजाइश निजर आई। इण वास्ते पृथ्वीराज कृष्ण रे चरित्र री इण घटना ने आधार बणाय ने खुद रो काव्य लिखियो।

अठे आ बात भी उठाई जाय सके के नायिका रो हरण करण सूं कई शौर्य भावना रो प्रदर्शन कियो जा सके ? उल्टे म्हारी समझ में तो हरण में वीरता दिखळावण रो काम नायक री वासनान्धता या उण री छिछली स्थिति ने तो प्रकट कर सके पण ऐड़ो नायक पाठकां रे मन में वीरता री किणी भी तरह री छाप छोड़ सके ईं बात में सन्देह है। ईं बात सूं स्वयं कवि भी चोखी तराऊं परिचित हो इण वास्ते वो रचना रो नाम हरण परम्परा रे अनुरूप रुक्मणी हरण नाम देवण री जागां इण ने कृष्ण रुक्मणी रे प्रेम री बेलि नाम दियो है। जठे बराबरी रे दर्जा री प्रेम भावना हुवे उठे नायिका ने पावण री बात हरण कोनी कैयी जाय सके। कवि री आ भावना वस्तु रा उण छन्द सूं सिद्ध हुय जावे जिण माय रुक्मणी हरण कर ने कृष्ण कायर ज्यूं भाग खड़ा कोनी हुवे बल्के लोगां ने जोश खरोश सूं चुनौती देवे के अगर कोई रुक्मणी रो वर है तो साम्ही आयने लड़ले। म्हें तो रुक्मणी रो हरण कर रह्यो हूं—'वाहरि रे वहरि/छइ कोई वर, हरि हरिणाखी जाइ हरि।" कृष्ण री ऐड़ी चुनौती सूं सैनिक भी कृष्ण ने वीर रूप में वर्णित करण री जागां उणा ने गोप रे रूप में साधारण करने वर्णित करे—'माखण-चोरी न हुवई माहव/महियारी ने हुवइ महर।' कृष्ण रे कोमळ अंग रे कारण हीज अर उण री माखण चोर रे रूप में स्थापित ख्याति रे कारण शिशुपाळ समेत उण रा सैनिक उणा ने अति साधारण कर ने देखे जिकऊं हीज वे कृष्ण री वीरता सूं युद्ध में पराजित हुयग्या। हरण रे कारण जिका विवाह सम्पन्न हुवे वो राक्षस विवाह कह्यो जावे। ऐड़ो विवाह-संस्कार स्थायी संस्कारा रो अनुपालन कोनी करे। कवि रे मन में आ कुण्ठा भी ही।

कथानक में कवि इण प्रकरण सूं छूट कोनी सकियो है। हरण रे पछे जद वसुदेव देवकी विवाह रे वास्तै पण्डितां ने बुलावे तो वे भी डरता-डरता ईं बात ने प्रकट करे के एक ही बीनणी सूं बार-बार हथळेवो कीयां हुय सके। क्यूंके हथळेवो तो हरण री वगत हीज हुयग्यो। इण वास्ते वे हथळेवा ने छोड़ ने बाकी रा सारा संस्कारां री हीज इजाजत देवें—

> वेदोगत धरम विचारि वेद विद
> कंपित चित लागा कहण
> हेकणि सु-स्त्री सरिस किय होवइ
> पुनह-पुनह पाणिग्रहण ? ॥148॥

इण कथन सूं ओ साफ हुय जावे के पृथ्वीराज री स्वाभिमान एक कानी तो दूसरा री अधीनता मानणो कोनी चावतो तो दूजी तरफ वो हरण ने हरण हीज मानतो इण वास्ते वो मन में आशंकित भी हो। पण उण री मजबूरी ही के कृष्ण ने छोड़ ने वो आपरे अहं री तुष्टि दूजी जागां कोनी कर सकतो हो। और कृष्ण रे जीवन में उणने रुक्मणी रो प्रसंग हीज निजर आयो जिकाने आधार बणाय ने आपरी बात केय सकतो। जिका सूं वो कथा रो ओ रूप हीज प्रकट कियो है।

इण विवेचना रो निष्कर्ष ओ हीज है के वेलि कृष्ण रुक्मणी री वस्तु रो मूल प्रयोजन न तो शृंगार भावना रो प्रदर्शन करणो हो ने न भक्ति भावना रो। वो तो एक राजपूत रो हृदय राखतो हो ने उणी अभिव्यक्ति रे वास्ते वो राजस्थान री कवि परम्परा रे अनुरूप वीरता अर तेजस्विता ने चोखी तरेऊं प्रकट करणी चावतो हो। 'पृथ्वीराज रासो' में ज्यूं युद्ध रे समय नायक री युद्धवीरता रो प्रदर्शन है ने शान्ति री टेम उणरो काम वीरता वर्णित की गई है उणी तरऊं 'वेलि' में भी शृंगार भावना नायक री काम वीरता रे वास्ते हीज वर्णित हुई है।

'वेलि' रे वस्तु सौंदर्य रा आधार तत्व—वेलिकार री काव्यकला री सबसूं बड़ी बात उणरा वस्तु विन्यास कला रा घणां सारा आयाम है। उणां मांयने सूं शृंगार अर भक्ति भावना री चर्चा ऊपर की जाय चुकी है। पण फेर भी उणरी वस्तु री वे दूजी बातां ने सामने राखणो भी जरूरी है जिणा रे कानी समीक्षकां रो या तो ध्यान ही कोनी गयो है या बहुत थोड़ो गयो है। उणां में वस्तु री प्रबन्धात्मकता अर उणरी नाटकीयता री चर्चा करणी जरूरी है। अठे 'वेलि' रे कथानक री वै बातां हीज सामी लावण री कोशिश करीजी है।

वेलि री प्रबन्धात्मकता—'वेलि' ने खण्डकाव्य री सज्ञा दिरीजी है। लारै थोड़ी ज्यादा भावुकता मे आय ने 'वेलि' ने महाकाव्य घोषित करण रो पया

है। पण आज तक प्रबन्ध काव्य री एक मोटी रचना रे रूप में वेलि रो मूल्यांकन करीजियो कोनी है। प्रबन्धात्मकता रो निर्धारण किया बिना रचना ने खण्डकाव्य या महाकाव्य केवणो घणी समझदारी रो काम कोनी है। क्यूंके ऐड़ा प्रयास दरअसल आलोचक री पूर्वधारणावा ने स्थापित करण रा मोटा प्रयास हीज हुया करै। वे धारणांवा कृति सूं न्याय करण री जांगा उणरो अहित हीज अधिक करती निजर आवै। इण वास्ते 'वेलि' री प्रबन्धात्मकता री चर्चा करणो जरूरी है।

शुक्लजी प्रबन्ध रा तीन लक्षण निर्धारित किया है—मार्मिक स्थलां री पहचान, पूर्वा पर सम्बन्ध निर्वाह ने स्थानीय रंगां रो समावेश। ऐ तीनऊं बातां वेलि री वस्तु री सौंदर्य अर प्रबन्ध पटुता री भी चोखी आधार है। अठै उणां री चर्चा करणो जरूरी है।

वेलि रा मार्मिक स्थल—प्रबन्धकाव्य कथा रो ज्यूं रो त्यूं इतिवृत्त हीज कोनी हुवै। अगर कवि कथानक री स्थूलता रे मांयने सूं कल्पना कर ने कुछ ऐड़ा प्रसंग उठाय कोनी सके जिका के उण री वस्तु नें हृदयस्पर्शी बणाय देवै तो उण स्थूलता सूं दब'र काव्य री सुन्दरता नष्ट हुय जावै। या लय, गति आदि रो पालण करण वाळी कविता तो बण जावे पाठकां रे हिवड़ै रो हार कोनी होय सके। काव्य रो ऊंचापणे रो आधार वस्तु रा मार्मिक स्थल हीज हुया करे। 'वेलि' री कथा ख्यात कथा माथे टिकियोड़ी है। इण वास्ते कवि रे सामने कथा रो ढांचो पैला सू हीज गढयोड़ो हो। भागवत री कथा सूं कथानक लेय'र भी कवि उण रे मांयने मार्मिकता रे अनुसन्धान री चेष्टा कीनी है। उण रो सुन्दर नमूनो रुक्मणी री व्यथा ने प्रकट करण वाळा सन्देश में देखीजे है। कृष्ण रे गुणा हे सूं रीझियोड़ी रुक्मणी शिशुपाल रे साथे खुद रा विवाह ने सिंह रा हिस्सा ने सियार ने न्यावण रे रूप में देखने उणां ने सन्देश भेजे है—

बलि-बन्धण मूझ, सियाल सिंघ बलि
	प्रासइ, जउ वीजउ परणई
कपिला धेनु दिन पात्र कसाई
	तुलसी करि चंडाल तणई ॥55॥

इणी तरऊ देवपूजन रा प्रसंग अर युद्ध रा वर्णन मे शृंगार रे वास्ते षड्ऋतु वर्णन भी प्रभावशाली हे। इण रे वावजूद सारा ग्रन्थ मे मार्मिक स्थलां रो अभाव हीज देखीजे। वस्तु में वर्णनां री भरमार है ने कहानी में मौलिक उद्भावना होवता हुवा भी इण में मन में हीज वस्योडा रे जावे ऐड़ा प्रसगां री कमी है। कवि री दृष्टि वस्तु ने अभिव्यग्य बणावण री बनिस्पत उणने राजस्थानी बातां ज्यूं कोरी कोरी कह देवण ने कनी जादा है।

वेलि में पूर्वापर सम्बन्ध रो निभाव—मुक्तक काव्य में अर्थ री आत्मनिर्भरता हुया करे पण कथा ने व्यवस्था देवण रे वास्ते प्रबन्धकाव्य में वस्तु री निरन्तरता होवणी जरूरी है। ऐडी रचना में कथा रे सूत्र में पिरोयोड़ा छन्द आगला छन्द सूं बंध्योड़ा रैय ने उण वात ने हीज आगे बढ़ावै। 'वेलि' रो वस्तु व्यवस्थापन राजस्थान रा गेय परम्परा वाळा काव्यां री भांत है। ऐड़ा काव्यां में कवि रो झुकाव लोकतत्वां ने समेटण री ओर घणो हुया करै। ऐड़ा प्रयासां में कथा रो सूत्र घणी बार टूट जावै या चोखी तरां सूं निभावीजे कोनी। ऐड़ा काव्यां में कथा विश्वासां सूं आगे बढ़ै पूर्वापर सम्बन्ध निर्वाह सूं नहीं। आ बात 'पृथ्वीराज रासो' में भी दीखे है ने 'बीसलदेव रास' में भी। अठे तक के 'ढोला मारू रा दूहा' में भी है। पण ऐड़ा काव्यां में कहानी में गैप रह जावे जिणा ने पाठक आपरी पूर्व जानकारी सूं या आपरी खुद री उर्वर कल्पना सूं भर लिया करै। फेर भी आ बात लोक काव्यां री कथा में जादा नहीं खटकै। पण जद प्रबन्ध री दृष्टि सूं वेणां मूल्यांकन री बात उठे उद ई प्रवृत्ति ने दोष री संज्ञा हीज दीरीजी जाय सके। क्यूं के कथा रो जाणकार पाठक तो ऐड़ी चेष्टा कर सके पण जिको के उणरो जाणकार कोनी है उणरे वास्ते वस्तु रे क्रम ने निभावणो भारी पड़ जावे। ऐडी अनिरन्तर कथा समन्वित छाप छोडन में समर्थ कोनी होय सके। 'वेलि' री वस्तु भी ई दोष सूं अलग कोनी है। इण में कथा रो सूत्र इत्तो पतळो है के उण रे आधार माथे कवि री प्रबन्ध पटुता निरूपित कोनी की जाय सकै। ई में कथा निर्व्याज ढग सूं बंध्योड़ी लीक माथे कोनी चाले जदके प्रबन्ध रे रूप में ऐड़ो होवणो जरूरी हो।

स्थानीय रंगां रो समावेश—प्रबन्ध काव्य में उपस्थित प्रसंगां रे अनुरूप स्थानीय रंग या लोकल कलर रो निभावणो जरूरी है। 'वेलि' में लोकतत्व रे आधारां रे कारण स्थानीय रंगां रो समावेश इत्ती चोखी तराऊ हुयो है के इण बारे में की भी केवणो पैला केयोड़ा ने दुबारा दोहरावण री बात हीज कही जाय सके।

'वेलि' री प्रबन्धात्मकता रो सांगोपांग विवेचन करण सूं आ बात साफ हुय जावे के इण मांय वस्तु री प्रबन्धात्मकता रो सूत्र थोड़ो फीको हो है। इण रा मर्म-स्पर्शी वर्णना री कमी ने वर्णनजनित स्थूलता रे कारण इण ने घणो सराहनीय दरजो नी दीयो जाय सके। पण ऐ बातां कवि री लेखनी री कमी रे कारण साम्ही नी आई है। ऐ दोष कवि रा सप्रयोजन उकेरियोड़ा दोष है। क्यूं के वो कोरी प्रबन्धात्मकता रे प्रति हीज समर्पित होवण रो जागा एकाधिक बातां ने खुद रे काव्य रो [illegible] बणावणो चावतो हो। जिण सूं इण काव्य री वस्तु में मार्मिकता रो अर [illegible] पटुता रो जरूर ह्रास हुयग्यो है।

वस्तु री नाटकीयता—वेलि री आधिकारिक कथा में नाटकीय [illegible] रो समावेश इण रे सौंदर्य ने इणी तराऊ बढ़ावता दीसे है। फेर भी [illegible]

'वेलि' री वस्तु सौंदर्य : [illegible]

कनी घणों ध्यान कोनी दियो है। डा. नरोतमदास स्वामी वेलि रे वस्तु व्यापार मे टणरी अलग अलग कार्य री अवस्थावां रो जरूर वर्णन कियो है पण वस्तु रा ड्रैमेटिक प्रसंग ने अर उणां रा लाभकारी परिणामां कनी वे भी कोनी देखियो है। आधिकारिक वस्तु रे कार्य या फल रे रूप में अगर रुक्मणी री अभिलाषा ने गिणां तो फलागम भी बीने हीज होवणो चाहिजे। कार्य री जुदा-जुदा अर्थ प्रकृतियां बी रे विकास री जानकारी देवें है। बीज सूं लेय ने कार्य री अवस्था तक रो हीज उल्लेख होवण सूं हीज वस्तु रो नाटकीय व्यापार सम्भव हुय सके है। 'वेलि' री कथा में अगर रुक्मणी रे पत्र लिखण री बात ने वस्तु री प्रारम्भ अवस्था गिणां तो पछे कार्यावस्था री दृष्टि सूं कार्य री सिद्धी भी बीने हीज होवणी चाहिजे। इण वास्ते जदे वस्तु व्यापारां ने देखां तो कृष्ण सूं विवाह हुयां पछे गर्भधारण ने फलागम में देखणो पड़े। पण प्रयत्न पक्ष मे एक बार सचेष्ट हुया पछे रुक्मणी घणी सक्रिय कोनी रैवे। दूजे कनी कृष्ण हीज दरअसल रुक्म जेड़ा प्रति नायक सूं जूझे ने रुक्मिणी रे साथे विवाह रे रूप मे फलागम बंने हीज हुवें। अगर इण ने प्रमाण माना तो कृष्ण ने सन्देश मिलने सूं पेला री कथा आरम्भ अवस्था में कोनी राखीजे ने इण दृष्टि सूं निरर्थक ही ठहरे। इण वास्ते कथा में प्रारम्भ सूं लेय ने फलागम रा वस्तु व्यापार न तो पूरा पूरा रुक्मणी रे प्रयासा सूं सिद्ध हुवे ने न कृष्ण रे क्रिया व्यापारां सूं हीज। कवि वस्तु री इण दशा सूं परिचित हो जिकऊ बो वस्तु रे शीर्षक रे प्रति सचेत रैयो है ने ग्रन्थ ने 'कृष्ण रुक्मणी री 'वेलि' नाम दियो है। ओ हीज कारण है के इण री वस्तु मे आधिकारिक कथा रा सगळा व्यापार उभयपक्षी है। इण वास्ते काव्य री वस्तु री आ एक बहुत बड़ी खासियत है के आ एक खास नाटकीय रूप री सिद्धि कर सकी है।

'वेलि' री वस्तु मे इवेन्ट्स या घटनावां रो अभाव है। बेगी जगां ब्यौरेवार वर्णना री भरमार है। इण प्रवृत्ति रे उद्गम री खोज करतां टेम आ बात सामी आवे के ऐ विशेषतावा उण काळ री वे सारी रचनावा मे देखी जाय सके है जिकी प्रेम ने आधार लियोड़ी है। ज्यूं जायसी रे 'पद्मावत' री प्रेम कहानी में वर्णन बहुलता है ज्यूं हीज बीसलदेवरास मे भी विवाह वर्णन, ऋतु वर्णन आदि री बहुतायत है। ऐड़ी सारी रचनावा रे मायने लोकतत्वां रो मोकळो आधार है ने ऐड़ी रचनावां में हीज घटनावां मे नाटकीयता रो चरम रूप सामने आयो है। भले ही ऐड़ो करण सूं ग्रन्था माय अस्वाभाविकता आयगी है। पण वस्तु री चमत्कारिकता अर नायक री प्रभावशालिता घणी उभर सकी है। 'वेलि' री कथा मे भी ऐ बातां उभरने सामी आई है। ऐ सगळी नाटकीय सिद्धिया अर लोकतत्वां रा आदर्श 'वेलि' रे रचनाकार री उण इच्छा कनी संकेत देवें है के कवि आपरी रचना ने कोरो प्रबन्ध री सीमा मायने बांध ने देखणो कोनी चावतो हो। वो तो कई बाता ने समेट ने खुद री बात ने न खुद रा चरित नायक रे शौर्य री बात ने कैवणी चावतो हो।

निष्कर्ष—अन्त में ऊपरला सारा पुनर्मूल्यांकन री विवेचना नें समाप्त कर नें पृथ्वीराज राठौड री 'वेलि' रै वस्तु रा सौन्दर्य रै बारै में आ बात स्थापित कर सकां के इण री सुन्दरता कोरी इण बात में हीज कोनी है के आ एक शृंगाररस प्रधान चोखी रचना है, के इण में भक्ति भावना चोखी तरा सूं भर्‌योड़ी है, के इण में राजस्थान री जातीय विशेषतावां अर लोकतत्वां रो सुन्दर समावेश कियोड़ो है, के इण में खण्डकाव्य रो सुन्दर नमूनो पेश हुयो है, बल्के इण बात में अधिक है के इण री कथा में कवि आपरै स्वाभिमान अर शौर्यवृत्ति नें बडी चतुराई सूं निभाय सकियो है। उण रै सामनें राजनीति री, तत्कालीन समाज री, हरण काव्यां री नें स्वयं नायक रै स्थापित स्वरूप आदि री घणी सारी दिक्कतां ही। वो ऐ सगां नें पार कर नें वेलि री कथा वस्तु नें सजायो है। इण वास्ते हीज 'वेलि' एक अमर रचना है।



(जागतीजोत में प्रकाशित)

राजस्थानी री जूनी पाण्डुलिपियाँ री विवेचना

जूनी पाण्डुलिपियाँ रा सम्पादन रे वास्ते कीयोड़ी कोशिशां ने दो वर्ग मांयने बाट ने देख्यो जाय सके है—पेलड़ो पोथी रो उद्धार करण री उपकार-भावना अर दूयजो स्तुतिकरण वाळी मोह भावना। पेलड़ी भावना मूं भरियोड़ी कोशिशा रे माय सम्पादक री चेष्टावां उण रे इण घमण्ड मूं भरियोड़ो व्है के वो पोथी रो सम्पादन कोनी करने जाणे उण रो उद्धार कर रह्यो है। इण वास्ते पोथी रे साथे न्याय करण री जागा वो इण घमण्ड ने मन मांयने पोषिया करे के उण सूं पेला किण भी पारखी पोथी री महिमा कोनी पहिचाण मक्यो हो। अर सेगा मूं पेळी ऐड़ो कर ने वो एकण कनी पाठका माथे एहसान कर रह्यो है दूजी कनी पोथी रो सम्पादन कर ने कवि रो उपकार कर रह्यो है। ऐड़ी कोशिशां माय पोथी री उपलब्धियां उण रो खुद रो अजित हक ही व्हैय ने मम्पादक मूं दीयोड़ी अवसर री उपकार चेतना बण जावे।

जदै के दूजी कोटि रा सम्पादक जलम भोम रे आकर्षण रे कारण या निजू भाषा रो कवि होवण रे मोह रे कारण या ऐड़ा हीज दूजा कारणा सूं कवि रे सागे अपणापो मेहसूस करे। इण कारण वो कवि अर पोथी सूं श्रद्धा भाव सूं हीज जुड़ियोड़ो रैवे। पोथी री हर ओळी ने गरिमापूर्ण मान र वो पोथी री तारीफां ने सामी लावण री हीज कोशिशां करतो रैवे। इण वास्ते सम्पादन कला रे नाम माथे वो उण रा दोषांने दूर करण में अर आपरे हिसाब मूं उण में सुधार करण री कोशिशा करतो रैवे। खुद आगे आय ने ओ सम्पादक मूरखपणा मूं पाठ मूं छोड़छाड़ करण लाग जावे। गैर जरूरी प्रसगा ने मेटण रे रूप मे, अर दोवां ने मिटावण रे रूप में मूल पाठ रे मांयने घट-बढ करतो रैवे। होमर रे काव्य रो पेलड़ो सम्पादक जेनोडोटस भी पोथी रो सम्पादन करती व्हैळा आपरे कनी सूं होमर रा लम्बा प्रघटका ने काट' र फैंक दीनो, दूजा प्रसगा ने मनमानी सूं बदळ दियो। ओ सारो कारज वो इण तरां मूं ठीक कीनो जिया वो आपरी खुदरी पोथी में करतो (विलियम स्मिथ-डिक्शनरी ऑफ ग्रीक एण्ड रोमन बायोग्रेफी एण्ड मायथोलोजी) राजस्थानी री प्रसिद्ध पोथी 'पृथ्वीराज रासो'रा वार-वार सस्करण रे मिळण रो भी कारण सम्पादका रा आपरा दायित्वा रो उल्लघन हीज है। 'वीसल देव रासो' रा सम्पादक माताप्रसाद गुप्त भी खुद रा तय कियोड़ा सिद्धान्ता सूं मिनियोड़ा अधिकारां रे

आधार माथे सत्यजीवन वर्मा सू सम्पादित पोथी रो मोटा आकार ने काट छाट ने पोथी ने लघुकाय बणाय दीयो।

'वेलि' रा सम्पादन री चर्चा करण सू पेला इण दो वर्मा रा सम्पादन कोशिशां री जाणकारी जरूरी है। आपाणे वास्ते आ परम सौभाग्य री वात है के 'वेलिक्रिसन रुक्मणी री' रा पेला सम्पादक श्री एल. पी. टेसीटरी इण रा सम्पादण करती व्हेळा दोनकें अतिया सू बच ने सम्पादक रे वास्ते अपेक्षित राग लपेट हीनता सू इण रो सम्पादन कियो है। अर टेस्सीटरी सू कियोड़ी पेलडी चेष्टावा रे कारण हीज उण रा पाछीला सम्पादक ठाकुर रामसिंह अर सूर्यकरण पारीक आपरो निजर मांय स्तुति करण रो भाव राख' र भी इण रे कनी वैज्ञानिक दृष्टि सूं हीज आगे बढ सक्या। मायड़ भोम री रचना हुयण री मोहान्धता ने पाळ 'र भी 'वेलि' रे मूल पाठ मागे मनमानी को कर सक्या।

'वेलि' रे सम्पादन रो इतिहास—अजे तई 'वेलि' रा खास छै सम्पादित रूप सामी आय चूका है। टेसीटरी सूं इण रो सम्पादन कियां पछे हिन्दी अर राजस्थानी मांय हीज इण री सम्पादन चेष्टावां कोनी हुई वरन् श्री नटवर इच्छाराम देसाई सूं 1955 ई. में गुजराती भाषा तक में इण रो सम्पादन कियो जाय चूको है। हिन्दी रा अजे तई रा प्रयासां मांय श्री टेस्सीटरी रो प्रयास जिको के रायल एशियाटिक सोसायटी सूं 1919 ई. में छप्यो, श्री सूर्यकरण पारीक अर रामसिंह रो प्रयास जिको के हिन्दुस्तानी एकेडमी सूं 1931 ई. में छप्या अर श्री नरोत्तमदास स्वामी रो प्रयास जिको के श्रीराम मेहरा एण्ड कम्पनी, आगरा सू 1953 ई. में छप्यो खास महातम राखे है। 'वेलि' सम्पादन रे प्रयासां ने परखण सारू ऐ तीन रूप हीज विशेष विचारणजोग है।

टेसीटरी सू कीयोड़ो पाठ—टेसीटरी आपरा सम्पादन प्रयास रे मांयने उपलब्ध होवण वाळी आठ पाण्डुलिपियां रे अलावा दोय राजस्थानी री अर एक संस्कृत री टीकावां रो उपयोग आधार सामग्री रे रूप में कियो है। उण री सम्पादण रीति नीति रे मांय पाडुलिपिया सूं भी मोकळो महातम उण टीकावा रो निजर आवे है जिणां ने वो काम सुरू कियां सूं पेला हीज प्राप्त कर चूको हो। इण तथ्य ने वे खुद स्वीकार कियो है। इण टीकावा रे मांय टेसीटरी पोथी री भरोसेमंदगी पायी हीं क्यूंके ऐ तीनऊं 'वेलि' रे रच्या रे पचास बरसां मांय मांय हीज लिखीजगी हीं (अर्थात् सवत् 1637+50 = 1687 सूं पेला पेला ऐ टीकावा सामी आय चुकी हीं) अर इण वास्ते पूरी तरा सूं विश्वस्त कोनी होवतां थकां भी टेसीटरी ओ भी माने है के ऐ तीनां मांय सू एक या दो तो खुद पृथ्वीराज रे जीवतां थकां हीज लिखी जाय चूकी ही। जिण मांय सू पेलीवाळी ढूंढाडी टीका रे लिखी जावण री सम्भावना

वो संवत् 1673 मूं पेला-पेला किया करे। हालांके ओ सवाल अणसुळझियोड़ो ही रै जावे है के कवि रे खुद रे जीवणकाळ मांय लिखी जावण भर सूं हीज वे प्रमाणिक कीया हू जावे है? म्हाणी इण धारण री पुष्टि इण बात सूं भी हुय जावे है के उण रे जीवणकाळ माय ही टीकावा रे निर्माजन रे बावजूद पोथी रो असल रचना-काल अजे तई निर्धारित कोनी हू सक्यो है। टीकावां रो आपसी अंतर्विरोध इणां ने राजस्थानी रा जूना साहित्य रे माथे लगायो जावण वाळो प्रश्नचिह्न 'अप्रामाणिकता या असंदिग्धता' रे आरोप सू बचाय'र कोनी राख सके। इण वास्ते वे मूल पाठ रा निरधारण खातर सहायक कीकर हुय सके आ बात इण विवेचन सूं आपो-आप खड़ी हुय जावे।

उपलब्ध हुवणवाळी सगळी टीकावां, पाडुलिपिया माय सूं टेसीटरी उगूणे राजस्थान मांय लिखियोड़ी ढूढाड़ी टीका ने हीज सेगा सूं ज्यादा प्रमाणिक मानी ही। अर 'बेलि' रा लारला सम्पादकां भी टेसीटरी री चेष्टावां माथे निर्भर रेय'र सम्पादन रो कारज कियो है। इण सू आ सिद्ध व्हे है के आज जिण रूप में 'वेलि' आपा ने मिले है उण रो मूल पाठ रे रूप में उगूणे राजस्थान में लिखियोड़ी ढूढाड़ी टीका हीज पोथी री पाठ नें तय करणवाळी पाण्डुलिपि सिद्ध हुवे। पण टेसीटरी खुद (उण माथे पूरी तरा सू निरभर रेवतां थकां भी) उण टीका सूं आणें पूरा निश्चित कोनी हुवे। उणां री आ बात ओ इशारो करे है के इण टीका मे वे मोकळा घट-बढ पायो हो अर जठे उणां ने की भी अस्पष्टता दीसी उठे वे खुद आगे आय ने संसोधन कीयो है। टेसीटरी री इण भांतरी सफाई इण तथ्य कने आपां ने ले जावे है के जिण नींव माथे 'बेलि' रे सम्पादन रो आलीशान महळ खड़ो है उण ढूढाड़ी टीका रे मांयने हीज थोड़ी बोत ऐडी कमजोरिया है जिकी के 'बेलि' रो मौलिक पाठ सूं आपा ने छेड़े करतो जावे।

टेसीटरी री सम्पादन कला री एक औरू कमजोरी भी है जिण कनी आपारो ध्यान खेंचणी खातर पारीक जी आपरी पोथी री भूमिका माय केह्यो है– 'आपां ने स्वर्गीय डा. टेसीटरी रो धन्यवाद करणो चाइजे के जिका पेलापोत 'बेलि' री महिमा सू 1917 ई. मांय मूल पोथी छपवायी अर उण री एक सारगर्भित भूमिका भी लिखी। पण डा. टेसीटरी डिंगल भाषाशास्त्र रा आघा पड़दा नोट देयर छोटी सी भूमिका भी लिख दीनी इण सूं वे साहित्य प्रेमियां री उत्कण्ठा तो बढायी पण सागे सागे इणा रे मना मायने आ अशका भी भर दी के सायत इण काव्य ने औरूं सरल अर भणनजोग बणावणो मुश्कल है।' (भूमिका पृ. 52) पारीक जी री आ बतळावण टेसीटरी रा उण दोष कनी इशारो करे जिण ने म्हे इण निबन्ध रा सुरू-पांत में हीज पोथी रो उद्धार करण री उपकार रे भावना रे रूप में मांडियो है।

उपरला विवेचन सूं इण वास्ते आ बात सामी आवे है के टैसीटरी री सम्पादन कोशिशां पूरी तरां सूं निर्भ्रान्त कोनी है। इण कारण उणारी कोशिशा रे बावजूद दूजी ओरूं कोशिशा री भी जरूरत महसूस हुई अर इण कारज ने हाथ में लेवण रो श्रेय ठा. रामसिंह अर श्री सूर्यकरण पारीक ने है।

हिन्दुस्तानी एकेडमी सूं प्रस्तुत कियोड़ो पाठ—ठा. रामसिंह अर पारीक जी 'बेलि' रा मूल पाठ तई पहुंचण री खातर चार हस्तलिखित पाण्डुलिपियां ने अर टेसीटरी री रायल एशियाटिक सोसाइटी सूं छप्योड़ी पोथी ने आपरी आधार सामग्री बणायी। इण वास्ते ऐ दोनुई 'बेलि' रा पाठ सम्पादन सूं पेलाहीज आपरो ओ मानस बणाय चूका हा के उणां ने इण पांच पाठ सामग्रियां मांय सूं हीज मूल पाठ खोजणो है। पण ऐ पांचऊ रे माय ने मोकळो पाठ भेद देख'र इणा भी टेसीटरी रे जिया हीज पाठ सम्पादन रा वैज्ञानिक तरीका ने अपणावण री जागां निज रे निर्णय ने मोकळा महत्व दियो है। इण वास्ते जदे पाठ सम्पादन रो काम करतां ऐ लोगां रे सामी उलझण पैदा हुई उठे ऐ लोग निज रा विचारा ने हीज पाठ सम्पादन रो आधार बणाय दियो। उणां खुद कैयो है—'म्हाणी सुविधा सूं म्हां लोगा ने जिको पाठ सेंगाऊ सरल अर उपयुक्त लाग्यो उणीं पाठ ने इण पोथी में स्वीकार लियो है। बाकी पाठान्तरा ने जिज्ञासू पाठकां री सूचना अर मनन रे वास्ते अठे पेलड़ा दोहला रो नम्बर देय ने अलग सूं मांड दियो गयो है।' (पृ. 273) इणा री आ बतळावण दोनऊ सम्पादका री ईमानदारी ने तो उजागर करे पण इणने वैज्ञानिक कोशिश कोनी केह्यो जाय सके। सम्पादन री जिम्मेदारी ने 'सुविधा' रे रूप में नी लेवणी चाईजे। इण रे बावजूद इणा री कोशिश इण खातर महत्व राखे है के ऐ लोगां खुद री सुविधा सूं भी जादा पाठका री सुविधा री बात ने जादा तर्क संगत ढंग सूं सामो रखी है। ऐ लोगां इण तथ्य ने नी भुलाय सक्या के 'बेलि' री भाषा साहित्यिक डिंगल है जिकी के क्लिष्ट हुवण रे कारण हिन्दी वाळा रे वास्ते हीज दोरी कोनी हुवे खास राजस्थानी भाषा जाणन वाळां रे वास्ते भी आसानी सूं समझण जोगी कोनी है। (पृ. 50.)

ऐ दोनऊं सम्पादका री कोशिश मोकळा कारणा सूं उल्लेख जोगी कोशिश बण सकी है। सेंगां सूं मोकळा उल्लेख जोगी बात आ है के इणां आधारभूत सामग्री री प्रमाणिकता ने जाचणीं जरूरी समझियो हो। जिकी पांच प्रतियां रे आधार माये ऐ लोगां पाठ निर्धारण कीयो हो ऊंणा रे वास्ते ऐ कह्यो है के—'वास्तव रे माय वे हीज प्रमाणिक प्रतियां रेह्यी है। निर्माण काल रे हिसाब सूं भी वे प्रतिष्ठित अर प्रमाणिक समझीजी है।' (पृ. 273) इण वास्ते ऐ लोगां पूरी तरे सूं टेसीटरी रे पाठ माथे हीज टिकयोडा कोनी रेह्या है दूजजा पाठान्तरां रो लाभ भी उठायो

हो। पण टीकावा अर हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ रे प्रमाणिकता रो कोई ठोस पैमानो ऐ कोनी दियो है। कोरी मोरी जूनी होवण री बात ने हीज ऐ पोथी रे प्रमाणक हूवण रो आधार मानियो है—'म्हाणी जांण में तो मेंगां सू जूनी टीका हीज मूलार्थ रे विषय माय प्रामाणिक केह्यो जाय सके है क्यूंके समसामयिक हूवण रे कारण अपणे आप हीज वा 'वेलि' रा भांवा ने जादा सफाई सू समझावण में सिमरथ हूवणी चाइजे।' (पृ. 51) समसामयिकता ने हीज यू प्रमाणिकता रो एकलो कारण मानण रो भरम टेसीटरी भी पाळ चूका हा। इण हिसाब सूं ऐ दोनऊ संपादक भी उणीज बात ने पुष्ट कर ने आपरी सम्पादन कला री कमजोरी खुद हीज प्रकट कर दीवी। खासतौर सूं उण टेम जदे के ऐ दोनऊ सम्पादक भी ढूंढाड़ी टीका री मोकळी कमजोरियां जाण'र भी उणा ने सिरफ चलताऊ ढग सूं प्रकट कर दी है। ऐ दोनऊं सम्पादक मारवाडी अर ढूंढाडी दोनऊ टीकावां ने पृथ्वीराज री जीवणवेळा री हीज रचनावा मान'र भी ढूढाड़ी टीका ने मोकळो महत्व दीयो है। उणां रे हीज शब्दा मांय 'ओ भी सम्भव है के ढूढाडी अर मारवाडी दोनऊं टीकावां कवि रे जीवण-वेळा में हीज बणगी व्है, पण वे है दोनऊ सुतंतर अर उण दोनो मांय भी ढूढाड़ी टीका जादा जूनी अर प्रामाणिक जचे है।' (पृ. 52) म्हारे जांण तो इण आधार सामग्री रे निरधारण रे वास्ते ऐतिहासिक, भाषा-वैज्ञानिक अर साहित्यिक परम्परावां री तुल्य भावनावां माथे घणों ध्यान देवणो चइजतो कोरो भरोसो प्रकट कर देवण भी सू हीज पाण्डुलिपियाँ प्रामाणिक को हुय जावे।

इण दोनां री सम्पादन चेष्टा टेसीटरी रे क्यू छोटी टिप्पणिया अर थोड़ा घंत पाठ भेदा भर सूं ही जुड़'र पूरी कोनी हुयगी है। इणां गम्भीर चेष्टावां बाळी सम्पादन कला दरसायी है। इण लोगां पोथी री लाम्बी भूमिका रे रूप में कवि रे व्यक्तित्व री टीका रे अलावा 'वेलि' री टीकावा, उण रो नामकरण, उण रो प्रतिपाद्य निरूपण आदि रो भी मोकळो प्रयास कियो है। सम्पादन रे कर्तव्यां रे पालन सारूं ऐ 'वेलि' रा मूल पाठ रे अलावा सगळा पाठान्तरा ने उणां रा हिन्दी नोट ने, शब्दकोस मेलण रे सागे-सागे सैंगां सू उल्लेख जोगो कारज ओ कियो है कि इणां वेलि री ढूढाड़ी अर संस्कृत टीकावा ने पोथी रे सागे हीज छाप्यो है। इण सू इणांरी सम्पादन चेष्टा घणी प्रामाणिक अर भरोसेमंद बण सकी है। पाठान्तरा ने भी अलग सू उल्लेख कर ने ऐ आपरी कोशिशा ने घणाखरी वैज्ञानिक बणावण मे सफलता पायी है।

श्री नरोत्तमदास स्वामी सू प्रस्तुत पाठ—श्री नरोत्तमदास स्वामी जद 'वेलि' रो सम्पादन कीयो उण टेम तई इणरा दोय सस्करण सामी आय चूका हा। इण वास्ते इणां रे सामी ज्यादातर वे दिक्कतां कोनी ही जिकी के आगला सम्पादका रे

सामी ही। इण वास्ते स्वामी जी जिको प्रयास कीयो है उण मे पेलड़ापन री खोज चेप्टा नीं हूय'र विश्लेपण करण री आलोचक री निजर मोकळी ही।

स्वामी जी 'वेलि' रे मूल पाठ रे मायने दोय मुद्दा उठाया है—ऐणा पेलो मुद्दो जिको के सम्पादन कला रे हिसाब सू घणो वैज्ञानिक है, ओ है के सांची अरथां माय 'वेलि' रा छन्दां री संख्या कित्ती है। इणां पांच जुदी जुदी प्रतिया रे आधार माथे 'वेलि' रा छन्दा री असली गिणती माथे सवाळ खड़ो करतां कह्यो है—'टेसीटरी री 'वेलि' मांय छन्दां री गिणती 305 है। रामसिंह अर सूर्यकरण पारीक सूं सम्पादित संस्करण रे मायने टेसीटरी रो हीज अनुकरण करियो गयो है। बाद में जिकी प्रतियां मिळी (अर ऐ प्रतिया 'वेलि' री सेंगा सूं जूनी उपलब्ध प्रतियां है) उणां में छन्दा री गिणती 301 या इण सू भी कम मिले है। उक्त संस्करणा रो 305 वों पद्य जिण मायने रचना रो सवत् दियोड़ो है, निश्चे में प्रक्षिप्त है, जेड़ो के ऊपर बतायो जाय चूको है। 304 वों पद्य सांखला करमसी री क्रिसन जी-री बेलि मांयने भी मिळे है। करमसी पृथ्वीराज सू पेता हूयो हो, अर क्रिसन जी री 'वेलि' री हस्तलिखित प्रति सवत्—1634 रो लिखी मिळी है। इण वास्ते ओ पद्य भी पृथ्वीराज री रचना कोनी जाण पड़े। संवत् 1969 री प्रति रे मांय भी, जिकी के पृथ्वीराज रे भतीजा भाणजी रे वास्ते लिखिजी ही, ओ पद्य कोनी मिळे। पद्य सख्या 126, 127 अर 176 भी जूनी पोथ्या में कोनी मिले। संवत् 1673 री सटीक प्रति मायने भी इणा री टीका कोनी मिले। सं. 1667 री प्रति मे ऐ पद्य हासिया में लिखियोड़ा है। ऐ पद्य भी 'वेलि' रा मूल अंश कोनी है। इण वास्ते 'वेलि' रा पद्यां री सख्या 300 रैय जावे है।'

जिकी ढूढाड़ी टीका ने टेसीटरी अर थी पारीक जी पाठ निर्धारण रो आधार बणायो हो उण मांय सांची मे छन्द संख्या 126, 127 अर 176 री टीका कोनी कीयोड़ी है। अर ग्रन्थ री रचना ने परकट करण वालो आखिरी वो 305 वों छन्द भी कोनी है। इण खातर ई बात ने प्रमाण मान'र स्वामी जी इण तीनक छन्दा ने प्रक्षिप्त मान लिया है। पण हिन्दुस्तानी एकेडमी वाळी प्रति में हीज ओ भी स्पष्ट कियो गयो है के 'संवत्–1673 री ढूढाडी टीका मे कोरा 290 दोहलां तक री टीका पायी जावे है अर इण सू आगे रा 14 दोहलां रो मूल पाठ दियो गयो है। टीका कोनी करीजी है।' (पृ. 815) इण वास्ते कोरी टीका कोनी की जावण रे कारण स्वामीजी पोथी रा 126, 127 अर 176 वा छन्दा ने प्रक्षिप्त मानलिया है तो इणी मानता रे कारण आखिर रा 14 छन्दा ने भी, जिणां री भी टीका कोनी कियोड़ी है, प्रक्षिप्त मानणो चाईजे। पण इणां ने ओ मानण री हिम्मत कोनी हुई। क्यूं के ऐड़ो किया सू वे सगळा छंद प्रक्षिप्त हुय जावे जिणा में 'वेलि' रो

रूपक दियोडो है । अगर ओ रूपक हीज प्रक्षिप्त है, जिण री की काफी गुंजाईश है, तो पछे 'वेलि' रा प्रतिपाद्य निर्धारण रे वास्ते आपाने नूंवा सिरा सूं सोचणों पड़ेला । इण रे बारे में आगे अलग सूं चरचा करणों ठीक रेवेला अठे तो सिरफ आ बात मान लेवणों हीज घणों रेवेला के स्वामी जी भी पोथी रो सम्पादन करती व्हेला सांच सूं दूर हटग्या है ।

'वेलि' रे मूल पाठ रो निर्धारण—'वेलि' रे सम्पादन रे वास्ते कियोड़ी सगळी कोशिशां ने देख ने आ बात साफ हूय जावे के उगूणें राजस्थान में लिखियोड़ी ढूंढाड़ी टीका हीज 'वेलि' रा पाठ निरधारण रे हिसाब सूं सेंगां सू मोकळो महत्व राखे है । ठा. रामसिंह अर श्री सूर्यकरण पारीक इण टीका ने आपरी पोथी में छाप'र तारीफ जोगो कारज कियो है । इण टीका रे वास्ते टेसीटरी ओ संकेत दियो है कि इण मांय मोकळो परिवर्तन अर संशोधन हूया है– अर हिन्दुस्तानी ऐकेडमी वाळा बीनऊ सम्पादक छंद संख्या 126, 127, 176 अर 209 सू लेयर 304 तक रा आखिरी 14 दोहलां रे वास्ते आपा ने सूचित किया है के टीकाकार उणा री टीका कोनी की है । स्वामी जी इणी तर्क रे आधार सू वेलि रा पांच छन्दां ने जाळी मान'र उणा ने पोथी सूं निकाल दिया है ।

तीनऊँ सम्पादकां री चेष्टावा ढूढाड़ी टीका माथे टिकियोड़ा हावेता थका भी इण मांय मोकळी कमजोरियां हूवण री मोकळी सम्भावना देखे है । अस्तू, ढूंढाड़ी टीका रे बारे में चोखी तरासू विश्वस्त हुया बिना 'वेलि' रो आज मिलण वाळा पाठ ने प्रामाणिक केय सकणो सम्भव कोनी व्है । इण वास्ते अठे उण रो थोड़ो सो विवेचन करणो जरूरी है ।

टेसीटरी अर श्री पारीक दोनऊ ही इण ढूढाड़ी रो रचना काल सवत् 1673 माने है । ओ संवत् इणी दोनो री इण मानता री पुष्टि करे है के ऐ लोगां बेलि रो रचना काल (1637 सवत्) रे पचास सालां रे मांयने मायने उण री टीका भी सामी आय चूकी ही । पण ऐ विधियां हीज टेसीटरी री इण धारणा ने गलत सिद्ध करे है के टीकावां पृथ्वीराज री जीवण वेळा माय हीज सामी आय चूकी ही क्यू के पृथ्वीराज री मृत्यु रो टेम सगळा विद्वाना एकमते सू संवत् 1657 बतळायो है । इण वास्ते जदे आ टीका कवि री मृत्यु रे पछे लिखी गई है तो पछे आ बात अधिकार सूं को केह्री जाय सके है के आ टीका कवि री समसामयिक है । आ मान लिया पछे इण टीका रे वास्ते वो अटूट विश्वास कोनी रेवे के समसामयिक हूवण मात्र सूं हीज आ प्रामाणिक भी है । इण वास्ते इण टीका ने अजे तई जित्ती प्रामाणिक मान'र देखता हा उण तरीका सूं नीं दीख'र इण ने तटस्थ हूय'र देखणो चाईजे ।

इण टीका सू खड़ो हूवण आळो दूजो सवाल ओ है के इण टीकाकार बीच बीच में थोड़ा सा छन्दां री टीका क्यूं कोनी की है ? जड़ो के पेलां साफ कीयो जाय चूको है कि– इण मे 126, 127 अर 176 वा छन्दां री टीका कोनी कीयोड़ी है। इणी भांत छद सख्या 291 रे पाछे रा भी सगळा छन्दा री टीका छोड़ दीवी है। स्वामीजी रे तर्का रे मुजब अगर आपा ऐ सगळां ने प्रक्षिप्त मान लेवां तो पोथी रे मुजब मोकळा नूवा सवाल खडा हूय जावे। उणा ने समझण सारू पेला कथा रा दीयोड़ा क्रम ने अर कवि सूं दीयोड़ी छन्दा री व्यवस्था ने समझणो जरूरी है।

पोथी मे कृष्ण अर रुकमणी री कहाणी 278 वा छन्द माथे आय ने खतम हुय जावे। उण रे पाछे 279 वां छन्द सूं लेय 290 वा छन्द तई जूनी परम्परा रे मुजब पोथी रो महातम बतलायो गयो है। उण रे पाछे 219 वा छन्द सू लेय ने 304 वा छंद तई 'बेलि' रो रूपक दीयोडो है। 305 वें छन्द मे बेलि री रचना संवद् दीयोडो है। इण वास्ते जदे आपां बेलि रा लारला 15 छन्द प्रक्षिप्त मान लेवां तो इण रो अरथ हो हूय जावे के बेलि रो रूपक, प्रकट करणवाळा सारा छन्द फरजी है। अर इण रे पोथी सूं हटावण रो अरथ ओ हूवें के फेर पाछे इण रूपक सूं प्रकट हूअण वाळो आध्यात्मिक रूपक बेळि रो मूळ स्वर कोनी रैय जावे। अर्थात्–बेलि भक्ति परक रचना नी हूय'र शृंगारिक रचना भर है। फेर पछे इण में धरम भावना ढूढणां फिजूल व्हे जावे।

इण खातर पोथी रे वास्ते टीकाकार रा खुद रा मन्तव्या री ओळखाण करणों जरूरी है। बेलि रो टीकाकार निश्चै ही कट्टर धरम भावना रो लेखक हो। इण री गवाही इण रे द्वारा कीयोड़ी टीकावा रा आखीर रो छन्द (सख्या 290) देवे है। जिण मे कवि पृथ्वीराज सू गगा ने 'एकदर्शीय' अर बेलि ने सार्वदर्शीय रे बड़पोलापण रे कारण उणां इणरी टीका तक कोनी कीवी है। आपरे हिसाब सूं टीकाकार कवि ने गगा री निंदा करतां देख'र उण ने माफ कोनी कीयो है अर टीका करण री जागां ओ लिख राख्यो है—'गंगा जी री निंदा करी छै। तार्कलियां या दुवाला को अरथ मैं नही लिख्यो छै' ऐड़ी करड़ी धरम भावावाळो टीकाकार बेलि रा आध्यात्मिक पक्ष ने प्रकट करणवाळो रूपक ने क्यूं छोड दियो आ बात विचारण जोग है। म्हारी समझ में तो ओ रूपक पृथ्वीराज कोनी लिखियो हो। ओ हिस्सो प्रक्षिप्त है। इण वास्ते ढूंढाडी टीकाकार रो अठे मौन व्हे जावणो जांच सकें।

बेलि रे प्रतिपाद्य रो निरधारण—अगर आपां बेलि रा रूपक ने फरजी अंश मान लेवां तो पछे उण रे प्रतिपाद्य ने तय करण में मोकळी दिक्कतां खड़ी हूय जावे। जिण रूपक रे आधार माथे अजे तई बेलि ने भक्ति भाव री रचना मानियो जाय रह्यो हो वे सगळा तर्क झूठा पड जावे। अर आपां ने मजबूर व्हैय ने एक

शृंगारिक रचना मानणी पड़ेला। तदे आपां ने वेलि रा प्रतिपाद्य ने ढूंढण खातर दूजा स्रोतां रो सहारो भी लेवणों पडेला। अठे वेड़ा तीन स्रोतां ने मांडणों अर विवेचित करणों जरूरी है जिणा रे आधार सूं कोई भी सम्पादक पोथी रे प्रतिपाद्य रो आसानी सूं निरधारण कर सके। वे वातां इण मुजब है—

(1) दूजी पोथ्यां सू 'वेलि' रा रूपक री तुलना।
(2) कवि रे व्यक्तित्व सू उण री रचना दृष्टि ने पकडण री चेष्टा।
(3) पोथी रा तात्पर्य निरणे रा आधरां सू उण रे प्रतिपाद्य रो निरधारण।

पोथी रे आखिर में दिया जावणवाळा दूजा कविया रा रूपका सूं 'वेलि' री तुलना कर ने उपरला तथ्यां ने परखियो जाय सके है। दूजा साक्ष्यां सू ओ मालम व्है के पृथ्वीराज रा पैला जायसी अर उण रा समकालीन महाकवि गोस्वामी तुलसीदास भी आप आप री पोथ्या माय कथा रो आध्यात्मिक रूपक दीनो हो। पण जठे तुलसीदास आपरा 'रामचरितमानस' मे दीयोडो मानसरोवर री सात सीढ़िया रो रूपक कथा रा प्रामाणिक आध्यात्मिक भरोसो दिरावे है उठे जायसी रे 'पद्मावत' रे आखिर में दीयोड़ा रूपक माये विद्वानां मोकळा ऐतराज किया है। 'वेलि' रा रूपक री भी इसी हीज हाळत है। क्यूंके इण में सांग रूपक रो चोखी तरह निभाव कोनी हुयो है अठे आ बात ध्यान देयणजोग है कि पृथ्वीराज आपरी इण पोथी मे मोकळा सांग रूपक खड़ा कीया है। जिणां में वसन्त अर शिशिर रो रूपक (229 सूं 238), युद्ध अर विरखा रो रूपक (117 सू 129) तो बेजोड़ रूपका में गिणिया जाय सके। इण सूं ओ सिद्ध हुवे है के पृथ्वीराज रूपक चित्रण मे मोकळो सिद्धहस्त हो। पण इण कवि री आपरी पोथी रा खास रूपक चित्रण में गड़बडीज जावणों मोकळा सन्देहां ने पैदा करे।

रूपका रे सम्बन्ध में एक ओरू बात माथे भी अठे ध्यान देवणों जरूरी है के पृथ्वीराज सूं पैला रा अर उणरा समकालीन जिण कविया 'वेलि' काव्य रच्या हा उणां कोई भी पोथी रे आखिर मे ऐड़ो आध्यात्मिक रूपक कोनी दीयो है। सांगला करम सी रूणेचा री 'किसन जी री वेली' (सवत्–1680 रे लगेटगे), चूंडोजी री' वाणिक वेलि' (पृथ्वीराज सूं पैला री पोथी), महेसदास री 'रघुनाथचरित नवरस वेलि' (संवत् 1876), किसनऊ री 'महादेव पार्वती री वेलि' (1660 रे लगेटगे) इण सगळी पोथ्यां मे पोथी रे आखिर मे रूपक कोनी दीयोड़ो है। ऐ सगळी पोथ्या कथा रे महातम परकट करण रे सागे हीज पूरी हुयगी है। इण वास्ते आ बात थिरपी जाय सके है के 'वेलि' ग्रन्थां री परम्परा पोथी रे आखिर में आध्यात्मिक रूपक देवण रो इसारो कोनी करे। 'वेलि' रो ढूंढाड़ो टीकाकार भी इण छन्दा री टीका कोनी

करी है। इण सूं ई विचार ने मोकळी ताकत मिळे के बेलि रा ऐ सारा छन्द प्रक्षिप्त हुय सके है।

कवि रो व्यक्तित्व—पृथ्वीराज रा व्यक्तित्व ने खड़ो करण मांय भी म्हने राजस्थानी विद्वाना री एक मोंत बडी कमजोरी निजर आवे है। टेसीटरी सूं लेय'र वेलि साहित्य माथे काम करण आळा डा. नरेन्द्र भानावत तई रा सगळा समीक्षकां, सम्पादकां पृथ्वीराज रा व्यक्तित्व नें खडो करण खातर किंवदंतियां रो सहारो लीयो है। ऐ किंवदंतियां उणरा चरित्र रा दो पहलुवां – वीरता अर भक्ति भावना - ने स्पष्ट करण खातर भेळी करीजो है। पृथ्वीराज री वीरता अर निडरता ने सामी लावण री खातिर राणा प्रताप ने लिखियोडो उणा रो कागद, आपरा विद्रोही भाई रो (अकबर रो विरोध करने) समर्थन देवणों, नारोज रा मेला मांय पृथ्वीराज री लुगाई सूं अकबर ने फटकारणो, चारण डावड़ी राजबाई रो प्रकट हुय ने पृथ्वीराज री लुगाई री रक्षा री खातिर शेरनी बण'ने अकबर करने जावणों आदि किंवदंतिया नें आखिरी मोच मान'र विद्वाना पृथ्वीराज रो व्यक्तित्व खड़ो किया है। इण भात पृथ्वीराज री भक्ति भावना नें दरसावण खातर प्रमाण रे रूप मे लक्ष्मीनाथ जी री शोभा यात्रा री कल्पना, आपरे मरण री भविष्वाणी, द्वारका यात्रा री टेम खुद भगवान रो सेठ रा भेष मे आवणो आदि किंवदंतियों में पूरो सांच बणाय दियों गयो है। पण किंवदंतियां रे आधार माथे मनघडन्त वातां ने तूल देवणों साची साहित्यिक कोशिशां कोनी बण सके। असल में ओ कवि रसिक स्वभाव रो कवि हो। तीन-तीन ब्याव करण रो प्रमाण अर माथा रा सुफेद केस ने तोडती व्हैला लुगाई ने मूंडो फेर'र हसण री व्हैला हिन्दी रा कवि केशवदास ज्यूं हीज निराश हुय ने केवणो—

पीथक धोळा आविया, बहुली लग्गी खोड़
कामण मत्तगयंद ज्यूं, ऊभी मुक्ख मरोड़।

आदि प्रमाण इण कवि ने शृंगारिक अभिरूचि आळो कवि सिद्ध करो। [illegible] में 'बेलि' रो आध्यात्मिक रूपक कवि रै व्यक्तित्व सूं मेल [illegible] आपा इण तथ्य ने मान लेवां तो पाछे 'बेलि रो प्रतिपाद्य [illegible] हीज सिद्ध हुवै। अर यूं ढूंढाडी टीकाकार सूं रूपक [illegible] टीका नी करण री बात भी तर्क सूं समभाई जा सके है।

बेलि रो तात्पर्य निर्णय—पोथी रो तात्पर्य [illegible] करणवाळा सिद्धान्ता रे मुजब बेलि री परख करण सूं भी आ वात [illegible] है के इण कवि री पोथी लिखण रो खास अभिप्रेत शृंगार री पोथी [illegible] भक्ति री लिखयो कोनी क्यूंके पोथी रे सुम्पोत में हीज वो केवो है—

राजस्थानी री जुनी पाण्डुलिपियां री [illegible]

सुखदेव व्यास जैदेव सरिका, सुकवि एक ते एक सन्थ
स्री वरणन पहिले कीजै, गूथिये जेणि सिंगार ग्रन्थ

आ बात कवि री श्रृंगाराभिमुखता ने प्रारम्भ में ही थिरपे। पोथी रे विचाळे कृष्ण-रुक्मिणी रा मिळण खातिर षडऋतुवां रो वरणन करीजियो है। पोथी रो नांव भी नायक नायिका रे प्रेम री बेल रे रूप में दिरीजियो है। ऐ सागळी बांता इण पोथी ने शुद्ध श्रृंगार री रचना हुवण रो प्रमाण प्रकट करे है।

निष्कर्ष—'बेलि' सूं मिलणवाळा अतसांख्यां, कवि रो व्यक्तित्व अर बेलि काव्यां री परम्परा आपां ने इण तथ्य तईं पहुचाय देवे के 'वेलि' रा रूपकवाळा छन्द सायत प्रक्षिप्त है। ढूंढाडी टीकाकार इणां री टीका कोनी की है। आ बात भी इण विचार ने थिरपण री प्रेरणा देवे है। इण वास्ते 'वेलि' रा दूजा पांठा ने इण आपत्तियों रे रेवतां स्वीकार करणो सम्भव कोनी हूय सके। इण रे अलावा वे तथ्यां री खोज भी की जावणी जरूरी है के इण री टीका में टेसीटरी कई परिवर्तन, संशोधन संवर्द्धन कीया हा। उण जागांवा माथे टेसीटरी अवमकर आपरा निजरा विचारां ने थिरपिया व्हैला। म्हारी समझ में तो एक विदेशी आदमी राजस्थानी री सांस्कृतिक धरोहरां सूं भरियोडी पोथी रे सागे कित्तो न्याव कर सकयो व्हैला इण री खोज करणों भी जरूरी है। क्यूं के किणी भी भाषा री वेसड़ी जाणकारी रे रूप मे कोई भी विदेशी भाषा री सांस्कृतिक परम्परावां सूं जुडाव माड'र उण ने समझण री जागां शब्दां रा साधारण अरथां सूं जुड़ण री घणी कोशिश किया करे। इण खातिर टेसीटरी री कोशिशां ने आंधी श्रद्धा सूं रेवण री जागां परख री विवेक भावना सू लेवणों जरूरी है। 'वेलि' रा मूल पाठ री पिछाण री खातर इण बात री खोज भी जरूरी है के इण री ढूंढाड़ी टीका ने कोरा विश्वास नें आधारा सू जूनी मानणी चाईजे के भाषा शास्त्र अर ऐतिहासिकता रे आधारा माथे मानणी चाईजे ? 'वेलि' रा मूल पाठ री पिछांण रे वास्ते ओ जरूरी है के उण रो मूल्यांकन ऊपरला सवालां रे मुजब कियो जावे। इण सूं हीज 'वेलि' री साची साहित्यिकता आपां सामी लाय सकाला।

□

(राजस्थानी साहित्य अकादमी रे वास्ते पत्र वाचन)

१९८३ री पुरस्कृत पोथ्यां : एक बेबाक टीप

पुरस्कार पोथ्या री स्तरीयता री पिछाण करावे के कोनी करावै ओ सवाल घणो पुराणो है। पुरस्कार रै ब्याज सूं मानवीय अनुभवां रो ऊजलो रूप सम्मानित हुवै के कोरो मोरो रचनाकार हीज आनन्द पाय'र रै जावे ऐड़ा मोकळा सवाल पुरस्कारां रे साथै हीज हरमेस सामी आवता रैवे। राजस्थानी साहित्य मांय आलोचना री पांगळी हालत देखतां थकां अजे तई ऐड़ा सवालां री चरचा कम हुई है।

राजस्थान अर राजस्थानी दोनां रे वास्ते अकाल कोई अजूबो कोनी है बल्के ओ तो अठे री पिछाण रो एकूको आधार है। जमी ने आली अर करण आळा छांटा सूं ज्यू जमी री प्यास कोनी बुझ सके इयांहीज भरती री दोय चार किताबां सूं राजस्थानी साहित्य री निजू पिछाण कायम हुयनें उण रो टोटो कम कोनी हुय सके। इण वास्ते राजस्थानी साहित्य मांय तो ओ सवाल घणो महत्व राखे है के इण रा साहित्य री पिछांण रो आधार आखिर कई है ? अठै अनुभवां रा उजास ने'के रचनावां री स्तरीयता ने'के जीवण रा साचा चितरामां ने'के जिनगाणी रो जगामग रूप ने'के मिनख री आपरी चेतनावा रे विस्तार ने आखर किण ने ध्यान में राखर पुरस्कार दिरीजे है। वर्षां के अजे तई रा हालातां ने देखतां तो आ बात थिरपीज सके है के अठे रचनावां पुरस्कारां रे लारे भाज रैयी है। पुरस्कार रचनावां रे लारे चालता कोनी दीसे। रचना रो हक रचनाकार ने अधिकारी कोयनी बणावे पुरस्कार उण ने अधिकारी बणवतो दीसे है। पुरस्कृत होवण आळो रचनाकार तो पुरस्कार मिलियां पछै आपरे सिरजण ने घणखरो गौरव देवण लाग जावे पण दूजी कानी ओरां रे मना मांयने संसै रो बीज बोयीज जावे। वे रचना री स्तरीयता ने ताक माथे म्हाग-र लेखक रे व्यक्ति रूप ने देखण लाग जावे। इण बात री अपूठी कोसिसां [illegible] जावे के पुरस्कार ने किणी तरऊं विवाद रो मुद्दो बणाय दियो जावे। [illegible] दोनऊं पक्ष इण बात ने जरूर अण-देखणी करें के इण मूं रचनाकार [illegible] मूं सगळै साहित्य रो कई लाभ हुय रह्यो है। इण वास्ते पुरस्कार री [illegible] सवाल भी पैदा करण लाग जाया करे। आज पुरस्कार साहित्य [illegible] बुलन्द करे है के विवादी आवाज ने ? पुरस्कारां मूं [illegible] री बात सामी आवे है के साहित्य रे सिरजण री प्रेरणा [illegible]

मोरो पोथ्या तई हीज थम्योड़ो रै जा वे के सागीड़ी होड करणआळी भावना ने जनम देवे ? ऐड़ा और भी सवाल सामी आयर विचारां री सामग्री सामी ले आवे।

ऊपरली विवेचनावां सूं ओ विचार माडणो गलत हुवे के राजस्थानी मे पुरस्कृत पोथ्यां स्तर सूं गिरयोड़ी है। दूजी कनी पुरस्कृत हुय जावण सूं हीज रचना ने श्रेष्ठतम् जाण लेवणो भी गलत है। रचनाकार री अनुभूति रो सम्मान थापो आप साहित्य री जीवन चेतना ने पकड़ण आळी चेतना रो सम्मान हुया करे इण मांय विवाद री की भी गुजांयश कोनी है। राजस्थानी रो आज रो रचनाकार संस्कृति रा सतरंगी आकर्षणां ने छोड़'र जुग सत्य ने चित्त में धार रैह्यो है। उण री लेखनी रा ऊजला आखर मिनख रे अर उणरा जीवन रै ओळूं दोळूं घूमण लागग्या है। अबे गोरड़ी री सुन्दरता ने हीज के प्रेम री ओळया नै हीज मांडण री चेष्टावां समाप्त हुयगी है। रचनाकार री आ नूवी पिछाण जाणे करवटीजती जिनगाणी री आपरी पिछाण है। इण वास्ते आज री रचना प्रेरणा रो बदलाव रचनावां माथे भी साफ साफ आंकीजियोड़ो दीसे है। पुरस्कृत पोथ्यां रो रचनाकार भी इण हीज मानसिकता सूं रचना प्रेरणा लेय रह्यो है इण पर अदेशो करणो फिजूल है। समीक्षक री आस्था सू इण पोथ्यां री जाच जाणे उण मानसिकता री परखण चेष्टा हुय जावे है।

अमूजती चेतना रो कवि : मोहम्मद सदीक—मोहम्मद सदीक अमूजती चेतना ने थवड़े लावण आळो रचनाकार है। इण कवि सामाजिकता रा अंतर्विरोधा सूं अर आम आदमी रे दर्द सू'मायं ही मांय खदबदाय रह्यो है। एक लम्बी उडीक रे पछे री तल्खीजियोड़ी बेचैनी इण री रचना प्रेरणा है तो जिनगाणी रो मूंडे बोलतो दर्दीलो रूप इण री कवितावां री खाद है। पण इण दर्द ने कविता री एक ही लीक माथे न्हाक'र आंख मूद'र देखतो जावणो मोहम्मद सदीक कोनी सीखियो है। ओ उण सूं दोवड़े स्तरां माथे जूझतो दीसे है। एकणकनी ओ बनियान री बारादरी रे मायने भाक'र मिनखा ने चेतण रो हेलो मारतो दीसे है तो दूजी कनी व्यवस्था री गैर जिम्मेदार ओछी हरकता ने देख'र व्यंग्य रे हथोड़े सूं उणा माथे चोट करतो निजर आवे है। आ बात जुदा है कि सदीक रा व्यंग्य तो आपरा अनूठापणां सूं आम लोगां री जबान माथे सीधा चढ आवे पण उण री चेतावणियां कोरी मोरी कविता री ओळी बण'र नैतिकता री फालतू कीला माथे अटकीज'र रेय जावे है।

नागा मिनखा रे देस री दर्द इणां री जादातर कवितावां रो विषय है। इण लोगां री जिनगाणी ऊंचा टीलां सूं टिल्ली खायोड़ी दड़ी ज्यू गुलाचियां खावती वेवती रेवे। इण वास्ते इण जिनगाणी री तिस तिलावा ने जनम देवे तो भूख भूतलिया उगलती रेवे। पण थम्भेड़ा रे राज मे उण रो की भी अरथ कोनी है।

कवि पण निराशा ने स्वीकारण री जागां जादातर मिनख ने भोलावण देवण में जूझतो दीसे है। उण री आ भावना कदे ही आशावादिता ने नकार ने तीजा सूलां ने स्वीकारती दीसे है तो कदे ही आ भावना भम्पीड़ वण र मांयला अमूर्ज ने उकेरण में लागती दीसे है। पण सदीक री ऐड़ी रचनावां में सुधारवाद रो कोरो मोरो परिभाषावां आळो रूप ही उकरीजियो है। इण मांय ऊंडी अनुभूत्यां री जागा भावुकता रो दूध रो ऊफाण जादा निजर आवे है। इण कारण इणां री मोकळी कवितावां फिसफिस हुयनै रै जावे है।

व्यग्य मोहम्मद सदीक री कविता रो धारदार हथियार है। इण री तीखी नोक मूं ओ व्यवस्था रा मगला तामझाम ने ध्वस्त करण में सफल रेयो है। सांची बोलां रा हाथ लगाय र ओ खोगला आचरण ने नागो करण में देर कोनी लगावे। खेत ने खावती बाड़, सप्पम पाटां री जुगाळियां, आदमी रे झरुटिया भरण आळा आदमी जेहा ऊंडा भावां ने व्यग्य बणाय'र बोधामय रूप देवण में ओ कवि सफल है। व्यग्य रे वास्ते भाषा रो चलतो रूप, सीधा सादा मुहावरां रो उपयोग व्यंग्यार्थ ने पकड़ण माळ शब्दां रो नचीलोपण इणांरी कविताबां ने जीवन्त बणाय देवे। पण व्यंग्य भावना हीज मोहम्मद सदीक री कवितावां री सीमा भी है। मुहावरां री गुलामी अर कवि सम्मेलनी कविता चतुराई इणां री गम्भीरता ने तोड़ देवे जिण मूं इण री कवितावां व्यंग्य ने विचार जोगो बणावण री जागा उण ने हास्य जोगो भर बणाय देवे। 'जूझती-जूण' री कवितावां मांय मूं जादातर कमजोर है। इण री कमजोरी कवि री सीमा ने चवड़े लावती दीसे है।

बीत्योड़ी नैतिकता रो रचनाकार : मूलचन्द प्राणेश—आपरी पोथी री भूमिका मांय नूवी कहाणी री बात ने घणे मान मूं उठायां रे बावजूद मूलचन्द प्राणेश एक रचनाकार रे रूप में निराश ही करे। कहाणी रो आज रो रूप जिण बोध ने समेटण में सचेष्ट है प्राणेशजी री लेखणी उण रे नेड़ेछेड़े भी कोनी है। इणा री लेखणी रो विषय गांव है। पर उण री जिनगाणी रा आंस्यां दीसता आखर भर ऐ बाच्या है। अर्थ अर राजनीति रो दबाव गांव री जीवण दसावां ने जिण रूप मे बदल दियो है उणा री इणा री कहाण्या में दरसण कोनी हुवे। कथा माथे आदर्शो री स्थूलता मोकळो हावी है। कथ्य ने साहित्य रो रूपदिरावण री जागा, नैतिकता मूं बांधण भर री चेष्टावां इणां री रचनावां माय दीसे है। कहाण्यां रो [illegible] मूं है ज्यूं रा ज्यूं लेय'र थिरपीजियोड़ा है। उण री मनोभावनावां, [illegible] निमावण में उभारता दीवड़ो पण, मांयली छटपटाहाट अर [illegible] चेतना इणां रा नायक में कोनी है। जिन्दगाणी रा ऊपरला [illegible] जीसा प्रसंग अर बीत्योड़ी नैतिकता ने घीस र पाछी लावण री [illegible]

1983 री पुरस्कृत [illegible]

कहाण्या ने साधारण रचनावां बणाय देवे। कहाण्या रो शिल्प भी पांगळो है। रचना कौशल या तो है ही कोनी या पछे बिखरियोड़ो है।

'चस्मदीठ गवाह मांय सू आतमबोध जिसी रचना हल्को सो प्रभाव भले ही छोडती दीसे वाकी पोथी की खास प्रभाव कोनी छोड़े है इण कारण इण ने केन्द्रीय साहित्य अकादमी रो पुरस्कार मिलण री बात एक अजूबो जरूर लागे है।

आम मिनख री पीड़ावां रो रचनाकार : सांवर दइया—सावर दइया रो रचना संसार निम्न मध्य वर्ग री जीवण दसावां है इणां मांय जीवण रा मोटा मोटा सवालां रा दरसण कोनी हुवे। पण छोटा छोटा सवालां ने ओ लेखक मोकळे सौंदर्य सूं आंकण री सफलता पाई है। इणां री कहाणियां रो नायक जीवण मे कोई महताऊ महत्वाकाक्षावां कोनी पाले उण रे वास्ते तो न्हानी न्हानी मुश्किलां सूं पार पावणो हीज मोकळो महत्व राखे। ओ नायक आर्थिक मार सूं बुरी तरऊं ग्रस्त हुय'र एक आतंक सूं भरियोड़ी जिनगाणी जी रह्यो है। ऊपर सूं सामाजिकता री बेड्यां उणने चोखी तरऊं जकड़ ने उण री जिनगाणी मे मोकळी जड़ता भर देवे। घोरां में फंसियोड़ी मोटर रा चक्का रे ज्यू हीज इण मिनख री जिनगाणी आपरी पूरी ताकत लगाय'र भी इञ्च भर भी आगे कोनी सरक सके अर सारी जिन्दगी एक सी हीज वातां माय रगडका खावतो रेवे। अर्थ री मार हरमेस दोवड़ी लड़ाई इण रे वास्ते माडती रेवे। एकण कानी उण ने घोर महंगाई रा इण जमाना माय पग पसारणो भूल'र पग सिकोड़ण री सागीड़ी कोशिशां करणी पड़े तो दूयजी कनी खाली जेबा सामाजिकता री पांगळी रीत्यां ने निभावण मे आपरी सगळी ताकत खरच करणी पड़े। रीता रा रायता पूरा करण मांय उण रो आपरो दोवड़ो पण तो सामी आवें ही है सड़ाद मारतो समाज रो खोखलोपण भी आपी आप सामी आवतो रेवे। नायक रो दर्द दस्तावेज व्यक्ति चेतना रो हीज प्रतिनिधित्व कोनी करे सगळे समाज री बुराइयां ने पाठका सारू परोसण में भी चोखीतरा सूं सफल दीसे है।

सांवर दइया री रचना निम्न मध्यवर्ग रो पूरो जीवतो जागतो समाजशास्त्र है। इण वर्ग रे आचरण—चिन्तन री जाणे एक एक ओळी ने लेखक जच'र बांची है अर पाठका ने दरसाई है। आ अणपचण जोग जहरीली सामाजिकता आप री लपलपावती जीभा सू सगळा लोगां ने भकोस रही है अर परम्परावा री चकाचौध सूं भरमीजियोड़ा लोग बदळियोड़ी आर्थिक-सामाजिक हालता माय भी मूडा अर हास्यास्पद तरीका सू मांडण री उतावळ में जूझ रेह्या है।

इण सामाजिकता मायने मरियोड़ी छोरी रो की गम कोनी हुवे (उल्टे आफत टळण री खुशी हूयती दीसे) तो बेटी रा चौथा छोरा रे जन्म री खुशी कोरी मोटी थाली बजावण मांयने हीज खतम को हूय जावे बस्के मां आप रे गळे री साकळ अडाणी

रख'र जीमण करण मे खुशी महसूसे। लोगां रामजी रो नांव ले ले'र टावरा री फौज खड़ी कर देवे, तो चालीसां पार री उमरआळा तीन-तीन टावरां रो बाप भी कुंआरी छोरी सूं ब्याव करण री कोड राखे। इण सामाजिकता मे और भी कीचड रगदेळण आळा वे अधकचरी मानसिकता आळा लोग भी है जिका के दोस्त री बीबी सूं मानसिक व्यभिचार करे, तो वै लोग भी है जिका के जवान मेहतराणियां ने रोगीली बणावता देर को लगावे नी।

अर्थ री मार रा सांचा चितराम दइया रे रचना संसार रो जीवतो पख है। अठे री जिनगाणी मांय सामे ऊभे सियाळे कोट सिलवावण खातर खासो दिमागी व्यायाम करणो पड़े अर मेडीकल रा बिल सू जवान बीबी रे वास्ते साडी री सौगात रो जुगाड़ करणो पड़े। जिन्दगी माय समानान्तर भागती दुनियां सूं आंख मीच'र कोरो जमा खर्च अर तनखां री चिन्ता ने हीज जीवणो पड़े। दइया री रचनावां निम्न वर्ग रे ऐडा आम आदमी री दर्दीली सपनीली दुनियां रा सांगोड़ा चितराम खेंचिया है। इणां री कहाणियां री नारियां अशिक्षा, अज्ञान रे अंधारा मांय खोयोड़ी विचारगी सूं भरियोड़ी जिनगाणियां जीवती दीसे है।

'धरती कद ताईं घूमेली' री कहाणियां मांय सू 'जीवती ल्हासां' 'गली जिसी गली' 'धरती कद ताईं घूमेली' जेड़ी रचनावां साहित्य मांयने आप री निजू पिछांण कायम करण री सामर्थ्य राखे तो सुगम, हालताई, हुवणों नईं हुवणो, थोथी नैतिकता अर स्थूल कथ्य रे कारण कोई खास असर कोनी छोड़ सके। सावर दइया री कहाणियां रो क्षेत्र भी सीमित है उणा मे नूंवापणा री ताजगी री जागां दोहरावण री आदत मोकळी है। कठे ही कठे ही लेखणी रो प्रचारवादी रूप भी निराश करण लाग जावे पण फेर भी ओ रचनाकार बजर धरती में आशा री कूंपळां ने फोड़तो साफ दीसे है।

जड़ीजियोड़ी भाषा रो चितेरो रचनाकार : जहूर खां मेहर—जहूर खां री पोथी वाङ्मय तो मानीजी जाय सके है पण साहित्य री पोथी रे रूप मे इण ने स्वीकारण मे सन्देह पैदा हुय सके। इण री रचना प्रेरणा साफ साफ इतिहास ने सांस्कृतिक आधारां सूं लिरीजियोड़ी है। लेखक री मंशा भी संस्कृति रा चितराम आंकण री है साहित्य सिरजण करणो कोनी है। साहित्यिक शैली में लिख्योड़ा इतिहास आखिर इतिहास हीज रैवे साहित्य कोनी हुय सके पण इण पोथी ने साहित्य रा पुरस्कार भी दिया गया है आ बात म्हारे वास्ते एक अजूबा जेड़ी है।

'राजस्थानी संस्कृति रा चितराम' में भाषा रो मठारियोड़ो सोवणो रूप इण पोथी ने अनूठोपण दिरावतो निजर आवे। निबन्धा रे माय लेखक री पैनी निजरां रा मोकळा प्रमाण मिल जावे। 'ऊंट', 'जूनी रम्मता', 'कला साहित', जेड़ा निबन्ध

लेखक री शोध भावना ने उजागर करे। पण दूजा निबन्धा माय विवेचन अर निरूपण में पूर्व धारणावां साफ दीसे है। आलोचना में तर्क री थिरपणा करने विचार मांडीजिया करे। विचारां ने मांडण खातर तर्क कोनी ढूंढिया करे। पण 'धिन प्रिथीराज रंग प्रिथीराज' या 'नेणसी' जेड़ा निबन्ध मांय लेखक आपरी पूर्व धारणावां ने शोध रो चोगो पहिरावण री चेष्टा कीनी है।

जहूर खा रा चितराम संस्कृति ने आंकण मांय पूरा सफल रह्या है। संस्कृति में मिठास घोळणियो उणरो आचार पक्ष लेखक बारीकी सूं पकड़ियो है अर उणा ने सब'र मांडण में कन्जूसी कोनी की है। जहूर खां कने भाषा रो रूपाळो खजानो है अर उणरो असरदार इस्तेमाल करण री भी इणां कने पूरी ताकत भी है। आम लोगां री भाषा इती कसीजियोड़ी, मारक अर अपणायत सूं भरीजियोडी हुय सके इण बात ने अे आपरी पोथी सूं प्रत्यक्ष कर सकिया है। ओ गुण हीज इण पोथी ने थोड़ो सीक साहित्यिकता दिराय देवे नही तो रचना में इतिहास हावी है।

सामाजिक जड़ता रो चितेरो . सत्येन जोशी—सत्येन जोशी सामाजिकता री जड़ता री बुराइयां ने मिनख रे आचरण माय सू पकड़'र सामी लावण मे सफल रेह्या है। समाज री अगति लोगां रा चरित्रां मांय असामान्यता भर देवे। अज्ञान रा आंधा कूआ मांय डूबियोड़ा ऐड़ा लोग तेजी सूं बेवती दुनियां रे बिचाळे भी कोरी मोरी कूपमण्डूकता ने जीवता रेवे। परम्परा ने मुरदा ज्यूं ढोवे तो मूरखपणा री सीमा तई घमण्ड में भरमीजता रेवे। ऐड़ा लोग खुद ने समझ रा झाड मान'र खोखळो व्योहार करता रेवें। सत्येन जोशी शहरां रा मध्यवर्ग मे नीपजणआळा ठेठ परम्परावां ने जीवण आळा लोगां रा रेखाचित्र इण पोथी में आंकिया है। इणां में फूहड़ता छलकती रेवे अर ठीठता ऐणो आचरण रो अंग बण जावे। भाषा रो ओछोपण इणां री मानसिकता री पिछाण करावे तो नागो हरकतां इणां रा व्यक्ति ने परिभाषित करती दीसती रेवे।

'रोवणिया दासा' मरियोड़ा मूल्यां रो जनाजो है। लेखक री व्यग्य री ताकत हास्य रा पुट सूं पाठकां माथे मोकळो असर डालण री सिमरथ राखे। पण लगभग एक जेड़ा आचरण करण आळी मानसिकता रा हीज जुदा जुदा चितराम हुवण रे कारण पोथी अच्छी खासी ऊब भी पैदा करे। लेखक रेखाचित्र आकण मांय एकसी भाषा अपणाई है जिको भी एक दोष है। चितरामां माय जथार्थ व्यक्ति रूपा ने साहित्यिक चरित्र वणावण माय भी पूरी सावधानी कोनी बरतीजी है जिण सूं ऐ गहराई सूं पाठकां ने प्रभावित कोनी कर सके। हल्का मूड री पोथी सूं ज्यादा रचना रो महत्व कोनी है। साहित्य रो ऐड़ो सम्मानित पुरस्कार पावण जीसी बात रचना मे निजर कोनी आवे।

एक टीप—ऐ पोथ्यां सूं आज रा राजस्थानी साहित्य री दशा रो अन्दाजो लगायो जाय सके। आज रा रचनाकार पुरानी जकड़ण सूं छूटण री चेष्टा में तो है। पण उणा ने नूंवो रस्तो हाल तई कोनी मिलियो है। बल्के ऐ लेखक हकबकीज ने चारऊं फेर हाथ मारता दीसे है। बोध रो नूंवो रूप लगभग गैर हाजिर है अर व्यंग्य रा हथियार सूं इण कमी ने पूरण री चेष्टा करण में ऐ लोग भी कमी कोनी राखे है। भाषा रे वास्ते जरूर लेखकां री सजगता सामी आई है पण कथ्य रे अभाव में उण रो की लाभ ऐ कोय ले सकिया है। ऐड़ी पोथ्यां ने पुरस्कार देवण री मजबूरी भी साफ साफ देखी जाय सके।



(जागतीजोत में प्रकाशित)

इण कारण मजबूर व्है ने टाबर या तो विद्रोही व्है जावे ने उग्रता सूं बडां लोगां री बातां ने नकारण लागजा। जिकारो विकसित रूप हीज आज री युवा पीढी रो असन्तोष, कुण्ठित आचरण ने विद्रोही रुख है। आज री युवा पीढी जेनेरेशन गेप (पीढियां में दूरी) री जिकी बात किया करे उण रो आधार भी ओ विद्रोह हीज हुया करे। परिवार में करड़ो नियन्त्रण रो दूजो रूप टाबर रे मन में निराशा री भावना ने जन्म दे देवे। वो बात बात में खुद ने नियन्त्रित करण लागजा। इण कारण वो आपरी इच्छावां ने दबावण वालो हू जावे ने खुद रो सर्वांगीण विकास कोनी कर सके। मनोविज्ञान में ईं ने दमन री संज्ञा दी जावे जिण रे कारण बड़ो हुवे ने टाबर कायर, डरपोक ने बिना बात घबरावण वाळी आदतां वाळो व्है जावे। अे दोनऊं स्थितियां चोखी कोनी है। अैणी बनिस्पत टाबर रे विकास रे वास्ते आ बात जरूरी है के उण माथे खुद ने आरोपित करण देवण री जागा उणरे आगे बढ़ण रे वास्ते मा-बाप ने सहायक बणनो चाईजे।

परिवार में बच्चा रो विकास उणी अवस्था मे सहायक सिद्ध हो सके जणां उण री मानसिक अवस्था व उण रे उमर रे अनुपात सूं मां-बाप उण री बाल जिज्ञासावां ने विवेकपूर्ण ढंग सूं सन्तुष्ट करता जावे। टाबर री स्थिति ऐड़ी हुया करे के वो धीमे धीमे मां-बाप री निर्भरता ने छोड़ ने आत्म निर्भर बणन री चेष्टा किया करे। आ बात सब लोग चोखी तरेऊं जाणे है के अन्य जीव जन्तुआ री बनिस्पत मनुष्यां रा टाबर घणी लम्बी उम्र तक मां-बाप माथे निर्भर रेह्या करे। क्यूं के दूजोड़ा जीवां में कोरो शारीरिक विकास होवण तक हीज निर्भरता रेह्या करे पर मिनखां रा टाबर शारीरिक विकास रे साथ मानसिक विकास भी प्राप्त किया करे। जठे तक टाबर शारीरिक विकास रे साथ ही साथ बोध री दृष्टि सूं भी समुन्नत कोनी हूजावे तठे तक उण रो सच्चो विकास कोनी हुया करे। अठै ई बात ने देखण री जरूरत है के परिवार किण उपाय सूं बालक उभयपक्षी विकास मे सहायक सिद्ध हुया करे।

टाबर रो शारीरिक विकास—उम्र रे बढ़ण रे साथे साथे टाबर रो शरीर भी अपणे आप बढ़तो जावे। पण शरीर रे सन्तुलित विकास रे वास्ते ई बात रो ध्यान राखणो जरूरी है के उणरे भोजन में शरीर रे विकास री सारी बातां सम्मिलित हू जावे। इण दृष्टि सूं सन्तुलित भोजन रे मांय ने प्रोटीन, वसा, खनिज लवण, विटामिन कार्बोहाईड्रेट, ने जल री समानुपातिक मात्रा होवणो जरूरी है। ऐणें मांयने सूं एक री भी कमी की न कीं शारीरिक विकास मे दोष पैदा कर देवे।

भोजन रे पछै सरीर रे विकास में दूजो जरूरी बात व्यायाम है। खेलण-कूदण सूं हड्डियां, पेशियां समुन्नत हुया करे रुधिर रो सचार चोखी तराऊ हुया करे ने बळ

सीधे साक्षात्कार कर रेह्यो है ऊने ऐड़ी भूठी बातां मूं भरमावणो ऊंने जाण बूझ ने अज्ञान कनी धकलणो है। इण वास्ते परिवार री टाबर रे विकास री दृष्टि मूं महत्वपूर्ण भूमिका इण रूप में है के ऊने शरीर विज्ञान मूं सम्बन्धित जानकारी उण री अवस्था रे अनुरूप धीरे धीरे समझावणी चाईजे।

धर्म अर नैतिकता—बालक रे वास्ते नैतिकता ने उण रा नियामक पहलुवां री बारीक जानकारी जरूरी है। धर्म आज कोरो अन्धविश्वास सूं हीज कोनी अपणावीजे पण अगर टाबर ने वेड़ो वातावरण मिलै तो धरम ने वो बारिकी सूं पिछांण जरूर सके। ज्यादातर परिवारां में धर्म सूं सम्बन्धित दो बड़ा आदर्श टाबर रे सामने पेश किया जावे। लोग धर्म ने एक परम्परा रे रूप में या मूरत पूजा, व्रत उपवास आदि रा बाह्याचारां रे रूप में हीज देखे ने वेड़ो आचरण हीज किया करे। ऐ बातां दर असल धर्म रा साधन है खुद धर्म कोनी है। धर्म खुद रे वास्तविक रूप में कर्त्तव्य रा पर्याय बणने सामने आवे उणरे कनी ध्यान देवण री लोग जरूरत कोनी समझे। धार्मिक आचरण ने ज्यादातर परिवार बाळा व्यक्ति रे दैनिक आचरण मूं जोड़े कोनी। इण कारण टाबर भी धर्म रे नाम माथे कोरा दिखावा ने हीज धर्म मान लेवे ने वेड़ो व्यवहार करण लाग जावे। परिवार री इण दृष्टि मूं महत्वपूर्ण भूमिका आ हो सके है के वो टाबर ने धर्म रे नाम माथे कोरा दिखावा ने अपणावणो सीखण री बनिस्पत उण रे सच्चे स्वरूप ने पिछाण लेवे।

नैतिकता री बात भी धर्म री हीज भांत कोरी पाप-पुण्य स्वर्ग-नरक री व्याख्या हीज होय ने रैमगी है। कर्म सूं नैतिकता ने जोड्यो कोनी गयो है ने उण ने लोकोत्तर फल सूं जोड्यो गयो है इण रो परिणाम ओ निकळियो है के लोग भ्रष्टाचार ने अनैतिक आचरण सूं डरण री बनिस्पत उण रा फल सूं हीज डरिया करे ने व्रत, उपवास धर्म भावना रो ढोंग कर ने उण कामां रा दुर्बल पक्ष सूं खुद ने विरत कर लेवणो चावै। घर में टाबर रे सामने उण रा मा-बाप भ्रष्ट आचरण करता थकां भी नितनेम रो पालण करण मूं लौकिक कर्मां री अनैतिकता ने ढकवा रो प्रयास किया करै। टाबर रे कोमळ मन माथे अेड़ो दोहरो आचरण ऊने नैतिकता मूं बंधण री जागां उण सूं परहेज करणो सिखा सकै।

जीवन मूल्य—व्यक्ति रो आचरण हीज उण रै व्यक्तित्व ने परिभाषित किया करै। व्यक्ति रे आचरण मे पण उण रा आदर्श ने उण री आस्थावां री बड़ी भूमिका हुया करै। ऐ आदर्श जीवन मूल्यां रै रूप में सामने आवै जिकां ने अपणाय कोई भी व्यक्ति खुद ऊपर उठ सके। आज रै युग में यथार्थवादिता री ... जदपि आदर्शां ने घणो सम्मान कोनी देवै तो भी देखी उपयोगिता ... सके। जठै भी अेड़ा आदर्शां रो पालन कियो जावै उण ने सम्मान ...

जावे। ऐ आदर्श जीवन मूल्यां रे रूप में सामी आवे। व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय ने मानवता सू सवधित ऐ जीवन मूल्यां रो पेलड़ो पाठ टाबर खुद रे घर मांयने हीज सीखया करे। परिवार हीज टावर री अभिरुचियां ने परिष्कृत कर नें हिंसा, बर्बरता, स्वार्थीपणा ने छोडणो ने सहिष्णुता, उदारता, त्याग, सेवा ने समभाव आदि नें सीख लेवे। घर वाळा ने इण बाते रो ध्यान राखणो चाईजे के टाबर कोरो व्यक्ति केन्द्रित आचरण हीज करनो कोनी सीख ले बल्के व्यक्ति सूं आगे वढ ने सामुहिकता नें मानवीयता सू भी खुद नें जोड़नो सीखले। अगर परिवार रा सदस्य खुद ओछापण, कटुता, ईर्ष्या, अहंकारी, धूर्त, चालाक ने अनीति नें प्रश्रय देवण वाळा हुवें तो उण परिवार रा टाबरां सूं नैतिक मूल्यां रे प्रति रुझान करण वाळा रे रूप मे वणन री घणी आशा कोनी की जाय सके।

इण भांत ओ कह्यो जाय सके है के टाबर रे सांचा विकास रे मांयने परिवार री घणी महत्वपूर्ण भूमिका हुया करे। पण ज्यादातर परिवार में मां-बाप सू टाबर रे साथे न्याय कोनी हुवें। वे लोग कोई भी बात ने उण री अवस्था, उण रे बोध रो स्तर ने उण री रुचियां सूं जोड़ ने देखण री जागां खुद री अवस्था या स्थिति सू जोड ने देखण री चेष्टा जादा किया करें। वे लोग खुद नें टाबर रे माथे इत्तो हावी देखणी चावे के वीने हर हालत में पूर्ण अनुशासित, पूर्ण आज्ञाकारी ने पूर्ण शिष्ट देखणी चावे। जद के ज्यादातर मा-बाप खुद घोर दर्जे रा आळसी, अहंकारी, स्वार्थी अनुशासनहीन ने परावलम्बी हुया करे। घरां में लोग बाग शिष्टता री जागां खुद री ‑ात ने घणो तवज्जो दिया करे। टाबर जदै मां-बाप ने ऐड़ी आदतां वाळा देखे तो वे भी वेड़ी हीज बातां सीख लेवे। घर मे पापा रो आळसी पणों देख ने वो कीकर कर्मठ वण सके? या मम्मी ने बात बात मे तुनकती देखे तो वे कीकर धैर्यवान, वण सकें? छळ कपट, चतुराई, दोहरा आदर्श, प्रदर्शनप्रियता, ढोंग, भ्रष्टाचार, अनैतिकता आदि सैंग बातां टाबर परिवार सूं हीज सिखिया करे। पण आचरण सूं खुद वैंडा होवतां थकां भी मा-बाप टाबर सूं आ अपेक्षा करे के वो अैं बातां नी सीखे। दूजी कनी यौन जिज्ञासा, नीति, धर्म, स्वतन्त्रता आदि जिकी बातां टाबर खुद नी सीखणी चावे वेणे माथे घर मे रोक लगा दी जावे। इण सूं उण रो सांगोपांग विकास कोनी हूय सके। इण वास्ते परिवार वाळा ने अगर टाबर रो सांचो विकास करणो है तो न तो उण री जिज्ञासायां ने रोकणी चाईजे ने न खुद ने ऐड़ो आचरण भी करणो चाईजे जिण सूं प्रेरणा लेयने वो भी पथभ्रष्ट हो सके।

☐

(जागतीजोत मे प्रकाशित)